

बूँद बूँद मौत

दिनेश खरे



दिनिशा प्रकाशन

प्रथम संस्करण नवम्बर, 1984

दिनेश खरे

प्रकाशक

दिनिशा प्रकाशन

1594 नेपियर टाउन

जबलपुर (म० प्र०) 482-001

आगुण

मध्या वासुदेव न दिनेश खरे

मूल्य

सजिल्द 18 रुपये / अजिल्द 10 रुपये

मुद्रण

केमरवानी प्रेस, प्रयाग

क्रमांक 00184

BOOND BOOND MAUT—Short Stories
by Dinesh Khare

मेरे जीवन से

सम्बन्ध

तीन महत्वपूर्ण मित्रों

निशा,

सत्य नारायण यादव

और

माइकेल फ्रांसिस को

स्नेह समर्पित

७ / अपनी ओर से

मुझ कहानी से ज्यादा नशक्त काइ अथ मायम प्रतीत नहीं होता जा व्यक्ति की अत वेदना, उसके द्वन्द्व उसके मनाम, उसकी निराशा और विश्वास व उसके मनोविज्ञान को बेनाब और बेनोस अभिव्यक्त कर सके। अपने क्षणिक जीवन में इंसान का यायावरी मन कितन-कितन स्तरों और सतहों से गुजरता है यह कल्पना के परे प्रतीत होता है। लेकिन कहानी ऐसे यायावरी मन को एक कस्याई ठौर या ठिकाना स्ती है—इसमें दो मत नहीं हैं। इंसान के जन्म के साथ ही कहानी का जन्म हुआ है और शायद इसलिये ही कहानी मानव-भिव्यक्ति को सबसे सरल, मुलम लेकिन प्रभावशाली माध्यम रही है।

इंसान की बदलती लाताता, समाज के आर्थिक बदलते रंगों न कहानी व तेवर बदले हैं। उसकी विषय-वस्तु से लेकर उसमें शिल्प में भी अद्भुत परिवर्तन आय है। विज्ञान व अवतरण से भावनाओं का मशीनीकरण हुआ है और मशीनीकरण से समूह प्रतिमता न जो स्वाध्यापन हमारे जीवन में प्रविष्ट कराया है, वह अब हम सनन लगा है। मानवीय सम्बन्धों का व बीच जो एक अदृश्य सतु सदियों से विद्यमान था, उसे नेस्तनाबूद करने में विज्ञान भगणी है। विज्ञान से जो कुछ हमने पाया है, जिन क्षणभंगुरता का आभास हमें हुआ है, उनसे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हमने खो दिया है या फिर सन्धता के प्रमिष विज्ञान की गतिशीलता म रीते जा रह है। इसे शायद ही कि कभी हम गा सकें। अतुभूति और अध्यात्म की तुलना में विज्ञान का स्वभाव व्युत्पत्ती निष्ठ हुआ है। अध्यात्म से प्राप्त अतुभूतियां न आदमी को शांति प्रदान की हैं उसे उर्ध्वोन्मी बनाया है उसमें सम न पदा की है व मानवतर भावनाओं का समझन की क्षुत्री समार है। नेदिन पैसाजिक उपलब्धियां ने उठी आदमी को सारी अहंवासे, स्वकथित और अधोभुगी बना दिया है। शायद इसी कारण से वर्तमान कहानियों की

जमस्वली यथाय की मानी ह। कहानिया का जो काम आज चल रहा है, वह इसान के वाल व अत पग्वग व योच पन उठाकर सडे ह्य दृद उरव को प्रतिविम्बित करता है।

प्रस्तुत कहानिया की जमीन कुछ गमी ही बही जा चरती है। मैं पश स इजीनियर हें कहानीकार नहीं। लेकिन मर इस पश को ही यह श्रेय जाता है कि उसने मुझमें एसी अंत दृष्टि पदा की कि मुझे यथाय और अदृश्य मय क बीच बन रह दृद का समझन का अवसर मिला ह। मुझे महसूस होता है कि विज्ञान पलने वाला छान बही न कभी एसी स्थिति स अवश्य गुजरता है। या फिर बही गुजरगा। प्रस्तुत उम य कहानिया अपन चतुआरे याम परिवर का नमझने स सहायक हागी। आम आदमी सा इन कहानियों में अपना प्रतिविम्ब अवश्य ही पाएगा क्योंकि य कहानिया हर क्षण उमरे नितन व वृद्ध का स्पश कर रही हैं।

हो सकता है कि इन संग्रह में प्रस्तुत कहानिया का आपन बही न कहीं पढा भी हो लेकिन विभिन्न जाहा पर मिथरी इन कहानिया का एक भूत में पिरोकर समग्र रूप में आपन मागन गनन स मुझे अवनीय हय हा रहा ह। अपने इत पृष्ठ में कहानिया व वारे स भूमिका बांधना कहानी के नग्न व गाय अयाय होगा। मैं नहीं चाहता कि भूमिका स प्रस्तुत विवचना नि ती प्रनार का पूर्वाग्रह पैदा करे और वह पूर्वाग्रह आपकी कहानी को नमझन स एक खास नजरिये ग निर्देशित करे। अत सारी कहानिया आपन बनाव पास्ट माटम के लिये प्रस्तुत है।—हाँ एक बात अवश्य स्पष्ट करना चाहेंगा कि इस संग्रह स मेरी कही भी प्रकाशित हान वाली पहली कहानी भी है जिस आप आगनी स पकड लेगे।

और अत में दा शर उनम वारे स जिह यह संग्रह नर्मापत ह। ताना यक्ति मेरे जीवन से कुछ इस कदर जुड़े हैं कि जब तक इस शरीर स जीवतता का स्पदन रहेगा व अविस्मृत रहेंगे। मेरे लेखनीय व्यक्तित्व का संरचना में उनका जो अपरोग हाय रहा है, उस व महसूस करें या न करे स हर क्षण महसूस करता है और करता रहेंगा।

मई 1984

—दिनेश खरे

18 विषय-सूची

क्रम	अनुक्रम
1 दगा	1
2 स्लम हाउस	13
3 बूद-बूद मोत	22
4 कटा हुआ आदमी	30
5 उद्घाटन	41
6 मोहभंग	50
7 जतिगा	65
8 उमी म जात	76
9 डमर वाद नहीं	82
10 और राममधव मर गया	89
11 विश्व दुःख का सलीब	101

सेट्रल जेल की कोठरी में बैठे-बैठे बल्लू ने गड्ढ-भड्ड वाला को अपने सुरदुर हाथों से मवार। उसे लगा कि बाल सँवर गये हैं और विशोरावस्था में सभूत इस धारणा से कि सजा-धजा पुरुष इस उम्र में किसी अतग से कम नहीं होता है, उसने अपन गठीले कसरती शरीर का मुआइना किया। उमे अपने शरीर पर एक बार और नाज हो आया। जेल की कोठरी उसके उमुक्त चित्तन पर कोई प्रभाव नहीं डाल पा रही थी। जब वह पहले-महल जेल की चहारदीवारी में लाया गया था तब जरूर उस थोड़ा रंज हुआ था। रंज भी इस बात का था कि लोग उसे सजायापता के नाम से पुकारेंगे। लेकिन बाहर आने के बाद उसने पाया था कि दुनिया उसी गति से चल रही है। वही कुछ भी अंतर नहीं आया है। उसने सोचा था कि उसके जेल के बाहर निकलते ही हज़ारा आँखें उसको घूरना प्रारम्भ कर देगी और वह उन आँखों से निकलन जाने घृणाभाव को सह नहीं पायेगा। लेकिन एसा कुछ नहीं हुआ। उस बडा ही आश्चय हुआ था इस बात पर। गाव में होता तो लोग उसे वह-वहकर उसका जीना मुश्किल कर देते। उसने कोने में मासूस से पडे रशीद की ओर देखा और कहा—

“क्यों के रशीद ! क्या ऐमे ही पडा रहेगा ? पता नहीं कल हमारी छुट्टी दान वाली है।”

“यही तो समस्या है।”

“कैसी समस्या ? यार तू सोचता बहुत है। कितनी बार कहा कि दुनिया म रहना है तो सोचो कम, करो ज्यादा। लेकिन तू समझता ही नहीं।”

इतने में ही सतरी के बूट की आवाज खट्खट करती उनके कानों में पहुँची। व अविचलित रहे। सतरी उनकी कोठरी के सीलचों के पास पहुँच गया। उसने भबिकर अदर देखा—बल्लू और रशीद जग रहे थे। उसने एक बार सोचा कि सीपा घसा जाये लेकिन पहरा देत-देते वह धकान-सी अनुभव कर रहा था। समय गुजारने वाले मूड में उसने कहा, “क्या जमूरे बल्लू, नीद नहीं आ रही है

क्या ? छूटन की मतवाली है क्या ?" मंतरी अपन कदिया को जमूरा ही कहता था ।

'नही दरोगा जी अभी बात नहीं है । कल्लू न कहा । वह सार पुनिस वाला वो दरोगा जी ही कहता था ।

"दरोगा जी एक बिनती है । पाते-जान महरबानी कर दे ता सारी जिन्दगी आपका नाम भजेंगे ।" कल्लू न कहा ।

'बो ! क्या बात है ?"

"दरोगा जी गाजा पीन की इच्छा है । कई दिन हो गय दम मारे । यदि आप भगवा ।"

। "क्या बकता है । यह जेल है—चहूषाना नहीं है ।"

। "जेल है इसीनिये तो बाल रहा है । कल बगल बाने फरीर ने बताया था कि गाजा पीना हो तो आपको बतवा दूँ ।"

'हूँ तो फकीरा दोला निनला । अच्छा बोन, पैसा है अटी म ।"

"हा जी है । पाच रुपये का मँगा दीजिये ।"

"निकाल दस रुपये जदी से ।"

कल्लू न अटी स दर का नोट सतरी का थप दिया । सतरी के जाते ही कल्लू रशीद की ओर मुखातिब हुआ और बोना—

"घार ! तू मागूवा की तरह चुपचाप बैठा रहेगा ता फिर कैसे काम चलेगा ।

"कल्लू भाई, बल से ही रोटी की समस्या खडी होगी । कैसे काम चलेगा ।'

'दख भाई, इसम दुम्नी होने की क्या बात है । जैसा अभी तक भगवान ने चलाया है खत्र भी चलायेगा । अरे यह जेल तो अपना घर ही है । जब नहीं चलेगा तो खुराफात करके फिर यही ।"

'नेकिन छोटी-छोटी चोरी करके कब तक गुजारा किया जाये ।"

'कयो क्या इस बार बडा हाथ मारने की खाइग है ?"

शोच तो कुछ ऐसा ही रहा है ।"

“तो चुप रह। कन प्लान बनायेग भूर की होटल पर बैठकर। यहाँ कुछ बोना तो गडबड-दीवारो के भी कान हाने ह पता नहीं।”

इतने में ही सतरी खटखट की आवाज करता आ गया।

*

*

*

भूरे की होटल में जाकर कन्सू और रशीद चुपचाप बैठ गये। भूरे का पता था व क्या साधेग। बिना कहे ही सामान उनके सामने आ गया। भूरा यदा-बदा उनके गिये मुखविरा करता था। उर्फ जेल जान पर कभी कभी वकील और कभी-कभी जमानत का भी इतजाम करता था। खाना खाने के बाद कन्सू न दखा कि रशीद अभी भी मायूसी की यदा में सिर नीचे किये बैठा है। उस उसकी मन स्थिति का पूरा अदाना था। भूरे के पास जाकर उसने कहा

भूरे डियर, अपना रशीद आजकल बड़ा दु खी है। पहली बार उसे जेल की चहार-दीवारी रास नहीं आई है। बहुत समझाया कि सोचना अपन जैसे लोगों का बान नहीं है, लेकिन पता नहीं कौन सा धुन उसे साधे जा रहा है। कहा भी कि सोचने का काम तो नेताओं का है लेकिन मानता ही नहीं है। कहता है कि “ऐसा कहकर करतू ने यहाँ-वहाँ दवा और भूरे के कान में कुछ कहा। भूरा रशीद को ओर देखकर बोला, ‘दादू तू फिर दयो करता है। तेरी इच्छा पूरी होगी लेकिन सिर्फ एक ही बात है कि तुझे हिम्मत खुदानी होगी। बाकी काम मेरा है। तीन चार दिन बाद आओ। फिर सब सजर कर दूँगा। हँ आज का पैसा, तुम्हारे हिस्से में लिखे देता हूँ।”

रशीद सटान से उठा भूरे से हाथ मिलाया और कन्सू के साथ आगे बढ़ गया। उसकी आँखों की चमक बरसात में अचानक निवृत्त जाये मूरज की किरणों के समान हो गई।

*

*

*

तीन दिन बाद जब कन्सू और रशीद ~~न~~ ~~स~~ ~~सम्मिलन~~ किया तो उसने उद माल होने की खबर दी। पारेख भी पायनी वाले ~~के~~ यहाँ सिध सगाने का विचार रशीद न बनाया। सिधमारी में उसकी कोई तुलना नहीं कर सकता था। कन्सू को लग रहा था कि इस बार की चोरी कुछ और ही गुल खिजियोगी।

वह मन ही मन धरारा रहा था। जय-जय वह धराराया है कुछ ऐसा हुआ है जिसे उसके अंतस ने रबीकार नहीं किया है। इस बार भी वह कुछ ऐसा ही महसूस कर रहा था। कल्लू ने कभी भी बड़ी चारिया का विचार अपन मन में नहीं लाया था। उसका ख्याल इस मामले में त्रिपुल ही अलग-अलग था। चोर का लेवल लगते ही उसने महसूस किया था कि शरीफ आदमी की जिदगी जीना और शराफत से रोशी-रोटी कमाना उसने भाग्य में नहीं है। कई बार सोचता था 'बाग में डाकू होता तो आत्मसमर्पण करके नई जिदगी प्रारंभ कर सकता।' लेकिन फिर मन ही मन कहता 'तेम भाग्य सबके यहाँ।'

रशीद से दोस्ती होने पर उसने एक अच्छा मित्र पा लिया था। लेकिन कुछ बार रशीद की चुप्पी और उसकी बड़ी-बड़ी योजनाएँ उसका दिल दहला देती थी। भूरे की मुखबरी ने जहाँ रशीद को चेतय कर दिया था वही एक अनि-मन्त्रित भय उसके चोर-दिल में भी पैदा कर दिया था।

रशीद ने संध खोदकर पारेख जी पायल वाले की दुकान तक पहुँचने का रास्ता बना लिया था। वे दोनों मंगल का इतजार कर रहे थे जब पूरा सराफा बंद रहता था। सोमवार की रात को चोरी करने की योजना बनी थी और फिर बुधवार को उसकी प्रतिक्रिया पता करने की। सोमवार की रात को उन्होंने देर सा जेवर चुराया और जैसे ही बाहर निकलने लगे, गोरखे चौकीदार ने उन्हें देखकर हल्ला मचा दिया। कल्लू के शरीर से पसीना छूटने लगा। लेकिन रशीद बिल्कुल अविचलित सा खतने से निपटने को तैयार होने लगा था। कल्लू ने जब माल छोड़कर भाग जान का सुभाव दिया तो उसने हिचक बहकर उसका हाथ फिडक दिया। लोगों के जागन के पहिले ही रशीद ने पोटली कस कर पकड़ी और कल्लू को खीचकर बाहर लाया। गोरखे को धक्का मारकर गिराया और दोनों भाग खड़े हुए। समस्या थी कि भागकर कहाँ जायें। भूरे के यहाँ जा नहीं सकते थे—कारण कि पुलिस सबसे पहले उन्हें ही उस बड्डे पर शक पर धर पकडती।

रशीद ने क्षण भर को सोचा और फिर बोला, "मुसलिम कबरिस्तान चलते हैं।"

“तेरा दिमाग तो खराब नहीं हा गया है। वहाँ क्या करेंगे जाकर।”

‘पुलिस को शक कभी भी नहीं होगा कि चोर वहाँ भी जा सकते हैं। माल वहाँ छिपाकर भाग जायेंगे। फिर समय रहने निकाल लेंगे।’

“चल, वहाँ भी चल ज़दी। नहीं तो कम मुंह खैर नहीं। पुलिस पकड़ कर पकड़गी।”

दोनों भागकर कबरिस्तान चल गये। जाते ही माल छिपाने की समस्या खड़ी हो गयी। मुद्गर आवाज़ में खिना अधखिना चाँद जमीन की स्थिति का कुछ-कुछ स्पष्ट कर रहा था। रशीद न ज़दी-ज़दी मुआइना किया। उसे एक ताज़ी खुदी कन्न दिखाई दी। कन्नू का हाथ पकड़कर उसने खींचा। ज़दी-जन्दा बाना—“इस ही खादकर इसमें माल छिपा देन हैं। किसी को भी शक नहीं होगा।’ दानो ने ज़दी-ज़दी कन्न का कुछ ही हिस्सा खोदा था कि उह आवाज़ सुनाई दी “कौन है। रशीद का मुह खुलने-खुलन ख गया। उसने महमूस किया कि माल छिपाने का बाद कन्न पुराना उनका वस की बात नहीं है। उसने ज़दी से पाटली संभाली और चुपचाप एक पुरानी कन्न की तरफ खिसक गया। कन्न का पास बने एक छेद में जिन शायद कवर-विज्जू न खाद रखा था, पाटली रखकर उस ज़दी-ज़दी बद किया। कन्नू उसका साथ-साथ पास सरक आया था। ‘कौन है, कौन है’ की आवाज़ अभी भी आ रही थी। दर में टिमटिमाती लालटेन का पास आने दिखने से दानो चुपचाप पास लगी बशरम की भाँधिया में छिप गये। लालटेन कबरिस्तान के पास आकर खुदी हुई कन्न का पास जाकर रुक गई। लालटेन पकड़ जादमी ने कन्न को देखा और तज़ी से उल्टे पैर भाग खड़ा हुआ। कन्नू और रशीद की जान में जान आ गई। वे चुपचाप उठे और भाग गये।

*

*

*

दूसरे दिन पूरे शहर में हल्ला मच गया कि कुछ सिरफिरा न मुसलिम कबरिस्तान में खुदी एक ताज़ा कन्न को खोद डाला है। खबर कोई खास नहीं था लेकिन उसके खास बनने का पूरा अदेशा था। चौकीदार की सूचना पर मृतक के परिवार वाले दौड़े आये। उन्होंने भी कन्न को देखा लेकिन वे यह न समझ पाये कि उस कन्न को खोदकर किसी को क्या मिल सकता था। समाचार पत्र में पारेख जी पायल वाले के महा हुई चोरी का वृणन सुनिये का साथ

प्रकाशित किया गया था। आदतन पाकारा ने एक बार फिर पुलिस की नाबाम-यावी और शहर में बड़ी चोरी आदि की वारदातों की चर्चा शुरू कर की। लेकिन पुलिस इस प्रकार की वारदातों और चर्चा से देखकर अपने नियमित कार्यों में लगी हुई थी।

लेकिन रामने से प्राप्त दिखन वाली (बात) अपने गर्भ में कुछ भयानक घटना ही छिपाये रखी थी। कुछ असामाजिक मुसलिम तत्त्व अपने ही समान खुस्रोटा लगाय हिंदुओं के साथ कवरिस्तान पहुँच गये थे। उन्हें ही तो मुग कब्र से मतलब था और न ही मृतक व्यक्ति की अस्मिता में। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि पारख जी पायल बाल के यहाँ हुईं सेधमारी का सम्बंध उस कवरिस्तान से वही न कही अवश्य है। उनकी छठी दृष्टिय पुलिस व्यवस्था की तुलना में कहीं ज्यादा ही जाग्रत थी। कवरिरतान में पहुँचकर उन्होंने चोरी को सूघन की कोशिश की लेकिन सफलता न मिली। शायद सफलता मिल जाती लेकिन क लोगो के वहाँ पर हुये जमाव में चोरी का माल ढूँढना सम्भव नहीं था। और फिर यह तो मात्र शक की बात थी। यदि कल्पना पर चढा मुल्गमा पुस्ता होता तो फिर शायद माल ढूँढने का प्रयाग सम्य रहते किया जा सकता था। सबके सब चुपचाप बाहर निकल आये।

* * *

कवरिस्तान के बाहर लग देशी जाम की छाँव में बैठकर उनमें चिलम निकाली और गाना भग्न लगे। कादिर खान और रम्भू उस्ताद ने एक दूसरे की ओर खाँसी आँसू से दया। शायद दोनों के अंदर उपनती बाता की आवृत्ति तरंग एक ही मापदंड पर आ रही थी। चिलम की कश लगान ही कादिर खान बोला—“रम्भू मरा मन अभी भी कह रहा है कि चोरी का माल इसी कवरिस्तान में छिपा रखा हुआ है। मन को बहुत समझाता हूँ लेकिन मन मानता ही नहीं है।”

‘देख भाई, बेकार की बातों में फिर खपाने से कुछ नहीं मिलना। हाँ यदि हम चाहे तो इससे ज्यादा माल बटोर सकते हैं।’

‘कैसे?’

“बनो मत, जसा मैं सोच रहा हूँ वैसा तुम भी सोच रहे हो। हम मुत्तरिमो की एक ही कौम होती है और एक ही परम हावा है। भातक, हो-ह-ला और नूटमार।”

“लेकिन हमार-तुम्हार भर सोचन से काम नहीं होगा। साथ व लोग कितना साथ देंगे।”

“सब देगे। क्या इनके पास कुवेर का बोट खजाना है जिसके भरोसे य जिंदा है। हमार दिमाग और इनकी मशकत रंग ला सकती है।”

दोनो के साथियो न उनकी ओर देखा। चिलम की कश और भी तेज हो गइ। सबको आँखो म पशुवत बहशीपन तेरने लगा। कादिर और रम्मू ने सबका अपनी योजना मे अवगत कराया तो सबके सर एक साथ सडे होकर फिट्ती अंदाज मे हाथ उपर कग्गे घोन उठे—“इन”। चिलम एक बार और भरी गई और अपनी जाति मे शामिल करन वाले बपटाइजेशन वाले तरीक से सपको ब्रमवार पण बा गई। हर आदमी चिलम पीता जाता था और “चीयर अप” बहकर नई योजना के लिये निर्मित जाति मे शामिल होने का मतय भी जताता जाता था।

*

*

*

दूसरे दिन सुबह ही शहर व एक कोन म कादिर के साथियों ने आवाज लगाना चालू कर दिया। वातावरण वनन मे देर नहीं लगती। सपरो और मज्मो वालों के देश म दशका की भीट इकटठा हाने मे कितना समय लगता है। चतुर्दिव व्याप्त वातावरण आवाजा स गुजायमान हो गया—“यपरिस्तान की खुदी गइ बन्न हिन्दुओ का अत्याचार है। बन्न जान-बूझकर शक्ति जताने और दवाव डालने व लिये खोदी गई ह। हम इसका बदला लेना है। सब इबट्टे हो जाओ इरलाम खतर म है।” आवाजो ने जादू का काम किया। लोग के शुद्ध सरल मन घृणा और विद्वेष से मलिन हो गये। न चाहने हुये भी लोग उसे खुलूस मे जुझने लगे। दिशाहीन लोग का वह मैलाव गली और कूचा मे गुजर-गुजर कर लोगो के दिमा म वैमनस्य के बीज अंकुरित करने लगा। कादिर व साथी भीड म फेरे हुये मनोरम को बना रहे थे। कुछ लोग बीच-बीच मे पत्थर भा मारते जाते थे।

जुलूस की खबर शरण भर में ही शासन को पहुँच गई। पुलिस जवानों के दस्तों जलूस के नियंत्रण के लिये खाना होने के पहिले ही रम्भू ने पूव नियोजित तरीके से शहर के अन्य भाग से मुसलमानों के खिलाफ जेहाद छेड़ दिया। उसका साथी भी गली बूचों में धूम-धूम कर चिल्ला रहे थे—“मुसलमानों द्वारा किया जाने वाला हत्या बबुनियाद है। कब्र इही में से किसी न खोदी है। वे स्वयं ही बलवा करके हिन्दुओं से भगडा करना चाहते हैं। हम क्या करेंगे इनके कब्रिस्तान में जाकर। सब कुछ भूठ है-बिलकुल भूठ। कौन नहीं जानता है कि कादिर गुडा है और इसी ने यह सब जान-बूझकर कराया हो।” इसी प्रकार के अर्थ नारा स गली-बूचे गूजन लगे। लोग बदले की भावना से लाठियाँ लेकर तैयार होने लगे।

रम्भू और कादिर को खबर मिल गई कि पुलिस आने वाली है। दोनों ही तैजी से गल्ला बाजार और सराफे की ओर अपने-अपने साथियों के साथ भागे। उनके साथी पत्थर फेंकते जा रहे थे और गाली बकने जा रहे थे। वातावरण उनकी आशानुरूप गर्म हो चुका था। पुलिस दस्तों के आगमन के पहिले ही उनमें जलूस के साथ दुकानों पर धावा बोल दिया। दूकानों फटाफट बंद होन लगी। लेकिन वे लोग बिलकुल घाघ थे। दूकानों के दरवाजे टूटने लगे। बदहवास जनता बिला बजह घृणा से उनका साथ दे रही थी। कुछ नारे लगाने में व्यस्त थे लेकिन बहूती न अपने उद्देश्य को भुलाकर दुकानों टूटन में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई। सारा जलूस लूटपाट की प्रतिक्रिया में तन्दील हो चुका था।

पुलिस के आते ही भगदड़ की गति में तीव्रता आ गई। नियंत्रण की स्थिति बनाने के लिये डी० एम० ने एक सौ चौब्यालीस धारा लगा दी। नगर सेना के जवान अपने एक मात्र शस्त्र लठठ के सहारे भीड़ को तिवर-वितर करने में लग गये। लेकिन स्थिति नियंत्रण के बाहर पहुँचन लगी थी। धम के रक्षक उसकी रक्षा के लिये दुकानों लूटन और पुलिस वाला पर पथराव करन में व्यस्त थे। डी० एम० ने अशु-नाम के उपयोग का आडर दे दिया। बायरलेस स जिनाधीश को खबर कर दी गई। वे भी पहुँच गये। स्थिति स निपटन के लिये जिनाधीश न पशु सग जाने की घोषणा कर दी। सारा आततायी तैजी स भागे। जिरन

हाथ में जो आया ले भागा। रम्मू और कादिर भूमिगत हो गये। उनके साथी सूट का माल इकट्ठा करके शांत हो गये थे। बँटवारे का निर्णय स्थिति व शान्त होने पर छोड़ दिया गया।

पुलिस ने रम्मू और कादिर को ढूँढने के लिये जाल बिछा दिया। उनको ढूँढ निकालना बठिन था। क्योंकि कहीं से भी उनका बारे में कोई सूचना नहीं मिल पा रही थी। लेकिन पुलिस की सारी खानदोन की सूचना उन तक बराबर पहुँचती जा रही थी। जब वातावरण बर्षु के कारण कुछ दिनों में नियंत्रित सा दिखाई देने लगा तो रम्मू और कादिर ने आत्म-समर्पण का निर्णय लिया। उन्हें पता था कि उनका बच निकलना मुश्किल है। हाँ इतना जरूर था कि पुलिस की मार से वे अब बच गये थे। यदि दगे व दौरान वे पकड़ लिये जाते तो पक्का ही उनका मरीर को रई की तरह धुन दिया जाता। लेकिन अब स्थिति दूसरी थी। उनकी पिटाई का मतलब था—दगा भड़काना जो शासन कतई नहीं कर सकता था। और फिर पैसा बमान व गिये किस नहीं अपमान सहना पड़ता है।

*

*

*

मुसलिम बबरिस्तान पर पहरा बैठा दिया गया था। शहर का आतक व्यवहार की लकड़ी व समान चीजें जलकर फुटफुटी राख में तब्दील हो गया था। माया व दिमाग से दगे का भय कम हो गया था। जनजीवन सामान्य होता जा रहा था। बर्षु पहले कुछ टीना कर दिया गया था और फिर बिन्कुल ही हटा दिया गया था।

दगा होते ही सबसे ज्यादा परेशानी बन्नु और रशीद का हो गई थी। उन्हें खंदाब नहीं था कि उनकी जरा सी भूम सार वातावरण को तनावग्रस्त और अशांत बना दगे। जेन में छूटन व बाद से ही राटी की समस्या उनसे नियम की हो गई थी। दगे व कारण उनकी छुटपुट चारियाँ ता छूट ही गइ थी। उन्हें डर था कि कहीं पुलिस उन्हें फिर न पर दरोबे तक की स्थिति में। पूरे ही होटल का विल भी चड़ता जा रहा था। बन्नु न रशीद का गुभाप दिया—'यदि सारी व मास का उपभोग करना है तो बहुत पहले है कि हम

पुलिस घाने जाकर अपनी स्थिति बता दें। नहीं तो किसी भी दिन पुलिस हमें शक म पकड़ लेगी और फिर क्या होगा भगवान जान। अर पकड़ना-बकड़ना तो चमता ही रहता है लेकिन इस दग स तो अपना कोई वास्ता ही नहीं रहा है। वो तो चाले रम्मू और कादिर बडे ही घाय हैं। मौका देखकर कुछ भी करा सकते हैं। क्या हम मधे हैं जो उनकी स्वीम पता न कर सके। मेरा तो श्याल है कि दरोगा को जागर बता दे कि हमें वाद कर दो। पता नहीं क्या क्या हो और हम खामोखा मा जाय।”

‘तू तो पार कानू हमेशा उल्टा ही साचता है। क्या पुलिस बेवकूफ है आ हग जैसे टुटपुजिया पर हाथ डालेगी।’

‘हाथ तो नहीं डालेगी। लेकिन भया जंत दगे या कोई उमूल नहीं होता है वैसे ही दगे मे पुलिस या कोई उमूल नहीं हाता है। मेरा तो सोच है कि पुलिस को अपनी स्थिति बता दे जिससे कम से कम बचे ता रहूँगे।’

“जैसी तेरी नर्ज़ी, चल।”

पुलिस को पता था कि कानू और रशीद जस छोटे चोर दगे जैसी स्थिति पैदा नहीं कर सकते। उन्हे शाम 7 शाम हाजिरी भर लगान के लिये बाल दिया गया। प बहेद टुश हो गय।

*

*

*

क़रिस्तान पर लगा पहरा भी ढीला कर दिया गया था। मात्र एक या दो पुलिस वाले बफिकरी से बंध खगय यतीत करते रहते थ। मृतक की क़द पुन भर दी गई थी। कानू और रशीद रोज क़रिस्तान का चक्कर पुलिस की नज़र बचाकर लग लिया करते थ। व मौक की तलाश म थ कि किसी भी तरह जेवर उठा लिये जाय। दग की घटना ने पारख जी पापल वालों के यही हू चोरी की घटना का हुद्र बना दिया था।

एक बार ज़र दे शाम 5 भुरमुटे म क़रिस्तान या मुशादना निबले तो उन्हे सामन पहिचात का दरोगा निबले और भागने की फोनिश करने लग। लेकिन लिया। उसने मही से आवाज़ लगाई—

देखकर मुह छिपा रहा है। अरे नमस्ते तो कर लिया कर।" कलू और रशीद दरोगा के पास पहुँच गये। रशीद बोला, "दरोगा जी हम आपको यहाँ देख ही नहीं पाय। नहीं तो अपना न करे तेसी गुस्ताखी हम जैसे कर सकते हैं।"

"दरोगा जी, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" कलू ने धीरे से पूछा।

"अरे क्या बताये। दगा क्या हो गया हमारी तो मौत ही आ गई। सुबह से शाम तक पुलिस क्या करे। अरे आजकल की तो पैदाइश ही साली हुरामी पैदा हो रही है। पुलिस वाले बट्टा तब मुझारे सबको। अरे और तुम लोग यहाँ पर किसलिये आये हो।"

"ऐसे ही घूमने निकल आये थे?"

"बनाओ मत। कवरिस्तान कोई घूमन का जगह नहीं होती है। और फिर तुम जैसे लोग घूमने निकलो?"

"यदि आप जानना ही चाहते हैं तो रात यह है कि पारेख जी पायल वाला के यहाँ हुई चोरी का सम्बन्ध इन कवरिस्तान में जरूर है। पता नहीं ग्यो मन कहता है कि चोरी का माल यहीं कहीं छिपा रखा हुआ है।"

"दगे के कारण चोरी की चचा कैसे रणचवकर हो गई। और भगवान जान किस मुझे न चोरी की है कि पता ही नहीं लग पा रहा है।" दरोगा ने अपना मत व्यक्त किया।

"अच्छा दरोगा जी हम लोग चले।" कलू ने कहा।

तुम लोग आजकल क्या कर रहे हो?"

"काम की तलाश में हैं।"

"अच्छा जाओ अब चोरी-ओरी में मत फँसना।"

जैसे ही कलू और रशीद जान के लिये मुड़, दरोगा ने यहाँ-वहाँ देखा और फिर घोर म बहाना— दयो व कलू डबर आ ? तुम्हे मक् है कि मान यही-कही छिपा है?"

"दरोगा जी, य तो मात्र शक है। पक्का थोड़े ही कह सकता हूँ।"

"अच्छा तुम लोग माल ढूँढ सकते हो?"

“कोशिश कर सकते हैं।”

“तो निकालो ढूँढ कर।”

‘मालिक माल ढूँढा और आपने कहीं धर दबोचा तो।’

‘अरे तू तो निरा बंबकूफ है। दगे के हो-हल्ले में पारख जी की फिर किम।’

“माल मिलने पर हमें दया मिल्नेगा दरोगा जी। आप तो देख ही रह हैं कि हम बकार हैं।”

“आधा-आधा ईमानदारी से बात लगे।”

बन्लू और रशीद ने एक दूसरे को आर देखा और कवरिस्तान में मान झूठने घुस गय। दरोगा न यहाँ-वहाँ देखकर पहरे पर मुस्मैदी बढा दी।

नज़ूल म काम करते-करते शम्भूनाथ को अरसा गुजर गया था लेकिन दुनियादारी वे नहीं सीख पाये थे । जबकि नज़ूल या दूसरा नाम ही दुनियादारी है । ईमानदारी और नज़ूल विभाग म उतना ही अंतर है जितना कि ईश्वर और कमबाड़ी भक्त म । शम्भूनाथ भक्त तो अवश्य थे लेकिन अपने काम और ईमानदारी व । मुह अघेरे ही उठकर स्नान-ध्यान किया और फिर भिड गये आफिस स लाई फाइला के पेडिंग काम मे । उनक परिजन शम्भूनाथ की आदती से परिचित थे लेकिन व भी यदा-कदा उनको आदता मे परेशान हो उठत थे । शम्भूनाथ के विभागीय सहयोगियो ने थोड ही समय मे गगनचुम्बी इमारता वा निर्माण करा लिया था लेकिन शम्भूनाथ उन इमारतो की छाया तक भी नहीं पहुँच पाये थे । न जाने किसने अपसुर आय, कितनी का कितना धन कमाकर दिया लेकिन शम्भूनाथ अछूते ही रह गये लक्ष्मीरूपा स । ऐसी बात नहीं थो कि वे धन कमाने की कपना नहीं करते थ । कई बार आत्मा को दवाँचा भी सहयोगियो और अपसरो के इशारो पर, लेकिन पारिवारिक संस्कार हमशा आड आ गये और फिर उह फूटाताल के उस दो कमरिये वाले तथाकथित मवान म सिमटकर रह जाना पडा । पत्नी न कई बार दुनियादारी का दशन समझाया लेकिन बाद म वह भी धन शनै मूखी तन्खा मे गुजारा करना सीख गई । बच्चे बडे हो रहे थे । यह तो इश्वर का शुक्र था कि बच्चे पढन मे होशियार थे । पत्नी इसी मे खुश थी और समभोतावादी बन गई थी । लेकिन शम्भूनाथ महसूस करने लगे थे कि बच्चा म भी हीनता की भावना प्रस्फुटित होने लगी है । लेकिन व मजबूर थ अपनी आदती से ।

बडा लहका सुमित बाफी सवेदनशील था । समझदारी उसम आ गई थो— दुनिया को समझने की । फूटाताल का वह दो कमरा वाला मवान, सामने स बहती नाली जिसमे सुबह ही सुबह भारतीय माताय बच्चो का मेला प्रवाहित कर देती, गाम से ही शुरू हुई मच्छरो की भिनभिनाहट और चतुर्विक कारपो-

—जन्म की समझदारी न सदा बिसरना रहना वाला कबड़ा मुमित गृह नहीं पाता था ।

जब तक वह नादान था तब तक इन सबको नियति मानकर समझौता कर लिया था लेकिन समझ का दर्जा बनास की दज्जाया के साथ साथ जस-जैस बढ़ा उसने अपने पिता के सामने अत व्यथा का स्पष्ट बरना शीघ्र लिया था । उसने बर्त बार शम्भूनाथ से बोला था कि सरकारी क्वार्टर में चल जायें । लेकिन शम्भूनाथ ने कि मकान का मोह ही नहीं छोड़ पाता था । जब भी मकान बदलने की सोचता, मकान में बीता अतीत भूत के समान चिपक जाता । मकान बदलने की कल्पना से हाँ बीता बदन उजागर हो उठता और शीघ्र गत उसकी स्मृति पटा पर उभर आता अपने पिता के द्वारा पड़ाव जाने वाला पहनी का पाठ एक बीत के भीतर गुपचुप मिट्टी की तरह न कुछ नीचे छिपा हुआ था नन्हा पौधा— 'माद कराया करत थ । शम्भूनाथ के पिता की अजस्य मोत न उनको तोड़ दिया था लेकिन मिट्टी की तरह में छिपे बीत के समान व तब भी पनप गये—सीमित दायरे में । लेकिन उचित खाद-पानी के अभाव में वह पौधा पीतलम्बरी होकर ही जीवित रह पाया था । मिट्टी का मोह बड़ा बलशाली होता है । उससे जुड़ी बीत समय की स्मृतियाँ ही व्यक्ति को भावी जीवन का आधार प्रदान करती हैं, उसे जीवित बनाती हैं । सभी लोग तो धीरे-धीरे बिखर जाते हैं इस दुनिया में लेकिन वे स्मृतियाँ तब भी ऐसे बिखराव के मोड़ पर उभर आने का आधार प्रदान करती हैं । बच्चों के अनुरोध पर शम्भूनाथ जब भी मनन करने स्वयं को मकान से शीघ्र भी जुड़ा पाता ।

*

*

*

समय गुजरा और बुढ़ापे की सफेदी शम्भूनाथ की कापटी पर दस्तक देने लगी । मुमित काले में पहुँच गया था—इजोनियारिंग पड़न । बेटी रेखा गुड्डा-गुड्डी, रस्सी और गुट्टा खेलने-खेलन जवानी में पदापण करने लगी थी । सबन छोटा बिराल स्कूल में पढ़ने के बाद भी पलंगवाणी और गुली-डण्डे में अपनी दिलचस्पी बनाये रखा था । पैरों की लगी अब भी बरकरार थी । सब लोग एक सिमटी जिंदगी जी रहे थे—मुनहर भविष्य की आशा में । अभाव जीवन का

आवश्यक अंग बन गया था लेकिन अनुशासित आदतों के दायरे में वह भी अपनी अहमियत खोत लगा था ।

ऐसे ही समय शम्भूनाथ के जीवन में एक बर्साका हुआ । सिंहा नाम का एक धाकड़ अफगन शम्भूनाथ के जीवन में आया । शम्भूनाथ की ईमानदारी और कर्तव्य भावना से वह बहुत प्रभावित हुआ था । उस विश्वास ही नहीं हुआ था कि शम्भूनाथ जैसा व्यक्ति भी नज़्म में हमारे वर्षों तक काम करता-करते विभागीय क्लक से अहूता रह गया है । वेने सिंहा ईमानदार नहीं था लेकिन था बड़ा जीवट और दुनियादार ।

एक व्यापारी का जमीन का बेच फसा सिंहा की अदायत में । कर्ता-धत्ता शम्भूनाथ ही था । उसकी जगह कोई और होता तो हज़ारा का सौदा आनन-फानन हो जाता । सिंहा व्यापारी को नियत को ताड गया था । चैम्बर में पुनः पता नहीं उस व्यापारी में उसने क्या बोना कि वह शम्भूनाथ के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया । शम्भूनाथ मत य नहीं समझ पाये । व्यापारी का समझ में नहीं आ रहा था कि शम्भूनाथ से कैसे बातचीत करे । शम्भूनाथ के ही पूछने पर वह बोला—“बाबूजी । मेरी कुछ जमीन गहर के पास लोडेंनिटी गचपेडी में है । चाहता हूँ कि बिक जाय ।”

शम्भूनाथ तिरिकार रूप में बोले— ‘तो बच दो । इसमें मुझे बताने की क्या बात है ।’

“साहब चाहते हैं कि जमीन आप खरीद ल ।”

‘क्या कहा ? मैं खरीद लू ? कैसे साब निया तुमने कि पाच सौ रुपया का शम्भूनाथ गहर की पोरा लोडेंलिटी में सीस रुपये पीट की जमीन खरीद लेगा । मेरे बारे में सब कुछ जानते हुये भी तुम्ह ऐसी बात नहीं करना चाहिये ।’

‘भाव की बात छोड़िये । जिस भाग आप चाहते आपको बेच दूंगा ।’

“यह नहीं हो सकता । शम्भूनाथ बिक नहीं सकता ।”

व्यापारी सुनकर नाँचकर रह गया । उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे । वह साहब के चैम्बर में गया और स्थिति से अवगत कराने चला गया ।

*

*

*

सिंहा उस खीवट शम्भूनाथ पर मन ही मन बोलना उठे लेकिन शम्भूनाथ का दर्जा उनकी नजरों में और भी बढ़ गया था। उसने शम्भूनाथ को चेम्बर में बुलाया और कहा—

“शम्भूनाथ ! माना कि तुम एक निहायत ईमानदार आदमी हो लेकिन एक चना भाट नहीं बन सकते। जैसा समाज चल रहा है उसी समाज में तुम्हारा सम्मान देंगे। अन्यथा दूध में गिरी मक्खी के समान निवालेकर यह सारा समाज उस दूध को भी सपोट लेगा और तुम्हारी ईमानदारी पर ठेगा भी बतलावेगा। मैं नहीं कहता कि वे ईमान बनो लेकिन कानून जो हो सकता है वो तो कर सकते हो। उस व्यापारी की जमीन खरीदने में क्या आपत्ति है तुमको। धूस तो नहीं दे रहा है। मरे बहन पर मोझा फेवर ही तो कर रहा है। कितने बच्चे हैं तुम्हारे ?”

शम्भूनाथ की घर की परिस्थिति सुनकर सिंहा फिर बोला—

“माना कि बच्चे होशियार हैं लेकिन लडकी की शादी में तो खर्चा लगेगा। वहाँ से लाभागे पसा बतानो। फण्ड है ही कितना तुम्हारा। खर्च कर दिया तो क्या करोगे बुढ़ापे में। और फिर उस कितने लोग हैं हमारे इस दकियानुस समाज में जो चरित्र और गुणों से तुम्हारी कीमत आँकेंगे। और तुम्हारी बच्ची का हाथ स्वयमेव माँग लगे। बहती गंगा में हाथ धोना सीखा। नहीं तो हाथ में लगा चरित्र का कीचड़ दुख के सिवाय कुछ भी न देगा। कितना ही मह कीचड़ सूखेगा दुख की जकड़न और भी बढ़ जावेगी। समझ रहे हो न। फिर मत कहना कि ढङ्ग का कोई अपसर नहीं मिला। सिंहा कर रहे कुछ जमीन-जायदाद बना लो। ऐसा अपसर फिर नहीं मिलेगा भविष्य में।”

शम्भूनाथ सिंहा के दशन से विचलित तो नहीं हुआ लेकिन सिंहा के दशन में उस ययाय जहर नजर आया। उसने कुछ सोचा और बोला—

“सर, आपकी बात मान भी ली जाये तो जमीन खरीदने के लिये पैसा कहा से आवेगा। और फिर जमीन खरीदने से क्या होगा। मकान बनवाना कितना दुष्कर है आजकल।”

सिंहा मद-मद मुम्बराते हुए बोला—

‘लोन के निय एप्लाई कर दा । तू च कुछ हा जावेगा । जा यापारी तुम्ह जमीन बचेगा वह ही तुम्हारा मकान भी बनवावगा—लान के ही पसे मे । उसमे ज्यादा पैसा तुम्ह खच नही बरना हागा ।’

शम्भूनाथ चुप हा गया और चुपचाप जाकर अपनी सीट पर बैठ गया ।

*

*

*

सुदुद्धि कहिये या कुदुद्धि, शम्भूनाथ ने पारिवारिक सदस्यों की उच्छ्वा की सर्वोपरि मानकर जमीन खरीद ली और भवन-निर्माण का सिलसिला चालू हो गया । पत्नी-बच्चे सभी खुश थे कि नरक में निबलकर खुती हवा में सास लेने का एक अवसर तो उनकी निदानी में आया । अभिजाय बग की उस बानोनी में जहाँ बगला के चतुर्दिक् बनी चहार-दीवारियाँ अभिजात्य मानसिकता का प्रतीक थी, शम्भूनाथ का मकान मलमल में पबद व समान था । मितव्ययता का ध्यान रखकर परिवार के सभी लोगों ने शारीरिक धर्म के माध्यम में उस खप-रैलची मकान में अपना श्रुत-पसीना सींचा था । गार् को तगाडिया उठाई थी, मिन्गी की अनुपस्थिति में मशक में पानी सींचा था और फण की कुटाइ की थी । काटेजनुमा उस मकान में शम्भूनाथ का भविष्य सुरक्षित हो गया था । लेकिन शम्भूनाथ ने महसूस किया था कि मकान-निर्माण की प्रक्रिया के दौरान लोगों की निगाह एक विशिष्ट में सदैव में उम निहारती रहती थी । शायद वे सब एक बावू का उस कालानी में रहना पसंद नहीं कर पाय थे । उन सबकी निगाहों को देखकर उसे लगता कि सब कह रहे हैं—“कहाँ मिस्टर शम्भूनाथ । एक बावू इतनी महंगी जमीन कैसे खरीद पाया । आग्विर भाइ नज़ूल का ही तो बावू है । हा-हा-हा ” शम्भूनाथ का अदर ही अदर लगता कि वह उस परिवार में कभी आत्मसात नहीं हो पावगा । उग्र बग की टीमटाम, आडंबर फणन आदि र लिये वहाँ से पैसा लावगा वह । एकत्रारगी उसने सोचा भी था कि मकान बनने के बाद उन किराये पर उठा देगा लेकिन फिर परिवार की याद आ जाती जो उस मकान में कही ज्यादा जुड़ा महसूस करने लग थे । मकान-

निर्माण के दौरान ही उसके पास कई लोग आय भी थे मकान किराय पर देने व लिये । पाच-छ सौ का ऑफर भी दिया था लेकिन वह चुप रह गया था । घर में बात भी की थी उसने मकान को किराय पर उठाने की लेकिन सबसे उसका पुरजोर विरोध किया था । सुमित की आखों की चमक ता क्षण भर में धुंतिविहीन हो गई थी । परिवार की खातिर शम्भूनाथ न उस दरपरेलची काटेज में रहने का फैसला कर लिया ।

*

*

*

मकान व गृह-प्रवेश समाराह में सिंहा भी आये थे लेकिन शम्भूनाथ उनमें नजरें मिलाने का साहज नहीं बटोर पा रहा था । काटेज के मुख्य द्वार पर करीब स लिखा “आशीर्वाद” सजाया गया था । सिंहा ने शम्भूनाथ की पीठ थपथपाई । शम्भूनाथ को ऐसा लगा था कि आशीर्वाद सिंहा के प्रयासों का ही प्रतिफल है । कालोनी के काफी लोग आर्मात्रित थे । बरीब-करीब सभी आय थे—शायद इसलिये कि भविष्य में शम्भूनाथ से बनाय सम्बन्धों का दर-सबर भुनाया जा सके । शम्भूनाथ के परिवार ने साचा कि कितने अच्छे लोग हैं जा के उनके इस लघु समारोह में शुभकामनाये देन आय हैं । लेकिन सिर्फ शम्भूनाथ ही सही साच पा रहा था । वह ईमानदार जरूर था लेकिन बुद्ध नहीं । दुनिया-दारी का नजदीक स देखकर लोगों को समझने की अपरिचित क्षमता उसमें पैदा कर ली थी । सिंहा न शम्भूनाथ को शुभकामनाये दी और फिर सब औपचारिकता निभाकर अपने-अपने घर चले गये ।

*

*

*

शम्भूनाथ का सम्पूर्ण परिवार ‘आशीर्वाद’ में जाकर खुश हो गया । लेकिन शम्भूनाथ ने अपना पुस्तैनी किराय वाला मकान अभी भी नहीं छाड़ा था । उसमें वाला लगा दिया था और तब जब होन व वाक्बूद भी शम्भूनाथ उसका किराय भरता जा रहा था । सचन कहा था कि मकान छोड़ दिया जाये लकिन शम्भूनाथ निर्विकार ही रहा था । ‘आशीर्वाद’ में कुछ समय त्रितान व बाद सबमें महसूस किया था कि वे एक सुन्दर महल में कैदी की जिंदगी जी रहे हैं । शम्भूनाथ की पत्नी घर में ही सिमटकर रह गई थी । सार प्रयासों के वाक्बूद भी वह

अभिजात्य वर्ग की महिलाओं से जुड़ नहीं पाई थी। उसे लगने लगा था कि फूटाताल के मच्छर भर उस दो कमरिये मकान में वह कहीं ज्यादा स्वतन्त्र थी। बास-पास (पड़ोस) की महिलाओं का निर्मल निस्वार्थ व्यवहार उस रह-रहकर याद आता रहता था। दोपहर का समय काटना उसके लिये दूभर हो गया था। कालोनी की महिलाओं का बतरतीव जीवन और स्टेटस की बातें उस रास नहीं आई थी। उसने भी शम्भूनाथ की दिशा में सोचना प्रारम्भ कर दिया था। लेकिन वह अपना निणय नहीं बताना चाहती थी। कारण कि आदर ही आदर वह स्वयं को भी उस स्थिति के लिये दोषी मानती थी।

सुमित महसूस करने लगा था कि वह कट गया है। कालोनी के युवाओं में उसका सालमेल नहीं बैठ पाया था। उन सबकी मानसिकता को स्वीकार करने का साहस उसमें नहीं था। रोज-रोज पेरिमसन चेंस, राविस के पात्रा और उपयासों की चर्चा पियासियों से जुड़े कालोनी—युवाकुमारा का भ्रम और जीवन-संस्कृति के अधानुकरण से उसे लगने लगा था कि वह एक निराशावादी दर्शन विहीन खोखल समाज में जी रहा है। विशाल की पतगवाजी और गिल्ली-डंडा यहाँ पर विलुप्त हो गये थे। इनकी चर्चा ही उस समाज में निचले स्तर का मापदण्ड मानी जाती थी। उसका शैशव मन कभी नहीं समझ पाया था कि क्रिकेट और बीडियो की ही चर्चा वहाँ पर हमेशा यो होती रहती है। बतरतीव से पहिन कपड़े और उस पर सुसज्जित टाइ पहिने लडका को जब वह स्कूल जात देखता तो पाता कि उसका पटेहाल स्कूल जाना कितना अशोभनीय है। बातों ही बातों में वहाँ के हम उम्र बच्चे दुनिया के धारे में उसके अल्पज्ञान का मल्लोल उठात। विशाल का चंचल व्यवहार पलायनवादी होकर बाटेज के अदर सिमट गया था। वह निवन की कल्पना मात्र से शरीर के अदर विचित्र सी सिहरन महसूस करता। पट-पट बातें करने वाला विशाल इतना परिवर्तित हो गया था कि शम्भूनाथ और उरुकी पत्नी को भी रज हुआ था। विशाल अब किसी वस्तु की माँग नहीं करता था और पहली छारील का इतजार नहीं करता था। और रखा जो पहले ही घर में सिमटी सी थी अब और सिमटकर कुठारत हो गई थी। उरुकी सारे दुनिया तूह-बोक, मा और पढ़ाट तक

सोमिन हो गई था। उसरु चेहर क अ-ह- तेज मे उदाती घुन गई थी। आसों के भावा ने कहानी कहना बंद कर दिया था।

सजने महसूस किया था कि व कुछ ऐसा खोन जा रह हैं जिसकी आरूति शायद ही सम्व हो। लेकिन किपी को भी हिम्मत शम्भूनाथ से फूटावाल जाने मफान मे वाधिष चपन की कहने की नही होतो। यदि कोई अवेचनित था तो सिरु श-भूनाथ जा हर घटना को पीती नजर देखकर भी शान्तभाव म अपने काम म मगन था।

उवने बडी बात तो उस समय हुई थी जब विशाल बोमार पड गया था और शम्भनाथ भाता-भागता सिबिन सजन के वगने मे गया था। सिबिन सजन कहा पार्टी म जान के लिने तैयार थे। उन्हाने उसके घर जान मे असमर्थता व्यक्त की थी और अस्तताल व इमरत पी वाड मे जाने की सचाह दो थी। शम्भूनाथ कश्कर रह गया था। उसने जान म भी सोचा नही था कि डाक्टर कतव्य म ज्यादा पार्टी को महत्व देगा।

गट म बाहर निकलन-निकलने उयन सुना—

‘कैम लोग हैं बिना सोचे समझे चने आत हैं अरे मफान क्या बनवा लिया कालोना मे तीसमारखा समझने लगा है कुछ ही सोचा होता कि कहा जा रहा है पैरो की धून सिर चड वोन बरदाश्त कर मुक्त है। मुनकर शम्भूनाथ सत हो गया था। सिरु आसो ने आसुओं के रूप म उसस सहानुभूति जताई थी। घर पहुँचकर जब उसने घटना बताई तो सब एस शान्त हो गये जैसे कोई मौत की खबर मुन ली हो। शम्भूनाथ जानन-फानन विशाल को गिरो मे ढोकर फूटावाल के दो रूपये वाले डाक्टर के पास ल गया। उस डाक्टर स उसके पुरतोनो सम्ब व थे। डाक्टर बाना, क्यो वे आर विशाल का इतना दूर। खबर कर दन चना आता।’ शम्भूनाथ की नजरें नीचे झुक गई।

‘आतोवाद’ काटेज शम्भूनाथ और उसके परिजनो के लिये एक अभिशाप हो साबित हुई थी। ऊट को अनी ऊँचाई का भान तब हुआ जब वह पहाड के नाचे पहुँचा। सभी अंदर ही अंदर प्रमोउ थे। बिबरी मानसिकतापें अब अब

आधार पर जुड़कर समरूपता पा रही थी। उस दूटन की स्थिति में सुमित हिम्मत बटोरकर बोला—'बाबू। द्यो न हम सब फूटाताल वापिस चले जायँ।' सबकी आँखों में एकदम से चमक आ गई। विशाल विस्तर पर ही लेटा लेटा बुखार में बोल पड़ा—'हाँ बाबू। चलियगा न वापिस वही पर। टिलू कलू, मुन्नी, केशव, सोहन से मिले कितन दिन बीत गये हैं। वे बचाने ता यहा आ नहीं सकत लेकिन हम ता वापिस जा सकते ह।' ऐसा सुनते ही शम्भूनाथ की पत्नी ने विशाल क गिर पर हाथ फेरते हुए हँसास से स्वर में कहा 'बेटा। जरूर चलेंगे। कौन रहना चाहता है इस मानवीय समाज में गजे इलाक में। तेरे बाबू तो पहिले ही बोले थे कि यहा नहीं रहेंगे लेकिन जिद ता हमारी ही थी न।'

रेखा चीक से बाहर आकर बातचीत में सम्मिलित हो गई थी। उसका हाथ अनायास ही ताक में रखी रस्ती और गुट्टों पर चले गये थे। उसका उठे उठाकर चूम लिया।

*

*

*

दूसरे दिन शम्भूनाथ न सामान बाधा और सब फूटाताल क मकान में जाने के लिये तैयार हो गये। फिर अचानक शम्भूनाथ को कुछ याद आया और उसका फूटाताल जान का कार्यक्रम एक दिन के लिये स्थगित कर दिया। शम्भूनाथ ने वापिस से छुट्टी ले ली। सब लोग शम्भूनाथ क व्यवहार पर आश्चर्यचकित थे। लेकिन कुछ समय नहीं पा रहे थे। घंटे भर बाद सबने देखा कि शम्भूनाथ एक राजमिस्त्री के साथ वापिस आ गये हैं। शम्भूनाथ के आदेश पर राजमिस्त्री न आशीर्वाद क चमकते अक्षरों को तोड़ दिया और फिर आगल भाषा में वहाँ पर लिख दिया—'स्लम हाउस'। जब पत्नी और बच्चों ने शम्भूनाथ की आर प्रश्न की श्रद्धा में देखा ता वह बोला—'इस स्लम हाउस में यह हमारी आखिरी रात होगी। फिर सब कुछ ठीक हो जावगा—दूधे की तरती रगान क बाद। पत्नी और बच्चे स्लम हाउस क प्रतीक का सम्भने का प्रयास करने लगे थे।

★ [यह कहानी साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' द्वारा 'अभियाप' शीर्षकवातगत प्रकाशित की गई थी।]

बूंद-बूंद मौत

अब इस कस्बे में बचा ही क्या है। मशीनों की प्रगति करती तादात ने कस्बवासियों को शन-शने शहरो मुक्त कर दिया है। राहत काय के दौरान पीनी मिट्टी से बनी कच्ची रोड ने गावों की शहरों की ओर दौड़ में विशेष त्वरण लाकर नया अध्याय खोल दिया था। इस कारण कस्बवासियों ने कस्बे में रहने के बाद भी अपने आसपास के परिवेश में शहरों की असत्य लेकिन अहंकारी बातों को एक न पके फोड़े के समान पोषित करना सीख लिया था। आखिर ग्रामीण जन किस रूप में स्वयं के जीवन को परिमार्जित करें। फिर शहर तो हमेशा से आदर्श का लबादा ओढ़े हुए हैं—कम जनसंख्या वाले कस्बों और गावों के लिये। गावों और कस्बों का कुटीर उद्योग ठेकेदारों के माध्यम से शहरी सेठों की गाद में पलकर बड़ा होने लगा था। लेकिन जिनके पास शहर जाने के लिये धन न था, वे कस्बों की अनचाही जिंदगी से समझौता कर वहीं पर अपनी श्मशान भूमि तैयार कर रहे थे। जहाँ शहरो के श्मशान घाट शहरो की बरोक-टोक वाली आबादी में डरकर हर बार बाहर खिपक जाते थे, कस्बों के श्मशान घाट एक लम्बे युग के बीत जाने के बाद भी अपनी निर्धारित सीमाओं में सिक्कुडता ही जा रहा था। लेकिन श्मशान घाटों के इस फैलाव में सिक्कुडन में बखबर चमरू रोज सिर्फ एक ही आह भरकर रह जाता था, “कि यह घाट क्यों उसकी भांजी पर अपने डैने फैलाकर उसे अपनी जाति में शामिल नहा करता ?”

*

*

*

चमरू के जीवित शरीर और एक मुर्दे में फल ही क्या रह गया है। पैंतीस साल की उम्र हाजी हो गया है लेकिन चमरू को देखकर ऐसा लगता है कि बिगोराकस्या को दहलीज पर पैर रखते ही बुढ़ापे ने उसका भरपूर स्वागत किया होगा। बिबड़ों में अब तो धान पीरने खार्ड में गान गुनगुनाने से लम्बो और पतली टांगें और बस पर टंगे कपड़े के समान कपड़ों के नीचे

10

लटकती पट्टे वाली मैली-कुचैली चट्टी और उस पर पहिनी बाधे बाह की बडी—
चमरू की पहिचान के मापदण्ड हैं। एक लम्बा अरसा गुजर गया जब उसने
स्वच्छ धवल—काच वाली धोती पहिनी होगी। फिर तो उस याद ही नहीं
रहा कि वह धोती कहा हवा हो गई। धाती तो उसके जीवन का पयाय थी।
धोती के हवा होने ही चमरू का जीवन और उसका सतुष्ट मुख भी हवा हो गये
थे। बच गया था सिफ घिसटता आत्माविहीन शरीर।

*

*

*

चमरू अपनी कला में माहिर था। हाथकरधे पर काम करना तो कोई
उसमें सीखे। न जाने कितने थान बुनकर फोक दिये उसने। लेकिन कला ही
तो सब कुछ नहीं है। प्रारम्भ भी तो होना चाहिये। और फिर भाग्य और
कला का गदिया में एक दूसरे के शत्रु रहें। शहरों में लगे लूमों ने गाव
और कस्बों के जुलाहों की रोटी छीन ली थी। दस बारह आदमिया का काम
जब एक मशीन ही करे, और वह भी मुघडता से, तो फिर कलाकारों की
क्या आवश्यकता। चमरू की तरह और भी कई जुलाह मशीनी सभ्यता का
शिकार हो कलाच्युत हो गये थे। कईया ने तो मजदूरी का काम कर लिया था,
लेकिन चमरू का 'कलाकार' परिस्थितियाँ से समझौता न कर सका। कितने
ही दिन चमरू ने ठूम-मालिकों में मल-जोल बढान के चक्कर में बिता दिये थे,
लेकिन उसकी हथेलियों की खुनान बरकरार थी। मरता क्या न करता, चमरू
की पुश्तैनी धधा अपना पडा।

एक गाव और कस्बा में लोग बेरोजगार होने लगे तो बीड़ी बनाना ही
उनका प्रमुख व्यवसाय हो जाता है। चमरू को याद है कि वेमे उसका बाप
बीड़ी बनाने-बनाते राजयक्ष्मा का शिकार हो गया था। वह हमेशा चमरू से
बहला था—“बेटा सब काम करना, लेकिन बीड़ी कभी न बनाना। बीड़ी पीने
वाले तो कुछ लम्बी जिन्दगी बसर कर ही लेंगे लेकिन बनाने वाला कभी
नहीं।” चमरू के बाप ने पूरी जिन्दगी पट्टे वाली चट्टी और पटी बडी में काट
दी थी। लोग कहते थे कि भारत का कपडा बड़ा मजदूर है। बाहरी देशों में

उसकी बड़ी खपत है लेकिन उसके बाप ने पट्ट बाल कपट और समने लकनाट के सिवा कुछ नहीं दवा था।

बोड़ी के घघे में पनप आक्रोश ने बमट को अच्छा जुलाहा बना दिया था। लेकिन ताने-बाने ने उसकी जिन्दगी में कोई मिशप साना बाग नहीं बुना था। वैसे कपट की बुनाई का काम भी उस हमशा नहीं मिलता था और खाली समय उसक पास काफी रहता था, लेकिन बोड़ी बनान का स्वप्न उसन कभी नहीं संजोया था। जब लाग उस खाली समय में बोड़ी बनाने की सलाह देते, तो खा जान वाली नजर। स वह उनका सामना करता। जुलाह प धध की कमाई न उसकी पारिवारिक फसल में काफी वृद्धि कर दी थी। शादी के आठ सान बाद ही वह पाच बच्चा का बाप बन गया था। लेकिन उसकी पत्नी इन बच्चों के जनन का भार न सभाल पाई थी। उसकी सारी जवानी क्षण मात्र में निचुड गइ थी। शायद इसीलिये ही विद्वानों न जवानी को क्षण-भंगुर आवश्यक का रूप बताया है।

*

*

*

मन का सारी इच्छाओं का दमन करके यद्यपि उसन बोड़ी बनाना चातू कर दिया था लेकिन उसक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया था। बन्कि उल्टा हुआ यह कि पट्ट की अग्नि शा त करन के लिये सारा परिवार बोड़ी बनान लग गया। बच्चा का स्कूल जाना धीर-धीर कम हो गया और फिर एक दिन छूट गया। चौपाल में शाम-मुवह खलने वाले उसक बच्चे घर में सिमट कर रह गये थे। जीवन की थुशतू तद्रू पत्ता की गदी बदनू और बचरे में समा गई थी। पूरा घर मिलकर सप्ताह में करीब पंद्रह हजार बोडिया बना पाता था। बमट ने सुना था कि सरकार न बोड़ी मजदूरों की रोजी बढा दी है, लेकिन उसे ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ था। पंद्रह हजार बोडियों का मतलब है सरकारी रट के मुताबिक करीब 95 ६० का मेहनताना। लेकिन उस कभी 55-60 ६० से ज्यादा इन बोडियों के लिये नहीं मिसा था। पत्त की कटाई और तम्बाखू की कम तौल और कट्टेदारा की बातों में मेहनताना करीब खालीस प्रतिशत कट जाता था।

यदि बोड़ी बनाने का काम भी हर सप्ताह नियमितता से मिल जाये, तो दो

जून की राटी तो निकल ही सकती थी। लेकिन ठेकेदारा और कट्टेदारा व कारण यह भी संभव नहीं था। वे हमेशा एक "स्पेशल पेवर" चाहते थे, लेकिन चमरू क्या पेवर दे सकता था। शरीर पर पहन कपड़ा की छोड़कर उसके पास था ही क्या। लेकिन समाज नंगा आदमी भी तो नहीं चाहता— खुले रूप में। नंगा आदमी तो सिर्फ अंदर में ही फवर दे सकता है।

* * *

इस सप्ताह चमरू और उसका परिवार न रात दिन एक करके बीस हजार बीडिया बनाई थी। चमरू ने सोचा था कि कुछ ज्यादा पैसा मिल जायगा तो वह बच्चा और बीड़ी के अधनग्न शरीर तो कम से कम ठक जायगा। उसका कट्टेदार घनश्याम वैस तो बड़ा भला आदमी है, लेकिन आदमी देखकर पंगा देता है। फुटपाथ पर बसकर बरन वाला घनश्याम सठो की मदद से कट्टेदार बन गया था। थोड़ा स समय में उसका काफी पैसा कमा लिया था।

पैस का आन ही उसकी काया कल्प हा गई थी। बालों में चीकट का तल उतरान लगा था और कुर्ते के गले के पीछे लाल छीट का एक बड़ा हमाल बंध गया था। कस्बे का वह अनादाता बन गया था, इंगलिय लोग उसकी शरारतों को नजर अंदाज कर देते थे। उसका भिड़ने का तात्पर्य था—कम मिलान वाले मेहनताने में भी हाथ जोता।

बीडिया निकल चमरू घनश्याम के कट्टे पर गया। घनश्याम उस देखकर बड़ा प्रसन्न हो गया। उस पास बैठकर बोला—

‘बयो चमरू भैया, सब ठीक-ठाक तो चल रहा है ना?’

‘मालिक! आपकी दया है।’ चमरू धीरे से बोला।

‘बीड़ी बना लाये?’

‘हां। इस बार कुछ ज्यादा ही बनाई हैं। साचा आपकी दया से पुराना पैसा और इनका पैसा मिल जाय, तो बच्चों के कपड़े बन जायें।’

‘सो तो है ही। घनश्याम आखिर तुम सबकी सहायता नहीं करेगा, तो फिर पैसा कैसे कमायेगा।’ चमरू चुप रहूँ

‘कितनी बीड़ी बना लाये?’ घनश्याम ने पूछा।

“बीस हजार ।” चमरू बोला ।

‘बीस हजार । लेकिन सब ठीक तो बनी है न । इतनी बीडिया तो तुम कभी नहीं बनाई—सप्ताह भर म ।’ घनश्याम ने आश्चर्य से कहा ।

“मालिक सिर्फ दो घंटे ही दिन भर में सो पाय हैं । दिन रात इसी आस से बीडी बनाते रहे कि थोड़ा ज्यादा पैसा कमा लिया जाये ।” चमरू ने स्पष्टीकरण दिया ।

देखे तुम्हारी बीडिया ?”

चमरू न टोकरी सामन रख दी । घनश्याम ने मुआइना करते हुए कहा—
चमरू इसमें मे तो आधी बीडियाँ ठीक नहीं हैं ।”

नहीं मालिक, बीडिया तो सय ठीक हैं ।”

‘नहीं भाई, तुम नहीं समझ सकते । शहर में मेठा के पास अब कट्टे ले जाओ, तो इन बीडियों को देखकर नाक-भों सिकोड़ते ह । कहते हैं—‘लोग बड़े काहिल हो गये हैं । बीडी तक ठीक में नहीं बना पाते । आधी बीडियाँ तो रिजेक्ट कर देने हैं । करीब आधी बीडिया का ही तो पैसा मिलता है । जितना मिलता है मैं सब तुम लोगों का दे देता हूँ ।’

‘लेकिन मालिक, एक बात बोल, यदि आप नाराज न होवे तो ?”

‘हां, हाँ, बोलो ।

‘मालिक मुना है रिजेक्ट बीडियाँ भी कट्टा में भरवा दी जाती ह । और अब सब कट्टे बाजार में विक्रि जाते हैं । वस हमारी ही महतत हम नहीं मिलती ।”

“राज की बात तो मैं नहीं जानता, लेकिन जितना ज्यादा से ज्यादा पसा मैं साता हूँ, तुम सब लोगों को निखालिस द देता हूँ ।”

चमरू चुप रहा । उस पता था बहस पर सतोष का पड नहीं पनपता । फिर धीरे में निराशा जनक स्वर में बोला—

तो मालिक ये बीडियाँ गिन लीजिये । पिछले तीन हफ्ते और इस हफ्ते का हिस्सा कर दें । अब घर में कुछ नहीं बचा है ।”

“बीडियाँ तो हम गिन लेते हैं लेकिन पैसा अभी नहीं मिल पायेगा । जेठों ने पैसा दिया ही नहीं ।” घनश्याम ने समझाने वाले स्वर में कहा ।

“फिर मालिक खर्चा कैसे चलेगा हमारा ? रोज कुआँ खोदने है जोर रोज पानी पीते हैं । फिर बीड़ी बनाने का फायदा ही क्या ?”

“तो फिर मत बनाओ बीड़ी । कौन सा मैंने तुमको बुलाया था । तुम्हीं तो आये थे मेरे पास काम की फरमाइश लेकर । अपना आदमी समझकर मैंने तुम्हें काम दिया था । अब तुम्हारी मशा ?”

चमरू मुनकर चुप रह गया । सत्य तो था—कौन घनश्याम उसे बुलाने गया था । वह तो स्वयं उसके पास गिडगिडाते आया था । परेशान सा हो चमरू जमीन कुरेदना लगा । घनश्याम चालाक था । धीरे से चमरू की पीठ पर हाथ फेरने हुये बोला—

“भैया चमरू क्या घनश्याम मर गया है ? तुम्हीं सदा पैसा कमाता हैं । पैसे की जरूरत हो, तो मुझसे सौ-पचास रुपये ले लो । कौन सा ज्यादा ब्याज लेता हूँ मैं । सौ रुपये पर सिर्फ पाँच रुपया महीना । बताओ इस दुनिया में इन्सान-इन्सान के काम न आय, तो क्या फायदा नि दगी का । छी-छी कैसा घोर कलजुग आ गया है ।”

चमरू फिर भी चुप रहा । गोबर से लिपे फश में थोड़ा गडबा हो गया था । फिर साहस जुटाकर वह बोला—

“मालिक दे ही दो सौ रुपये । हिसाब में से काट लेना । वच्चा क साथ आखिर कब तक अयाय करूँ ।”

“हां, हाँ क्यों नहीं । जाखिर तुम्हारा लोगा का ही तो सबक हूँ ।” ऐसा कहकर घनश्याम न बड़ी की भीतरी जेब से नोटा की गड्डी निकाली और उसे गिनकर चमरू से बोला—“ये लो पचास रुपये व रुपये । पाँच रुपये इस महीने का ब्याज काट लिया है । ठीक है न । गिन लो-गिन लो ।”

चमरू ने चुपचाप पैसे लेकर बड़ी की जब में डाल दिये । घनश्याम ने उसको सरफ देखकर पूछा—

“चमरू अब तो तुम्हारा वच्चे भी बड़े हो गये होंगे ?”
 “हां, काफी बड़ हो गये हैं ।” चमरू ने निराश से जवाब दिया ।
 और मुनिया कितने साल की हो गई है ?”

‘ने कुत्त ! उठा ने अपन पमे । और मत कर मेरा छिस्ताब । उसे भी डकार जा ।’

घनश्याम टुकुर टुकुर चम-को देव रहा था । चम-ने जैम ही चलने के लिये पग आगे बढ़ाया, उसे भोपड़ी म बाट जोड़ती पत्नी और पांच बच्चा को आशावित्त आश्व धरन लगी । उसने ही उन सबकी नींद हराम कर दी थी— ज्यादा बीडिया बनवा बनवाकर । ज्यादा पम और कपडा का तालच भी तो उसन ही उह दिया था । कहा स खिनायेगा उह रोटी और कहा म आरगा उनका कपडा । चमरू जुलाह का अपने कलाकार हाथ कट-नजर आन लग ये ।

अब तो वह समय आ गया था कि पट आत भी खान लगा था । क्या बचा है उन सबके शरीरो म । साबन-सोबन उजका मस्तिष्क विभिन्न ना हान लगा । फिर धीरे म वह पीछे मुड़ा । घनश्याम अभी भी उसकी तरफ देख रहा था । नाट अब भी जमीन पर पड़े यहाँ-वहाँ उठने का प्रयास कर रहे थे । चमरू धीमे स बाला—

‘घनश्याम मालिक, माफ करना । क्रोध मे आ गया था ।’

और इतना कहकर वह फरा पर पड़े नोट बीनन गगा । नोट बीनकर जब वह चलन लगा, तो घनश्याम धीरे स बोल उठा—

‘क्रोध नही करना चाहिये । मैं तो तुम्हारी हालत स परिचित हूँ । इत्तीनिय तुम्हारी सहायता की थी । मुझे तुम्हारे क्रोध का बि-कुल भी बुरा नहीं लगा । जाओ, जाओ—घर मे बच्चे राह दख रह होंगे ।’

चमरू धीरे से नि शब्द आगे बढ गया । घनश्याम के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान तैर गई ।

फटा हुआ श्रावमी

एक लम्बा अरसा गुजर गया है शिवनारायण को गाँव से भाकर शहर में बस टूटा है। जिहानि भी शिवनारायण को ग्रामीण परिवर्तन में देखा और परखा था, उनका मत भी अब शिवनारायण के बारे में बदल गया है। दया देवग व्यक्तिगत था गाँव में उनका। पचास से बर एक मिडिल स्कूल के शिक्षक थे और आँगन भाषा पर उनका अच्छा-सा प्रभाव था। ग्रामीण और कस्बाई विद्यार्थियों को उहाने सिर्फ आँगन भाषा का ही विद्यादान दिया था। उनका पन्नाय विद्यार्थी की क्या मजाल कि वह गलत भाषा बोलें और लिखें। भाषा मसल का हुआ शिवनारायण की छड़ी में गति आती। विद्यार्थी उम्र समय उनका मार की बातें जितनी भी निदान क्या न करत हों आज उनकी नजर में शिवनारायण के लिये असोमित स्नह और श्रद्धा है। वे मात्र जिस पद पर आँगन भाषा के प्रभाव के कारण जन्म है, उसका पूरा श्रेय शिवनारायण का हाँ जाता है।

दुनिया कितनी भी क्यों न बढ़ गई हो, शिवनारायण की स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है। आखिर जनपद की नौकरों का मधेनू तो नहीं हो सकती। और सन् 60 के आसपास मास्टर की बतन ही कितना मिनता था। मात्र गुजारा के लायक। यह बात सत्य थी कि जमाना सुस्त का था, लेकिन शिवनारायण को न ही सिर्फ अपना छे बच्चे और एक अदद पत्नी का निवाह करना था बल्कि असमय बाल-बलवित हुये अपने मग्नज के चार बच्चों का पालन भी करना था। खूबा बड़े मुश्किल से चला पाता था। कुछ धनिक व्यक्तियों के गधे बच्चों को घोड़ा बनाने का काय भी उनका हाथ में लिया था, लेकिन उससे मिलने वाला पारिवर्त्मिक भी गृहस्थी में घुस जाता था। लोग कहते थे कि शिवनारायण के दशयान ५०० पी० में कुछ जमीन है और शिवनारायण हर वर्ष उस जमीन पर पैदा होने वाली फसल का हिसाब देने दश अवश्य जान थे। लेकिन अटिया बटिया की खेती में क्या हाथ आता होगा उनका—यह कहना

मुश्किल है। सत्य तो यह है कि अटिया-बटिया की काश्तकारी की स्थिति शहर की रडी स भी बदतर होती है।

यदि आज के जमाने के किसी भी आदमी के पास शिवनारायण जैसी जिम्मेदारियाँ होती, तो वह निश्चित ही या तो भगोड़ा हो गया होता या फिर टी० बी० या ब्लड प्रेशर का मरीज। लेकिन बाहरे शिवनारायण! क्या मुम्बई से जिदगी जी, बच्चे पाल और ठस्मे स दिन काट-यह सन कइयो को हमेशा अविस्मरणीय रहेगा। इस सबसे बावजूद भी उस जमाने में शिवनारायण के पहिनावे में एक विशेषता रहती थी। सफेद भवक मलमल की धानी पर सिर्फ सफेद या कासा का पीताम्बरी कुत्ता उनका प्रमुख पहिनावा था। उसके ऊपर गाधी टोपी और पैरो में टूक के बेकार टायरो की बनी चप्पल हाती थी। बशभूषा साधारण होने के बाद भी उनके चेहरे को चमक और उस पर झलकता आत्म-विश्वास उनकी गरिमा में और भी चार चांद लगा देता था। घर से क्या पूरे मुहल्ले की बहुये बिदा बहर और धूषट के बाहर नहीं निकल सकती थी। बड़ी कठिनाइयों से उ होने बच्चों को पढाया था किन्तु ब सीमित आय के अवरोध से प्रतिभासम्पन्न हान के बाद भी ज्यादा पनप नहीं पाय थे। बडा लडका मैट्रिक करके शहर की तहसीली में बाबू हो गया और उसमें छोटा पूड आफिस में लिपिक। जनपद की नौकरी से सेवा निवृत्ति के बाद शिवनारायण कस्बे से शहर आकर बड और छोटे लडका के साथ रहे लग थे। जनपद में उनकी कोई पेशान नहीं बाधी और फड का पैसा इतना कम मिला कि रिटायरमेंट के बाद बच्चा पर रोव जमाना संभव नहीं था। बड़ी जी-हुजुरी के बाद लडकी का ब्याह कर पाय थे।

शहर के तीन कमरे के मकान में उनके लिये कोई निवारित स्थान नहीं था। एक कमरा किचिन में परिवर्तित हो गया था, जहाँ करीब-करीब रात दिन बुरादे की सिगडी जलती रहती थी। शेष दो कमरे में लडको ने बग्गा कर लिया था। शिवनारायण के बच्चे उनके अनुज के पास रह कर शिक्षा पा रहे थे-कस्बे में ही रहकर। सामने के कमरे के पास बनी परछी में उनका सारा समय बीत जाता था। बडा गटपटा लगता था उन्हें। बहुये भी थाड़ी अशिष्ट

हां गई थी। गांव में किये जान वाला परदा अब विलीन हो गया था और उनकी बहुत-बहुत सामन भी खुले सिर रहन लगी थी। बूढ़ों को नाम से बुलाया जान लगा था। पहल-पहल उनमें इसका विरोध किया था, लेकिन लड़कों पर आश्रित रहने के कारण उनमें झुंझुं सुनते-सुनते समझौता कर लिया। अब कोई भला आदमी उनमें अंत को फुरेद देता था, तो वे बच्चों के समान रो पड़ते थे। कह उठते थे 'बटा पता नहीं वैसा जमाना आ गया है। मान इतना सब कुछ आज आडवर हा गया है। अब तो भगवान उठा ले तो ही अच्छा है।' लेकिन गरीब और दुखी की मौत जल्दी नहीं आती। कुडर-कुडर कर जीना पड़ता है और मौत भी किशता का लालच देती हुई आती जाती रहती है।

* * *

पिछले वक जब उनकी अमा गिनी का देहा त हुआ, तो शिवनारायण के पास दुख-मुख की बातें करने का साधन ही समाप्त हो गया। लड़के अपने-अपने कामों में मस्त थे और बहुआस दूरी रखना साकाचार था। शिवनारायण भी अपने आप में सिमट गये। नाती-नतिनिया के साथ पटाट के माध्यम से बंधे रहना चाहते थे, लेकिन नाती-नतिनिया बड़ बसहूर थे। पढ़ने में वे बोसा दूर भागते थे। शिवनारायण उन्हें किसी रूप में स्वयं से न बांध पाये। पुरान दिनों की यादें उनकी तनहाइया में तागा होने लगती थी और वे उस जमाने के विद्यार्थियों को याद करके आँखें तर करने रहने लगे थे।

उम्र के विकास के साथ-साथ शिवनारायण की स्थिति घर में अजनबी सी हान लगी थी। लड़का का व्यवहार कुछ इस प्रकार का हो गया था कि वे महमूस करन लगे थे कि सब शिवनारायण का क्रमिक मौत का इतजार कर रहे हैं। उनका दृष्टिकोण और व्यवहार नितान्त आर्थिक हो गया था। जरा-जरा सी बातों पर अब न ही सिर्फ लड़के धीरे-धीरे भुभुका उठती थी, बल्कि नाती-नतिनियों का व्यवहार भी आधुनिकता का पुट पकड़ता जा रहा था।

* * *

शिव नारायण मेरे दूर के रिश्तेदार लगते हैं। मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी होने के कारण मेरी पत्नी अतिथि-सत्कार का भारतीय दृष्टिकोण व्यवहार में

कायान्वित करती रहती ह। क्या मजाल कि मरे घर में कोर्ट भी बिना लाये-पिय चला जाये। पारिवारिक वातावरण काफी सुखद है। अह का हमने करीब-परोप दफन कर दिया ह। शिवनारायण घर का चक्कर हफ्त दो हफते में लगा ही लिया करत ह। उनकी दिनचर्या अब बड़ी अजीब सी हो गइ है। मुर्गे की नाग क कुछ ही दर बाद वे घर छाट देते ह और किसी का नहीं पता कि कब घर पहुँचते है। घर आते ही स्वयंभव कामो में हाथ बँटाने लगत थे। जबकि मरी पत्नी उह हमेशा मना करती रहती थी। उह कोर्ट जानच नहीं था। लालच था तो सिफ इतना कि कोर्ट बँठकर उनका दुखड़ा सुन ले। और इतनी पुरस्त आज के जमाने में किसका रखी ह। आफिस जाने के पहिन दैनिक कार्यों में बाद में पास काफी समय रहता है। मन तो मरा भी नहीं होता था कि शिवनारायण की टूट की बातों, लटका का व्यवहार, नय जमान की घुराइया और पुराने जमाने की अच्छी बातों का सुनू, नकिन शिवनारायण की जाखा में तरता अनुग्रह में हाठ सी देता था और म मीन भाव से हँकार भरते हुय शिवनारायण की बातों का लुत्फ उठाने लगता था। कितना सुख-सतोप मिलता था शिवनारायण का यह सत्र मुनाकर, इसका चलान नहीं किया जा सकता। आनंद क भावों को मन जितनी द्रुत गति से ग्राह्य कर लेता है कलम उसे लिपिवद्ध नहीं कर सकती।

यह मिनसिला काफी अरसे से चना आ रहा था। लडकों के व्यवहार को कहानी और भी यत्रणामय हो गई थी और शिवनारायण का अंत और भी दद पूण। लेकिन सत्र कुछ चलता जा रहा था—बिना किसी व्यवधान क। रोज सुबह हाती थी और रोज शाम हाती थी। प्रवृत्ति विकासरत थी। शिवनारायण का घर आता थव हम लोगों को भी अच्छा लगने लगा था। जब कभी वे निधारित दिना पर नहीं आते, मन मलिन हो उठता और रह-रहकर उनकी याद तडपा खालती। प्रवृत्ति बड़ी निष्पूर ह। अपना काम बड़ी बारीकी और मुस्तैदी में करती है—अथ और स्वाथ से परे मानवीय सम्बन्धों की रचना में। इस क्षेत्र में उसका काय बेमिसाल ह, अद्वितीय है। म और मेरी पत्नी प्रवृत्ति को इस मार के शिकार हो गय थे।

इसी दौरान पत्नी मायके चली गई थी और मैं कुछ अनचाह कामों में व्यस्त हो गया था। शिवनारायण का आना भी कम हो गया। लेकिन व्यक्तिगत व्यस्तता के कारण शिवनारायण से मिलने उसका घर न जा सका। इस तरह करीब डेढ़ माह गुजर गया। शिवनारायण को देखने की आस लिए मैं इच्छा पूरी ना कर पाया। पत्नी भी मायके-प्रवास से वापिस आ गई। बात ही शिवनारायण के बारे में पूछा। मैंने जब अनभिज्ञता जाहिर की तो वह बरस पड़ी लेकिन अपनी व्यस्तता की कोई सफाई मैं न दे सका।

*

*

*

करीब पंद्रह दिन बाद शिवनारायण घर आया। पहले से काफी भटक गया था। चेहरा काफी मलिन हो गया था। बपड़े भी पहिल से ज्यादा मैले लग रहे थे। लगता था कि अंदर कुछ पिघल रहा है और वह किसी भी समय आत्मोपदा के आघात में लावा के समान फूट पड़ेगा। मैंने छेड़ना अनुचित समझा। लेकिन पत्नी पूछ ही बैठी—“बाबूजी! इतने दिन कहा रह ?” हम लोग शिवनारायण को बाबूजी ही कहते थे।

‘क्या बताऊ बिटिया! बीमार हो गया था। साचा तुम लो।। को खबर कर दूँ लेकिन घर में कोई तैयार ही नहीं हुआ बीमारी को खबर पहुँचाने के लिये। लडके कहने लगे कौन से मर रहे हो, जो सब को बुलाकर परेशान किया जाये। बुखार ही तो आया है।—सो बिटिया, मन मारकर छिटिया पर ही पडा रहा।’ शिवनारायण ने दुःख भरी श्वास लेते हुए कहा। हमने स्वयं को दोषी मानकर सिर नीचा कर लिया था। पत्नी ने कुछ सोच-समझकर कहा, “बाबूजी! आप कुछ दिन यही रह जाइय। दिल बहल जायेगा। और फिर बिटिया का जन्मदिन भी आ रहा है चार-दो माह बाद। हम सब मिलकर मनावेंगे।’

‘एस भाग्य कहा बिटिया! घर से बाहर लडके भेजना नहीं चाहत और रोज मेरे मरने का इतजार करत हैं। एसा लगता है पिछले जन्म के पापों का बोझ ढो रहा हूँ। देखो कब तक शरीर चलता है।’

बाबूजी आप कोई समाजसेवी संस्था ज्वाइन कर लीजियेगा। समय भी कट जावेगा और मन का दुख भी हल्का हो जावेगा।’ मैंने सुझाव दिया।

“लेकिन बेटा, अब उम्र ही कहा रही है।” शिवनारायण हताशा स बोले। मुझे आफिस की दर हो रही थी। मैं तैयार होकर निकल पड़ा। शिवनारायण घर पर ही रहे।

*

*

*

एक दिन अचानक मुह अघेर ही शिवनारायण घर आ गये। कुछ प्रसन्न नजर आ रहे थे। ऐसा परिवर्तन लक्ष्य करके हम भी खुश हो गये। मुरभाया पूल अचानक जीवत हो उठे तो कितनी दुशी होती है यत्त नहीं किया जा सकता। पत्नी ने शिवनारायण से पूछा—

“बाबूजी। सब ठीक तो है। बड खुश दिख रहे है आप। क्या कही की लाटरी खुल गई ?”

हा, लाटरी खुली ही समझो। बिटिया तुम लोगो का शुक्रिया अदा करने आया हूँ।” शिवनारायण ने हस स कहा।

“किस बात का ?” मैंने पूछा।

‘मैने एक सस्था ज्वाइन कर ली है। लडके-लडकियो वं विवाह मे यह सस्था काय करती है। बच्चो को पढाती भी है और न जाने क्या-क्या करती है। मैं तो धय हो गया। समय भी कट जाता है और मन भी प्रसन्न रहता है।’

“यह तो बडी खुशी की बात है।” हम दोनो एक साथ कह उठे।

‘इसी बात पर एक-एक चाय हो जाये।’ मैंन मुभाव रखा।

“बिटिया, चाय तो मैं बनाऊँगा आज तुम लोगो क लिय।” शिवनारायण ने आदेशात्मक स्वर म कहा। हमन उनके सुख मे देखल देना उचित नहीं समझा। शिवनारायण भानन-फानन चाय बना लाये। चाय की चुरिक्या व बीच शिवनारायण न कहा, “बेटा एक अनुरोध है। हमारी सस्था दान पर चलती है। हम लोग चंदा इकट्ठा करते है और उसी के सहारे छोटी मोटी गतिविधियाँ करते रहते है। मैं भी तुम लोगो से सहायता चाहता हूँ।”

“कितना चंदा लेती है आपकी सस्था।” मैंन पूछा।

“बहुत थोडा। मात्र पाच रुपय।”

“लेकिन इतन थोडे से पैसे से क्या होता होगा ?”

सभी लोग धाडा-धाडा पैसा उकड़ा करते हैं। मैंने भी दस-बाइस लोग मेरे पास आकर बैठ कर रखी है। सभी न सहायता का आश्वासन दिया है।”

‘तब फिर हमस भी पैसा ले लीजिये। मायुरी! बाजूजी को पांच रुपया दे दो।’ मायुरी उठकर अंदर चली गई। शिवनारायण का हृदय चहरा और भी दरीप्यमान हो गया।

* * *

उसके बाद शिवनारायण हमेशा पाँच-छह तारीख को पांच रुपया चरने के लिए आता था। उनका प्रपन्न मुल और यवहार में वृद्धि आ रही थी। शिवनारायण का आकांक्षित रूप ही बन गया। इसी बीच मेरी पत्नी भी स्कूल जाने लगी। पत्नी को दाहल करवाकर करवाकर फ्री हो गई। मैंने पत्नी को मुझसे कहा कि अब तुम भी शिवनारायण की संस्था में जाकर सन, सन में हाथ बढ़ा दिया करो। समय भी बढ़ जावेगा और दुनियादारी में अनुभव भी लक्षित करने लगोगी। पत्नी नैयार हो गई। शिवनारायण से बात भर करनी थी।

इसी बीच जब एक दिन शिवनारायण चरने के लिए आया तो मैंने मन की इच्छा शिवनारायण को बता दी। उनका चेहरा एकदम से उतरने लगा। कारण कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन शिवनारायण ने स्वयं को समझ लिया। फिर और से बोलने ‘विदिया का जखर ले जाऊँगा अपनी संस्था में। जरा समय तो आने दो।’ इस बात को कह कर दो माह गुजर गये। पत्नी भी काफी व्यस्त हो गई थी—गृहकार्यों में। दोहर को उसने एक माह का अंतराल वाला फुड प्रिन्टरवशन का काम जवाब देकर लिया था। वह भी इसी माह खत्म होने वाला था। उसकी इच्छा हो रही थी कि अगले माह से शिवनारायण की संस्था में जाऊँगी। इसी उद्देश्य के कारण एक दिन शिवनारायण गजदरम हो घर आ पहुँचे। मैं तो कम मेरी पत्नी ज्यादा हर्षित हो उठी। पत्नी पहले से ही उठकर चाय बना लाई। शिवनारायण बैठकर यहाँ-वहाँ की बातें करने लगे। मैं बोली ‘बाजूजी! आज मायुरी को संस्था में ले जाइये। आपको सहायता करना चाहनी है। समय भी बढ़ जावेगा। फुड

प्रिजरवशन का काम कल खत्म हो गया है। काफी जिद कर रही थी कि आपका सात्त्विक में रहकर कुछ सीख ले।”

शिवनारायण चुप थे। माधुरी ज्यादा ही उत्साहवर्धक थी। इच्छा न दबा सकी और पृथ्वी बैठी, माधुरी कितने बजे तैयार रहूँ साथ में चलने में गिर। शिवनारायण अब भी चुप थे। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात है। माधुरी के बाप वार में अनुरोध पर शिवनारायण रो पड़े। मैं भी भीचकवा हो गया। शिवनारायण धीरे-धीरे सिर नीचे लगे और फिर बान, बिटिया में कोई सस्था ज्वारन नहीं की है। तुम लोग स पैसा ल जाकर मैं स्वयं पर खर्च करता था। जब पैसा खत नहीं थे। पत्नी के दहावसान के बाद बहुतों से पैसा मांग नहीं सकता था। और फिर थोड़े बहुत व्यक्तिगत खर्चें तो लग ही रहती हैं। उसलिये अब लोग का धोखा खबर पैसा खट्टा करता रहता था। मैं काफी शर्मिंदार हूँ। मुझे माफ कर दो।” ऐसा कहकर शिवनारायण फिर फफक-फफक कर रोने लगे। हम लोग बड़ी बठिनाइ से चुप करा पाये। पत्नी मोन भाव में शिवनारायण की आर देख रही थी जोर शिवनारायण सिर नीचा किया स्वयं में खोय से नजर आ रहा था। मैं पत्नी से कहा, माधुरी, माधुरी को दस रुपये चंदा का दंदा। अब पांच की जगह दस रुपये चंदा द दिया करो। इसके बिना सस्था नहीं चल सकती।” माधुरी मंत्रमुग्ध सी मरी उदात्ता को प्रशंसात्मक नजरों से देखकर रुठी हो गई और आदर में कमर में चली गई। शिवनारायण निरतज हो गये। मैं बिरकुत उनके पास चला गया और सुट गया। फिर बान में पुसफुसाकर धार से बाना बाधुरी। नस्था की चर्चा अब किसी में मत कीजियगा। अथवा लोग आपको यथा समझ लगे।

शिवनारायण मूक भाव से मेरी ओर देखते गये। आभार की अथवा भयंकर उनकी आंखों में स्पष्ट नजर आ रही थी। इतने में ही माधुरी पन खबर आ गई और अपने हाथ में दस रुपये बाधुरी को घमा दिया। फिर मैं बान में कुछ बोलकर शिवनारायण से बोली, ‘बाधुरी परसो बच्ची का नामदि है। बान आ जाइयगा। थोड़ा हाथ बटा लीजियगा।’

‘बिटिया! अब मैं किस मुह से तुम लोग के पास आऊँ।’

“बाबूजी, अवश्य आइयेगा। अवया हम समझेंगे कि आप बुरा मान गये।
‘तब जरूर आऊंगा।’”

* * *

दूसरे दिन उषा की अरुणिमा क हटते ही शिवनारायण घर पहुँच गये। दिन भर खुशी-खुशी माधुरी के साथ लगे काम कराते रह। शाम जब मैं बाज़ार में घर लौटा ता शिवनारायण को व्यस्त और खुश पाकर बहुत प्रसन्न हो गया। फिर वे धीरे से मेर पास आकर बोल, बेटा माधुरी का हाथ बटाना। मैं बा रहा हूँ। कल शाम जम-दिन के समय पहुँचूंगा।” शिवनारायण जैसे ही घर जान लगे, माधुरी ने रोक लिया। दौड़ी-दौड़ी अदर गई और पकेट उठा लाई। शिवनारायण क कान में कुछ फुसफुसाकर उसने वह पकेट उस थमा दिया। शिवनारायण न विना कुछ कहे वह पकेट रख लिया और चुपचाप चले गये। मैंने पत्नी स उत्सुकता वश पूछा “पैकट में क्या था ?”

“तुम्हार काम की चीज नहीं थी।” पत्नी न कहा और अदर चनी गई।

मैं ‘अच्छा-अच्छा’ कहने दृय दैनिक कार्यों में लग गया।

* * *

बच्ची के जमादन की शाम बड़ी रङ्गीन थी। घर के चतुर्दिक वन बाग में रङ्ग-विरङ्गी बिजलिया चमचमा रही थी। अतिथियों का जल्था खानपान में व्यस्त था, लेकिन शिवनारायण अभी तक नहीं आये थे। हमारी आखें रह-रहकर भौड में शिवनारायण को तलाश रही थी। लेकिन उनकी चमक अभी भी क्षीण थी। ती बजे रात जब करीब-करीब सभी आमत्रित विद्रा हो गये और हम बगीचे में ईंजी चेयर पर बैठे बच्ची से बतिया रहे थे, दूर से शिवनारायण आते दिखाई दिये। उनकी कनक में ही हम प्रसन्न हो गये। आते ही उसने बच्ची को उठा लिया और बेतहाशा चूमने लग।

आज शिवनारायण अपन पुराने लिवास में थे। सफेद भक्क मलमल की धोती के ऊपर कोस का कुरता चमचमा रहा था। गाधी टोपी कई दिनों के बाद शिवनारायण के सिर पर दिखी थी। उसने धीरे से एक पैकट बच्ची को थमा दिया। नासमझ बच्ची उम पाकर खुश हो गई। लेकिन हम पूछ बैठे—

‘बाबूजी ! काफी देर लगा दी । हमारी ता आँखे ही पथरा गइ—प्रतीक्षा करते-करत । वहाँ चले गये थे आप ?’

कही नहीं गया था । स्वय ही देर स आया जिसस वि बच्ची का जी भर प्यार कर सकू और तुम लोगो से कुछ बात ।”

हम चुप हो गये । बच्ची न पैकेट खाल दिया था और उत्तम स लान रङ्ग की एक फ्राक निकलकर बच्ची के हाथ मे पहुँच गई थी । बच्ची चिल्ला उठी थी—“पापा पापा बाबूजी कितनी सुंदर फ्राक लाय ह । हम भी दखकर आश्चय चकित हो गय । परंतु माधुरी बोल उठी—“बाबूजी ! इतनी महंगी फ्राँक क्यों लाय ? मैंने आपको नजराने के साथ नहीं बुलाया था ?”

“बेटी, यह कहना तेरा अधिकार नहीं है । एक छोटा सा अनुरोध और है । टालना नहीं—नहीं ता दिल टूट जावेगा ।”

रात और भी गहरी होती जा रही थी और-और भी शांत ।

शिवनारायण न कुरते की जेब स एक डिविया निकाली और माधुरी के हाथ मे देते हुये बोन—“डिविया ! यह मैं तुम्हारे लिय लाया हूँ । खुशी से स्वीकार करना । मरत वक्त पत्नी ने दकर कहा था कि यह अब मेरी अमानत है । मेरे बाद जिमे उचित समझो द देना । लेकिन सुपात्र को ही देना अयया मेरी आत्मा दुखी हा जावगी । मैंने आज माधुरी का सुपात्र समझा इसलिय पत्नी की इच्छा का सम्मान करत हुय वह को द रहा हूँ ।” शिवनारायण की आँखो मे आँसू बहन तग थे । मैंने माधुरी स कहा—“खोचो दखो क्या है ?” माधुरी ने डिविया खोली तो उसमे सोने के चार कगन चमक रहे थे । हम दोनो देखकर मूक से हो गय । माधुरी बोली—

‘बाबूजी यह दया किया आपने । आपन अपनी बहुओ का हक मुझे क्या दे दिया ।”

‘बेटी वह दया होती है, यह मैं ही समझ सकता हूँ । तुम नहीं ।”

मैं बीच मे ही बोल पडा “बाबूजी । इह आप रखियेगा । बेवक्त काम आवेगे । काफी कीमत है इनकी ।”

“काफी कीमत अवश्य है लेकिन आत्मीयता की कीमत न कम । डम अस्वाकार करके मरी आत्मा दुःखी न करा ।” शिवनारायण ने कहा और बच्ची को उठाकर फिर बेतहाशा चूमन लग । बच्ची ने अब तक लाल फ्रॉक पहिन ली था । कल आऊगा’ कहकर शिवनारायण चल दिय । माधुरी न कमन पहिन लिय थे । एक नजर मुझ पर टालकर बच्ची को उठा लिया और लाड करने लगी । मैं शा त सा सब कुछ दल रहा था । सारा परिवश आमीयता स पटा दिखाई दे रहा था । अचानक एक शका दिमाग म कौधी । मैं माधुरी से पूछ बैठा—

“माधुरी, तुमन बाबूजी को पैक्ट म क्या दिया था ?”

“जो कपटे वे आज पहिनकर भाय थे वा ।”

“क्या ?”

‘ हा ।’ और इतना कहकर मरी पत्नी मुझम चिपककर पुसपुसा कर रोन लग ।

उद्घाटन

मन्त्री वं आगमन की खबर सुनते ही पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट की गाड़ियाँ अपनी गति बन्द करने वगैरे सड़क से दौटने लगी थी, गरज म बराम करती गाड़ियाँ को भी ठोक-पीट कर काम लायक बना दिया गया था डिपार्टमेंट व चीफ इंजीनियर की इच्छा थी कि भरमू गाव की पाच हजार जनसंख्या वाले इलाक़े में निर्मित होने वाली पानी की टंकी का उद्घाटन मन्त्री के कर-कमला द्वारा ही हो, वैसे उनके डिपार्टमेंट व मन्त्री काफी औपचारिक व मन्त्रिमण्डल में ध्यान व वाद उठाने कुछ नयी प्रथाएँ कायम की थी, उद्घाटन आदि जैसी औपचारिकताओं से उठाने स्वयं को विलग रखा था, शायद यह उनकी कम उम्र का ही नतीजा था, लेकिन उनका विचारों व कारण उनका सहयोगियों में काफी खराबी मच गयी थी। लेकिन जनता और डिपार्टमेंट व अनुरोध के व कायल व अखिर सामाजिक प्रतिष्ठा बना भाषणा के बन्नी बनी है ? बुधवार सहयोगिया न उह समझाया था, "राजा को अपनी नीतियाँ की घोषणा जनता व बीच ही करनी चाहिए, कुर्सी पर बैठ कर फाइला का निपटान से कुछ नहीं होन वाला है फाइला व निपटान व लिए तो सरकार न मक़ोटरी रख ही छोड़ है।"

धीरे-धीरे बात उनकी समझ में आ गयी थी और अपनी औपचारिकताओं का उन्होंने थोड़ी-थोड़ी डींग देनी प्रारम्भ कर दी थी। पिछले माह ही उन्होंने भागमभाग करके दस विशिष्ट याजनाओं का विधिवत् उद्घाटन किया था। पपरो में उनकी तसवीरे छपा थी। और उनका हितैषिया व अनुसार उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा द्रिगुणित हो गयी थी उन साठ याजना का श्रेय अपना रूप में चीफ इंजीनियर ठाकुर को गया था और लोगो का म्याल था कि ठाकुर को इज्जत मन्त्री जी की नजर में बन्द गयी थी। वैसे भी ठाकुर रिटायरमेंट की बगार पर पढ़े गये थे।

जब ठाकुर ने डिपार्टमेंट ज्वाइन किया था तो लोग उसे मूंगफली बचने वाला डिपार्टमेंट के नाम से सम्बोधित करते थे। लेकिन ठाकुर कर भी क्या कर सकते थे। बड़ी मुश्किल से टिग्री पा सब-य और फिर डिपार्टमेंट की अतिस्टैंट इंजीनियरी। उनके आय समकक्षी सिंचाई विभाग में जाकर बहुत पानी के समान पैसा बटोर रहे थे और व डिपार्टमेंट में वित्तीय मूंगफलियों के छिलके भर बीन रहे थे। छिलके बीनते-बीनते यदा-कदा कोई दाना हाथ लग जाता और फिर वे उसे ही पाकर स्वयं को धन्य मान लत परंतु बुजुर्गों की कहावते कही बमानी साबित हुई हैं? समय के साथ तो घूरे के भी दिन बहुरते हैं, पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट में कुछ ही दिनों में पम्प का प्रवाह बढ गया था। सड़ा पानी पीकर जिंदा रहने वाला को स्वच्छ शीतल जल प्रदान करने की योजनाएँ बनी मूंगफली का दाना स्वर्ण परती से मड गमा, ठाकुर पदोन्नति पाते-पाते चौफ इंजीनियर बन गये लेकिन मूंगफली खाते-खाते उनका हाजमा इतना अच्छा हो गया था कि उसके बिना उनका काम ही नहीं चलता था। अगले माह ही उनका साथ इष्ट मूंगफली दान में छूटने वाला था। वे चाहते थे, मन्त्री जी की वृत्ता में कुछ एक्सपर्टिजन मिल जाये तो लाने जाने वही उम्र के लिए इतनी मूंगफलियाँ इकट्ठी कर लें कि फिर बनती उम्र में हाजमा न बिगड़े।

सोच-समझ कर युद्ध-स्तर पर उन्होंने अपनी वाप-प्रतिष्ठा का श्री प्रदान करने के लिए उद्घाटनों का विवरण प्रारम्भ कराया, मन्त्री जी से मिले, मान-मनोबल की, और फिर मन्त्री जी ने उनकी योजनाओं व विधिवत उद्घाटन की स्वीकृति प्रदान कर दी। लोग कहते थे कि ठाकुर ने मूंगफली व कुछ दान मन्त्री जी की भोली में भी डाल दिए थे।

को जगह को साफ किया गया और मंत्री जी द्वारा किये जाने वाले उद्घाटन का समारंभ पत्थर वाला शिलालेख भी जड़ दिया गया। सब-इंजीनियर वसंत कुमार को सारे इन्तजाम का कायभार सौंप दिया गया था। वसंत कुमार वस्तुशुद्धि सारे काम करा पाया। नया-नया लडका था। काम का अनुभव कम था। पैसे की बफरा-तफरी का भी ज्यादा ज्ञान नहीं था। उसकी साइट पर पहली बार मंत्री जी पधारने वाले थे। जब पैसे की कमी पड़ी तो तनस्वाह पूक दी।

काम समाप्त होने पर मंत्री के आगमन के एक दिन पहले ठाकुर फाइलल दस्पवशन के लिए भरमू गये। दरवारी साथ में थे। शिलालेख की ओर देख कर मुह बनाया और चिल्ला पडे, "कौन बदतमोज सब-इंजीनियर है। इस साइट पर?"

"सर, वसन्त कुमार!" एस० डी० आ० करीब-करीब हांपते हुए आये और बोले।

वसंत कुमार की दुबाई मची ता पता चला कि वह सबक चिण खान-पीने का इतजाम करने गया है। ठाकुर को ता नाराजगी उतारनी थी। एस० डी० ओ० को पास बुलाया और कहा, "आपन कभी मंत्री का उद्घाटन देखा है?"

"खूब दखे हैं सर।" एस० डी० ओ० ने मुस्कुरा कर कहा।

"क्या खाक दखे हैं। इस शिलालेख के उपर ये क्या सडियन परदा लगा रखा है। क्या एम ही परदे तगाये जान ह? किन्तनी धार मैंन कहा है कि मरे बडर में काम पुरता ढाना चाहिए। लेकिन पता नहीं, तुम लोग क्या सोचते हो, बास्तिर रिटायर करा कर ही छोडोगे।"

सर, भाफी चाहता हूँ कुछ गलती हो गई हो ता वृपया बताइए।"

'मिस्टर सिन्हा, क्या यह सब मुझ वताना पडेगा?' ठाकुर ने बायपालन मंत्री को सम्बोधित किया। मिस्टर सिन्हा सामने धाकर बोना, "सर, आप ग्म्ट हाउस में चलिए, बाकी सब गव ह। आप थोडा चाराम करके खाना खाइए, तब तब मैं सब टीव करा लूंगा।'

ठाकुर मन्वत उठ कर जीप में बैठे जो उन्हें छ जाकर ग्म्टहाउस छोड

आयी। सिन्हा साइट पर हा रह गया। उसन एस० डी० आ० को ठाकुर का सेवा के लिए रस्टहाउस भज दिया और बसत कुमार को बुलावा भेजा। बसत कुमार को पहल ही घटना की सूचना मिल गयी थी। वह भागा-भागा आया। सिन्हा क जामने हकोगता सा बोला, सर, बिकुल नया हूँ अनुभव नहीं ह मुझे उद्घाटन-वायक्रमा को धरुज करन का।”

काई बात नहीं तू क्या चिन्तित है। इज सात ठकुरवा को रिटायर नहीं करवाया ता सिन्हा का बच्चा नहीं। क्या सनभक्ता है अपन-आप को।’

‘सर आप हुजुम कर दया करना है?’

मुना ध्यान में, पहल तो तुम नपेद जिक का बडियागता कपज लाया और उसका परदा बनवा कर इज शिनाखल पर लटकवा दा। फिर डटे मगवा कर शिनाखल की ओर रास्ता बना दो। गाव वालो क यहा म पूता क जमले नाकर सारी साइट सजा दो।

‘लेकिन सर तन सान कोड़े सहयोग नहीं करत हैं। कहत र उह पानी स मत त्व हूँ—मत्री स नहीं व ता यहा तक कह रहे थ कि फवशन म भा नहीं आयेगे।’

“सब आयेगे, तुम चिन्ता मत करा। सरपच का मन् पास भेज देना। मैं सब ठीक कर लूंगा। कत्री और कटोर का इतजाम कर लिया?”

‘जी ह’।’

‘वाहे की कत्री नाय हा।’

‘स्टील को।’

‘स्टील स काम नहीं चलगा। ठाकुर साहब क घर स चाली की कत्री लानी हागे बच्चा म स्वयं नता आऊंगा उनके घर स तुमने कटोरा ता बच्चा वाता मंगया है न।’

‘हां सर, बच्चा वाला है।’

‘टॉविल मगा लिया है? रोडवाला है न?’

“जी सर।

‘स्वपाहार क लिए सरपत्र का बोल दिया है?’

‘बोना घा सर, लेकिन वह कहता है, मैं कुछ भी नहीं करूँगा।’

‘खैर छाया, मैं निपट लूँगा उन्मत्त।’

‘मुना ठाकुर साहज हाट पशेट है, जय वे माटर का बटोरा ले कर म नी जी के पास खड हा, तो तुम नी पास म रहना। बडी जन्दी घबरा जात है वे, जैम ही हाय कपि, बटांग मभान जैना। अच्छा जाया सरपच को बुला लाओ।’ वनत कुमार जम ही चलन लगा। सिंहा फिर बोना, ‘वमत कुमार मुना। खान-पीन का उत्तम बर निया ह न। खानसामा को राव उमभा निया ह न? और ही, पीन का इतजाम रखा है या नहीं? मन्त्री जी तो लन नहा है—किन उनके साथ जाय चपरगट्ट लो” टूट पट ग खाने और पीन पर। तुम तरान म भना करना घरराना नहीं।’

‘तो सर, अब समझ गया।’

‘अच्छा जाओ तुम। जन्दी म सरपञ्च को बुना लाओ।’

वनत कुमार व खान क बाद सिन्हा न सारी साइट का मुआइना किया। उन सब इतजाम ठीक ही गगा। इवत मूरख का इसस ज्यादा कौन नमस्ते करगा?

थाजी दर बाद वनत कुमार सरपञ्च को बुना नाया। सपेद भक्त काच लगी जाती और कुरता पहने वह बुडडा सरपच बडा ही घामड व्यक्ति नजर आया। सिंहा ने उठ कर नमस्न की। फिर थागा, “आए सरपञ्च जी। माफ करना, मैं स्वय ही खाना मापक पास, नकिन आप देख ता रहे ह कि कितनी परेशानियाँ है सब ठीक-ठीक ता ह न मुना था—स बार आप भी इलखान की तैयारी कर रहे हैं? अच्छा ही है। जब तक नीचे तबके का खादमी उपर नहीं आयेगा दश की उन्नति नहीं होगी आइए-आइए, बैठिए न।”

‘आपका कैसे पता चला कि इन्वजन लडन वाला है।’

‘अर भाइ, आखिर आप सब ही के तो प्रेक् है—हम-हम कैसे पता नहीं चरेगा।’

‘कहिए, कैसे याद किया?’

“आपस पाडा सहयाग चाहिए । मिन वसंत कुमार का वोन दिया है । टकी वनन पर पानी की लाइन सपस पहल आपन घर ही जायेगी ।”

“लेकिन लाइन लगवाने के लिए पता बिस्तर पास है पब्लिक नक लगवा दीजिए, वा ही काफी होगा ।”

“कैसी बात करत हैं आप सरपञ्च जी । टकी वन और आपन घर नन न लग । आखिर हम लागो का नौकरी करना ह या नही ।”

‘ सरपञ्च सिंहा का मुह दम्प रहा था ।

आप चिंता मत कीजिए । वसंत कुमार सप कर दगा नबिन थाली-सी बिनती है ?’

वालिए आप लाग बड हा चट हैं पटान मे ।

“मन्त्री जी आ रहे हैं पता ही हो । ? पब्लिक जुटानी ह । स्वल्पाहार का आयोजन आपकी पंचायत द्वारा होना चाहिए ।’

‘लोग देख ला दत नही, पञ्चायत क पास कितना पडा रहेगा ।’

‘हैं साहब मैं ला सिफ आयोजन की बात कर रहा हूँ सारा इतजाम हमारा, नाम आपका । आखिर मन्त्री जी का नी तो पता चले कि आपकी पंचायत भी उनका स्वागत कर रही है । हाँ, आप सिफ दो चीजा का इन्तजाम कर लीजिए—बुद्ध दरो कुर्सी बगरह और पब्लिक वेम हम लोग तो सब दख ही रहे ह तो बोलिए, हो जायेगा न सब इतजाम ।’

‘आप कहे और इन्तजाम न हो, कैसी बात कर रह है । आखिर पानी तो चाहिए ही न पीत क लिए आप बिल्कुल बफिकर रहिं— ला फिर मैं चल ?’

‘जरूर-जरूर अर र, लेकिन चाम तो पीत जाइए । वसंत जाओ चाप लकर आओ ।’ वसंत तब तक चुपचाप लडा सिंहा का मुह देख रहा था । आर्डर सुनते ही भागा ।

‘और सरपञ्च जी बुद्ध पूत बाल गमला का इतजाम भी करवा दीजिए ।’

‘सब हो जायगा । क्या-क्या चाहिए वसंत का बता दीजिए आप ।’

जिस दिन मन्त्री जी का भरसू आना था टकी की साइट पर मचा लग

गया। दरम अधनग। उच्च गुञी हृद साइट क नारा आर मडर रह थ। उ ह इसस कोई मतनव नही या कि टकी क्या हानी है, लाग क्या इकटठ हुए है आदि-आदि। उनकी दिनी रवाहिंग या कि मत्री जी का दन—आगिर बेसा होता है? स्तून क पठित जो न उ ह युना रगा था 'मत्री का मतन उहुत बडा आदगी हाता है। सारा दन उञी क सहा' पर चलता है—भगवान क समान। प्रायन, और भजन म भगवान ता मिन सवन ह सविन मत्री नही। बच्चा क मन म एक बडा अइवा पैदा हा गया था।

साइट पर पिछी दरी पर कुछ बुजुगवार लाग वेठ थ। गिना यासवाल पत्यर क पास कुछ कुस्िया रखा थी। गुनाव आर सदाउहार क पून क गमन करीन स जमा दिव गय थ। सामन रण स्टूल पर स्टोन क, बटारा और रङ्गोन कागज म निपटी रोप्य चमकवाओ कत्री रखा था। रत और सीमट मिलाकर कटोर मे मूस ही रन दिव गय थे। परद म गिना यासवाल पत्यर का डंक दिया गया था। परदा उघाइन क लिए रस्ता बाध दी गयी थी। सब कुछ व्यवस्थित था। सिफ मत्री जी क आगमन का छो कर। चार बजे शाम का समय निर्धारित किया गया था।

मत्री जी क साथ चीफ इंजीनियर ठाकुर नत्की थ। दर-सुबर पांच बज तक मत्री जी की गाडी आयी। एक-दा उद्घाटन निपटा कर वे आ रह थ। आत ही दरवारिया म गति आ गयी। मत्री जी जदी-जदी मंच क पास पहुँचे। ठाकुर न अनुरोध करके उ ह बैठाया। सामन बैठी जनता का ठाकुर न दो शब्द कह और फिर मत्री जी स गिना यास करन का अनुरोध किया। तब तक सिंहा न माटर तैयार कर दिया था। सिंहा न ठाकुर को कटोरा धमाया और मत्री जी का चादी की कत्री थमा दी। डोरी खीच कर परदा खोल दिया गया। मत्री जी न जैस ही कत्री स माटर लगाया तानिया बज उठी। दा शब्द बोल कर मत्री जी बैठ गय। सरपंच न स्वपाहार पर आमंत्रित किया। चाय-पानी चला और फिर मत्री जी ठाकुर क साथ रस्टहाउस चल गय। दाण भर में सारी भी दड गयी और गाव क कुत्ते जूठन पर दूट पड। बच्चे 'एसा होता है मत्री' कहत हुए घर वापस चल गय।

रात को सोमरस के साथ सामान्य भोजन एक बर हुआ। लेकिन मन्त्री जी के ट्राइवर का पता नहीं था। मन्त्री के साथ आय चपरगट्टु। न तिनका न बचने दिया। हार की दुट्टाई मची। पता चना, कही पीनर सोया पडा है। वमुश्चिन लाग उस डूढ कर ला पाये। इतने म हा हा मचा कि कुछ लोगो न खाना ही नहीं खाया है। डाक्टर भी एमे लागो म शामिल था। बिना साये गाडी चलाना उसक लिए दुष्कर बाय था। मन्त्री जी के पास भी उडत उडत खबर पहुँच गयी। पुन गान का इतजाम रिया गया। लेकिन इसमें काफी समय लग गया। मन्त्री जी तुरत वापस न गीट पाये। ठाकुर स बोले: 'क्या बाहियात इतजाम है आपर यहां का, कम-न-कम खाना तो पूरा बनवाना था।' ठाकुर को नगा कि उनकी मूगफलो खोखली निवा गया ठे। वगत कुमार का बुला कर डाटा बचारा ब्रवजह की सारी बुडकियाँ मुन कर पी गया। उसकी समझ म नहीं जा रह, था कि गलती कहीं हो गयी है। यदि लोग पीने मे मस्त होकर खाना खाना भूल जाये तो किसका दाप है ?

ठाकुर स्वयं बाहर आया। सबका व्यक्तिगत रूप म पूछ-पूछ कर खाना खिनवाया। तब तक रात के बारह बज चुक थे। ठाकुर न मन्त्री जी से कहा, "सर, आज जाय यही आराम कर लें ता मेरा सौभाग्य होगा।"

जसभव कच भी उद्घाटन है। अभी निकलूंगा।'

'जसी आपकी उच्छा, सर' चलिएगा, गाडी बुलवाता हूँ।'

दूर खडा सिन्हा मन-ही मन मद मद मुस्कुरा रहा था।

मन्त्री जी ठाकुर के साथ निकल गये पीछ पूरा वाफिला चन रहा था। ठाकुर बोला, 'सर, कल ही जाँच करूंगा कि खान म अवस्था कैसे हो गयी? लोग इतना-सा काम नहीं नाना पाये और आपन आशा करते हैं, सब कुछ व्यवस्थित चने। बताइए, कम हो सकता है ?'

है।' मन्त्री जी न बीरे म भपकीवाली मुस से कहा।

'सर, आपका भपकी आ रही है आप आराम कीजिए, मैं सामने बैठ जाता हूँ ?'

'ठीक है।'

एक सप्ताह बाद सिन्हा ने वसंत कुमार को बुला भेजा। बेचारा पहले ही नरसुत था। परमान सुन कर उसने तो होश गुम हो गये। सिन्हा ने एक नजर उस पर डाली। फिर सोचा, बेचारा वच्चा है। चीफ सात्र ने इसके साथ ज्यादाती की है लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ। कुछ सोच कर बोला, “वसंत कुमार जी, तुम्हारी अच्छी सेवा के लिए ठाकुर साहब ने पुरस्कार भेजा है।”

“क्या ?” वसंत कुमार ने पूछा। सिन्हा ने उस एक बंद लिफाफा थमा दिया। वसंत कुमार लिफाफा लेकर जाने लगा तो सिन्हा बोला ‘खोद कर पढ़ लो। अच्छे काम और स्वामिभक्ति का इसमें अच्छा तोहफा कभी न मिलेगा।’ वसंत कुमार ने लिफाफा खोल कर पढ़ा तो उस नीचे की जमीन दलदली नजर आयी। उस सस्पेंड कर दिया गया था। हवचाता सा वह बोला, “सर ! मेरी तो कोई गलती ”

“मैं जानता हूँ। लेकिन ठाकुर साहब को तो एक्सपेक्शन चाहिए था। उन्हें एक्सपेक्शन मिल गया और तुम्हें यह पुरस्कार। मुझे तुमसे पूरी सहानुभूति है नाउ यू कैन गो।”

वसंत कुमार को सिन्हा के चैम्बर से बाहर निकलते ही लगा कि भरसू गाव की टकी फूट गयी है। सारे लोग डूब गये है, और वह वह उस टकी के मलबे के नीचे दबा पड़ा सिर्फ चिरला रहा है। लेकिन कोई उसकी आवाज नहीं सुन रहा है। एक क्षण उसे लगा, वाश, वह मन्त्री जी का द्राइवर होता तो

मोहभग

पूरब मे पौ फटने के कुछ पहिल ही ननरू की नींद छुल गई। नींद क्या खुल गई—नींद रागी ही न थी। वह रात भर उस योजना पर मनन करता रहा था जिसका विरोध उसने कई वास्तुकार साधियो ने किया था। लेकिन ननरू के अंतस में अचानक ही शासकीय नीतियां व फनस्वरूप प्रादुर्भावित आत्म-विश्वास उसे उस विरोध से उधार दिमा करता था। अपनी वाक-पटुता से उसने कई ऐसे वास्तुकारों को अपनी योजना में सम्मिलित करना चाहा था जिनके ऊपर उसे कान्नी विश्वास था। लेकिन वे भी भावी कठिनाइयों का हवाला देकर उससे करीब-करीब फट से गये थे। फिर भी वह 'एवना चनी' की नीति की कारगरता को एक बार आकना अनश्च्य चाहता था।

*

*

*

वह उठकर दिया गया। फिर लौटकर पत्नी अगसिया से लोटे भर चाय बनाने को कहा। उसका सिर्फ एक ही शौक था—सुबह-सुबह लोटा भर चाय पीना—ऐसी चाय जिसमें पत्तियो वार रस घट भर तब धदहन को चुरा-चुरा कर निकाल लिया गया हो। कालू को पूछ पकड़कर हिच की आवाज के साथ उठाया। बड़ा मठठर बैल था वानू—लेकिन था बड़ा ही प्यारा—पूरे गाव में सबसे अनोखा। किसी के पास ऐसा बैल नहीं था जो पूण-रूपण कानग हो। आखिर नोट भी तो सच किये थे उसने उस खरीदन में पूरे चार हजार। किसी की हिम्मत नहीं पड़ी थी कलूआ को खरीदन की। लेकिन उसकी जिद में बात आ गई थी और उस जिद की खातिर अगसिया की हसली आदि दाव पर चढ़ गई थी। कालू फिर भी नहीं उठा था। उसने चाबुक निकाली और बेमन से बालू के शरीर पर जड़ दी। धा-धो की आवाज के साथ कालू ऐसे उठ बैठा जैसे कि सोते घोर को किसी ने जगा दिया हो। उठते ही कालू ने

प्रतिशोषात्मक रूप से कल ही गोबर स निप और छई की ढिग लगे आगन मे गोबर छितरा दिया । ननकू की गुम्ता आ गया और वह जुआरी उठाते-उठाते बोना—‘हरामी की जात । रहा न तू साला बिल्कुल बवकूफ । बित्तनी बार समझाया कि आदमी बनने की बौशिश मत कर । अपनी बीबात म ही रह । नेकिन तू है कि समझता ही नहीं । अर जो वाम तू करता है मुझे अपनी ऐठ दिखान के लिए, दया व सुभ जैस चार हजार वाले जानवर का शोभा देता है ? छोड दे ये सारे काम आदमी व निय । भगवान ने उरी को यह हक दिया है कि वह अपना घर साफ रखन के लिए पडोसिया व घर वचरा फेके । और ज्यादा हा तो उस वरनाद करने का काम करे । चल उठ बद्धमोज ।’

लालू पहले ही मालिक ननकू की आवाज गुनकर उठ गया था । आखिर घर की गाय वा ही जाया था न वह । कोई बिपशी छोड ही था—कालू की तरह ।

*

*

*

सब तक सुधेन हरवाहा आ चुका था । ननकू और सुधेन न मिनकर बैन-गाडी वसी और फिर दोनो न बानू-लालू व पुठो को सहनाया—प्यार स आग की यात्रा सपन बनान व निय । ननकू न सुधेन को बैनो को चारा डाने को बहा और फिर लोटा भर चाय पीन बैठ गया । सुधेन व निय भी उरने पीवन व एक गिलास म चाय भर कर रखवा दी । चाय पीत-पीते ननकू न सुधेन स पूछा, ‘क्यो र, सब चन दिव मडी को ?’

‘हाँ मालिन, लकिन कुछ कह रह ये ।’

‘क्या ?’

‘यही कि आपका सिर फिर गया है ज गलदा मडी न नही बेच रह है ।’

‘मडी म ही तो बेचन जा रहा हूँ—फक सिफ इतना है कि व बाढतियो को देंगे और मैं तृपि उपज मडी की नी तामी मे ।’

सुधेन ज्यादा समझदार नहीं था । ननकू की बात सुनकर चुप हो गया । तब तक चाय खाम हो चुकी थी । ननकू ने कूदीन तनाशी, द्विवरी खोलकर दखा योडा कियोसिन बाकी था । रास्ता बट जायगा । मडी स चौदन पर तो तेल

खरीद ही लेगा। ननकू ने कट्टे में वीड़ी निकाली। वीड़िया मुलगाइ बोर क-दोल का काच निकालकर बत्ती जला दी। क-दोल पहल कुछ भभकी—आइतिया कौडूमल और धनश्यामदास रामदास की धातों की तरह। शायद वेब ऊपर चढ़ आया था। फिर शांत होकर जलने लगी। सुखेन ने क-दोल का गाड़ी के पीछे बांध दिया। बीस वारे गेहूँ लादा जा चुका था। ननकू न सुखेन को चावुक दे दिया था और गाड़ी चलाने का हुक्म दकर पीछे बैठ गया। आत्र उसका मन गाड़ी हाकन का नहीं हो रहा था। अगसिया भागी-भागी आयो और राटिया की पाटली धमा दी। जाने-जात बोली—“सुनो! ज़िद मत करना। जसा सब कहे करना।”

ननकू का लगा, अगसिया कितनी भोची है। देश में क्या हो रहा है यह निरक्षर कभी समझ नहीं पायेगी। आखिर उसका भी क्या दोष। पूरी उमर तो धूँघट में ही काट दी। जो कुछ इस दुनिया के बारे में उसने जाना है, धूँघट की एक कोर हटाकर ही तो जाना है।

सुखेन ने गाड़ी हाक दी। ननकू ने कहा, “सुखेन, बैल न चले तब स तो मारना मत। बड़ा दुख होता है इन चुप्पे जानवरों पर हाथ उठाकर।” सुखेन अच्छा गाड़ीवान था। पूरी जिदगी खेत, बैल और गाड़ियों के त्रिकोण में ही बीती थी उसकी।

*

*

*

पूरव की पौ अभी पूरी फट नहीं पाई थी। शरीर पर खरीच से निकल आये खून की नाई अरुणिमा मचक आवाज से संपर्क कर उदित होने का प्रयास कर रही थी। पठ पीछे सभी घुम्प अंधेर में शांत थे—यिफ सडक पर बैलगाड़ियों के पीछे लगे क-दोलों का प्रकाश जीवतता का आभास देता था। घंटियों को मद्धिम-मद्धिम आवाज आ रही थी—ठीक उसी प्रकार जैसे किसी के गले पर मन भर का बोझ रस दिया हो और वह मिमियाने जाने स्वर में अपने अस्तित्व का आभास दिला रहा हो।

सुखेन की बात ने ननकू के शान्त और सुनिश्चित मन में भँवरें पैदा करना प्रारम्भ कर दिया था। उस लग रहा था, “गाँव वालों से बटकर जीना अच्छा

नहीं है। लेकिन मुर्दों के साथ कम तक जी बहनाया जा सकता है। सरकार कितना कुछ किसानों के लिए कर रही है कौन समझता है। अरे य गाव वाले समझें तब ना। य तो सब लकीर के फकीर हैं। खेत में बीज बोना हो, तो बीज कोदूराम या फिर घनश्याम दास रामदास स ही लेगे। बडा नहीं खोनेंगे। जैसे की आवश्यकता हो, तो इही के पास जायेंगे। क्या सहकारी बँडू वाले मर गय हैं। किस के घर-घर आकर सरकारी नीतियों के बारे में बताकर जान द। मुन तो सभी लेते ह लेकिन करते अपने मन की ही हैं।”

ननू को बीड़ी की तलव लग आई थी। कटटा निकालकर दो बीड़ियाँ गुलगाइ। एक सुखेन की ओर बढ़ा दी और फिर जोर से बस मारन लगा— जस उस कम से वह मन के भीतर तैर आई अशांति को पी लेना चाहता हो और फिर धुएँ के रूप में उसे बाहर फेंक देना चाहता हो। लेकिन क्या कभी मरना हुआ है। कीचड में पत्थर फेंको तो कीचड उड़ल ही जाता है। ननू के दिमाग में सोच का कीडा फिर रेगन लगा था।

“मुनिया का गौना इस बार अवश्य बर देना चाहता हूँ। पिछले दो साल में लडक वाला के पास में बराबर खबरे आ रही थी। मुनिया की ननद गौने के बाद समुराल चली गई थी। उसक समुराल वाली को अब बहू की आवश्यकता थी। घर में काम सभालन वाला कोई नहीं था। लडक तो चार-चार थे लेकिन भभा के नड-मुस्तदड क्या जानवरो का चारा-पानी करेंगे, गाय की सानी गयेगे ? और जाखिर बस तक उनकी मा बने पर रोटिया सेक-सेककर हरवाहा को बिताती रहेगी। और फिर जब घर सभालना ही है, तो फिर उसमें देर-मिरेर क्या। छोऽ लडका की मेहरियाँ भी आनी थी। लेकिन जब तक बडक की यह ही न था जाये तो छोटी की क्या मिसाल ?

“लेकिन मर सोचन भर से ही तो मुनिया का गौना नहीं हो जायेगा, बरडा लत्ता चाहिए, मिरादरो को खाना सिनाना पडगा अगसिया को हसगी आदि उठाना है। और फिर लडक ने ट्राजिस्टर की माँग भी तो रख दी है। यदि गत्ता अच्छे भाव नहीं बिका तो कम ही पायेगा यह सब। यदि सारा गत्ता कोदूराम या घनश्यामदास रामदास को बच भी दे, तो क्या वे सारा

पैसा एक मुश्त उसे दे देंगे ? कभी नहीं । आज तक कभी ऐसा हुआ है । सब समझता है वह इन अडतियों को । हमेशा कुछ न कुछ पैसा दाय लेगे । बाद में देन का वादा करेंगे लेकिन फिर लटकता रहेगा । कहेंगे—बोरो तो शक्कर बन में दे दें, सीमट ले जाओ, मिट्टी का तेल ले जाओ, आदि-आदि । वर ब्रह्मशास हैं ये सब सामने । घिस एक नम्बर के । पहिले अफीम पिलाना सिवायग और जब उसकी आदत पड जायेगी, तो उम देने के निये लगायगे । न तो माल-मत्ता येतो मे लगाते हैं, और न बचर जोतते हैं लेकिन सडो फसल का सौदा करके सारा पिराफिट खुद हजम कर जात हैं । किसान के हाथ पडता है सिर्फ कुछ नकदी, कुछ वादे और बच की उगाही ”

‘ कोई कुछ भी कहे, मैं तो गल्ला वृषि उपज मण्डी मे ही बेचूंगा । मुह मांगे दाम मिा जायेंगे तो सारी कठिनाइया निपट जायेंगी । आबिर किसान भाइयो मे ही तो इस मण्डी को बनाया है—अपने अधिकार पाने के लिये । जितने खरीददार आत ह किसान का गल्ला खरीदन के लिये—फुट कारपोरेशन बाने, अतिया और न जान कौन कौन । पैसा भाव खगे माल बचा—नहीं तो कौन ही जोर जवरदस्ती है । और फिर मण्डी मे बेचने से कितन फायदा सरकार न दे रख है—सीम ट का परमिट मिलेगा शक्कर का परमिट मिलेगा, मिट्टी का तेल मिलन मे कोई परशानी नहीं । कौन अडतिया यह सब देने जा रहा है । ’

‘ छो-छो जब अपने राग ही नाव सुवायें, तो फिर ईश्वर ही रजक है । ’

* * *

दिन निकल गया था । गनी रहचहाने लगे थे । गाी शहर के नाक पर आकर रुक गई थी । ननकू नीचे उतरा, ता आवा बैन्गारडियो की कल्लारे लडो थी । नाक का वैरियर बंद था । कारण कुछ समझ में नहीं आया । जब तो चुर्मी लगती नहीं है । फिर बाह खवका राक रगा है । वैरियर मून्दा था और फिर एक गाी निकालने के बाद बंद हो जाता था ।

नाके के पाउ बन चाय के टपे अपन पुण मौवन पर थ । घुर्वा टर तरफ लठकर चल रहा था । ननकू के आगे बरीर पचास गाडिया खडी थी । परने वह सचम आबिरी मे था लेकिन फिर गाडिया आकर उगवे पीये खये होने लगा

धी। मुझे नोचे उत्तरपर शरीर ठीक करन लगा था। येन भी इसी बहाने मुरदान सगे थे। नानू ने मुरान स पूछा—“चाय पियगा ?” इच्छा जाहिर करे “चलेगी”—मुसन बालू-सातू के पुट्ट सहनान सगा।

बोदूरान धीर पाश्यामदास रामदास के एजेट सन्निय थे। विद्याना म मित्र-बुध रह थ। कृपि उपज गण्डी म व्यात भ्रष्टाचार का हनाना देवर उट्ट अदतिषा के यहाँ धान का आम्रण दे रह थे। सीमेट, शककर, विरोसिन खादि को भी दिवाने का वायदा कर रह थ। वे ननकू के पास भी आवे। उनवे मालिका न उह छापीद दी थी कि ननकू न पहर मिले। जागरूक किसान है—कषा को बहुवारर पधा मगव कर खता है। और फिर उसका मान भी पूरा की तुलना मे काफी अच्छा था। उन दोनों का बज चुवाकर यह वही मुसिकन स यहाँ मे पारिग हो पाया था। वे चाहने थे कि ननकू अपना माल वहाँ बचे—चाहे बजदार रह या न रहे। ननकू न उहे शाति स समझा दिया था कि वह सेठो मे जरूर मिलेगा।

*

*

*

रेंगत-रेंगते उचकी गाढी भी बैरियर तज पहुँच गइ थी लेकिन बैरियर बंद था। नाके धान पी बोरा पच्चीस पैसा मांग रहा था। ननकू ने कहा, “जब चुगी नहीं तो बमूली किस बात की ?” “य चुगी नहीं है—गट पार करने की पीछ है। खब दे रह हँ तुम ती दो।”

‘सब गू छायेंगे तो क्या मैं भी ’

“तब बैरियर नहीं खुलेगा। दखते हैं नेमे गाड़ी जाती है।”

‘इतने म पीछे मे ावाजे धान लगी थी, “कषो बहसु कर रहा है। बडा जागरूक बाता हँ। रडी बाजार म घुसना है तो अटी मे पैसा क्या नहीं खता।’ ननकू न यहाँ-वहाँ देखा और मन मसोसकर समझाने वाली मुद्रा मे पूछा, “रसीद मिलेगी ?”

“शाम को लौटते बत्त ले लेना।”

उसे पता था रसीद नहीं मिलेगी। उसने अटी से पाच रुपया निकाल कर फेंक दिया। नाके वाले न लपनकर नोट एमे उठाया जैसे मुजर को ताजी विष्टा

मिल गई हो। वैरियर खुला और ननकू को गाड़ी गेट पार कर गई। नाके बाना बोना, 'वावा नाराज मत हो। एक ही दो दिन तो मिल्ते है कमाने के। सरकार न चुभी क्या व द की, बाल-बच्चे भूखे मरने लगे।'

ननकू के मुह मे धूक आ गया। सोचा उसक सामन धूक दे लेकिन कुछ सोचकर उसे निगल गया।

*

*

*

दृषि उपज मण्डी का परिसर आज फिर अपने यौवन पर उतर आया था। ननकू न गाड़ी पास लग पोपन व नीचे खडी कर दी और बैल खान दिये। मण्डी के अंदर गया और यहाँ-यहाँ देखन लगा—इस इरादे से कि शायद वहाँ कोई ऐसा दिख जाय जिसस मन भर वाते की जा सके। उसन पाया कि बड़े-बड़े किसान और आढतियों के एजेन्ट मण्डी क्षेत्र मे घूम रहे थ। फूड कारपोरेशन म भी खरीददार आय हुये थे। गल्ले की बोलियाँ लग रही थी। वह चुपचाप सब कुछ देखने लगा। वह अनाज लगा रहा था कि उसका गल्ला किस रेट से बिक पायगा। भाव ज्यादा ऊचे नहीं जा रहे थे। कई बार तो सरकार द्वारा समर्थित मूल्य क आग्र-पास ही आकर एक जाया करत थे। फुड कारपोरेशन वाले गहूँ की क्वालिटी आककर शासकीय स्वगोदी का भाव किसान को बता रहे थे। कुछ विचौलिय भी घूम रहे थे जो किसानो के कान मे कुछ फुसफुसाकर चले जाया करते थे।

उसन मुखेन को गल्ला मण्डी क अंदर ले जाने क लये कहा। मुखेन गल्ला ले आया। ननकू ने मण्डी का टैक्स पटाया और अपने मान की नीलामी की प्रतीक्षा करने लगा। नीलामी मे बाधा समय था। उसन साचा इस दौरान उन शासकीय मुविधाआ का पता लगा ले जिनक वारे मे अखबारो मे छपा करता था और जिनक वारे मे मण्डी क लोग चिन्ना चिन्नाकर बताया करत थ। धीरे-धीरे टोन की पोल खुलने लगी थी। उसे पता चला कि सीमेन्ट का परमिट तो मिा जायेगा लेकिन एक बोरी सीमेन्ट पान के लिय दो रुपये का चढोप्री चढ़ाना पडगी। शक्कर भी बिना दगिणा दिये नहीं मिल सकती थी। उसका मन यह सप जानकर बडा ही खिन्न हो गया। उस आशा नहीं थी कि

“तुम्हें पता नहीं कि इस मन्थी में हम पुष्ट वाले गेहूँ का जो प्रोड बटा है सरकारी स्पीड उसी रेट पर होती है।”

‘लेकिन आड़तिया और दूसरे व्यापारियों की अरु तो बढ़ नहीं है। मान देकर ही तो वे भी मरोदगे।’

‘तुमन दक्षा है कि कितने आड़तिया बोली लगा रह रहे हैं। काफी गलत भी मरीदी तो हम पुष्ट वाले ही बर रह रहे हैं। तुम चाहो तो तुम्हें तुम्हारा माल का भाव ज्यादा मिल सकता है।’

‘कैसे?’

इस्पेक्टर ने बाजू टाइप के एक आदमी को बुलाया और कहा, “आप जाकर ननकू को समझा दीजिये। काफी भोला है। उस वटा दीजिये कि हम किसान का उसका हक दितान के लिये कितने दृढ़ प्रतिन हैं।”

वह बाजू नाकू को कमरे से बाहर ले गया और फिर समझाते हुये बोला— देखो भैया। हम तो टहरे सरकारी मुसाजिम। जिसमें तुम्हारा पायदा, उस हम करत है। क्योंकि इससे दो पैस हम भी बचा लेते हैं। थोडा सा पैसा खच करने पर तुम्हारा गेहूँ का प्रोड बढ़ जायगा और तुम्हें ज्यादा पैसा मिल जायगा। ये आड़तिया तो सब बदमाश हैं। भाव लौगा से मिलकर पहिल ही तय कर लेते हैं कि कौन सा गेहूँ किस भाव बिफगा। उससे दो-चार रुपय ज्यादा की हो बाकी बोनत हैं। कमीशन दत है न साब लोगो को। और हाँ ये जो बड़े-बड़े किसान हैं न वे अपना बचरा माल अच्छे प्रोड का बराकर मन माफिक पैसा उगा लेते हैं। हम भी एस वे भी खुश। सारी दुनिया खुश। चाय पियोगे ?”

‘पो लूगा।’

‘ननकू भैया, सरकार थोडे सी भी आये, सरकारी मुसाजिम तो नहीं बदल जाते। उनकी हक पर साते तो नहीं लग जात। अने भाई सरकार तो ये ही चलाने हैं, बाकी सब तो नाम भर कमाने हैं। यदि इनका बरदहस्त किसी पर हो गया, तो समझो कि गंगू तेली राजा नाच बन गया और यदि बहो किसी

भोज पर इसकी भृकुटि तन गई तो समझो कि वह गधू तेली भी नहीं बन सक्ता ।”

‘ये बत्ताओ कि तुम मुझसे क्या चाहते हो । इतनी सारी बात करने का बाद जो मिनता है, वह पहिले भी मिल सकता है ।”

“क्वालिटी इस्पक्टर को नजराना दो, माल का ग्रेड सबसे ऊपर । फिर तुम्हें कोई तकलीफ नहीं ।”

‘कितना देना होगा ?”

उस बाबू ने ननकू के वान में कुछ कहा, तो ननकू प्रत्युत्तर में बोला— ‘इतना मैं नहीं कर सकता । मण्डी टेबल नाका आदि पटाने के बाद बचना कितना है । और फिर ये तो सब लूट है । जाओ वह दो अपन इस्पक्टर में कि कुछ नहीं मिलेगा । माता का ग्रेड जो फिज्ज करना चाह, कर दे ।”

‘ननकू, तुम्हारे दिमाग की गर्मी तुम्हारे किसी काम नहीं आयेगी । ठंडा दिमाग हमें फायदेमंद हाता है ।”

“अच्छा तुम जाओ तो । मैं सोचकर फिर तुम्हारे पास आऊँगा ।” ननकू यह कहकर चुपचाप गत्तों की तरफ बढ़ गया और दो बोरे बाँट करके उन पर बठ गया ।

*

*

*

ननकू न निराशा में बीबी मुनगाई । जोर की कश लेत ही उसे लगा कि जोष का कीड़ा फिर उसके दिमाग में रगने लगा है । बनाद योन्ना से सभूत आशा फुर हो गई । वह सोचने लगा—“क्या यही गांधी बाबा का सपना था ? क्या सोना कहा करत ये कि मादूर और कितान स्वतंत्र भारत में प्रतिष्ठा का प्रतीक हंगे । क्या यही प्रतिष्ठा है कि जो चाह नोच ले । क्या बड़ी-बड़ी योजनायें मात्र छुनावे के लिय बनती हैं ? ऐसी स्थिति में तो गांव का गाहूकार ही ज्यादा सम्मानजनक है जो कम से कम खून चूसकर जिंदा तो रहन सक्ता है । य सरकारी मुलात्तम ? धिक्कार है उन हरामी के पिल्ला को । जब अग्रेज ये ता उनक तलवे चाटकर गुलामी को मजबूत करत रहे । तो क्या आज तलवे नहीं चाटते ? ? इमे नहीं चाटत । उस वक्त गुलामी को मजबूत

चरते थे और आज साहवा और उनकी विगलैड मर्मीं के तलवे चाटकर अपनी भ्रष्टाचारी आदती की सन्तुष्टि करत जा रहे हैं। ”

इतने में ही सुखेन आ गया। आन ही बोला, “रास्ते में कोदूराम मिला था। पूछ रहा था कि माल बिका या नहीं।”

तुमन क्या कहा।’

“क्रोध नहीं। हाँ, लेकिन एक बात यह जरूर बोला था कि अपने मानिक से आचना कोदूराम आदमी है—सरकारी मुलाजिम नहीं। आदमी ही आदमी था काम आता है। य सरकारी प्यादे क्या कभी किसी क हुय है।” सुखेन ऐसा कहकर चुप हो गया—यह साचकर कि वही वह अपनी औजात से ज्यादा नहीं बोल गया। लेकिन ननकू जानना चाहता था कि और क्या बात हुई होगी। उसने पूछा “सुखेन, कोदूराम और क्या कह रहा था?”

‘कोई खास नहीं। बस यही कह गया कि यदि आप चाहें तो सीमेंट और शक्कर वह दिला सकता है। आपको मिनन जरूर बागा है।’

ननकू फिर सोचने लगा। सोचना उसकी मजबूरी बन चुकी थी।

‘माल यदि कोदूराम को बेच दिया जाये, तो क्या पाटा पड रहा है। दर सपर य ही लोग तो पैस धेले क काम आत ह। उधार भी दे बन है। सरकारी लागा से फायदा भी क्या हो रहा है। क्या वे मुनिया न गौन क लिय उधार द देंगे? कभी नहीं। ऐसा साचते ही उस बाप की मृत्यु का स्मरण हा आया। फसल खेत में खली थी। पैसा अटी में था तो लेकिन इतना नहीं कि मृत्यु से जुडी सामाजिक मा यत्ताओ को निभाया जा सक। बिरादरी की नाराज नहीं किया जा सकता था। ऐसे समय कोदूराम न पैसा दिया था जितना मांगा उतना। ब्याज ले लिया तो दया गजब किया था। सरकार भी सा ब्याज लेती है। और फिर क्या सरकार ऐसे समय पैसा दे सकती है। आडे वक्त अपने लोग ही तो काम आते हैं।

वह चुपचाप उठा और सुखेन का गल्ल पर बैठकर कोदूराम से मिनन चना गया।

ननकू को दखन ही कोदूराम गद्दी मे उठकर मिलने आ गया । ननकू यठ सम्मान पाकर अभिभूत हो गया । चुपचाप गद्दी पर बैठ गया । कादग्राम का पता था ननकू दया आया ह लेकिन फिर भी औपचारिकता निभाने बड़ पूछ बैठे, “बयो ननकू भैया, केम आना हुआ ?”

“माल का सौदा करने । मैंने निणय ले लिया है कि अब कभी कृपि उपज मण्डी म पैर नहीं रखगा ।”

“मैंने तो पहिले ही समझाया था इन मण्डिया का गुणा-भाग तुम जैसे लोग नहीं समझ सकते । तुम्हारा माल मैंने देख लिया है । जो भाव तुम चाहोगे, मैं दे दूंगा ।”

“लकिन एक बिनती है । मण्डी टैक्स व नाके पर खच किया हुआ पसा भी तुमको देना होगा ।”

“मजूर है ।”

“मैं माल सुघेन क हाथ भेज देता हूँ । बचा माल घर पर है । जब चाहोगे तब भिजवा दूंगा । हा लकिन गेहूँ के ग्रेड की सरकारी कीमत से दस रुपये ज्यादा पर बचूंगा । मजूर है तो बोनो ।”

“मैंने तो पहिले ही मजूरी दे दी है ।”

ननकू उठकर जाने लगा, तो कोदूराम ने रोक लिया । बोला—“तुम एको मैं मान मंगवा लेता हूँ । अरे हाँ रामलाल बक्का धाये थे । कह रहे थे कि इस बार वे बहू घर लाना चाहते हैं । तुमस मुनाकात हुई या नहीं ?”

“नहीं, लेकिन इस बार मुनिया का गौना कर ही दना है । रामलाल को थव ज्यादा दिना तक नहीं रोका जा सकता है । तुम माल खरीद कर पैसा नगद द दो, तो इसी महीने सब काम निपटा दूँ ।”

‘पैसा रोकड ही नहीं दूँगा, चाहो तो घर मे रखे माल का एदवास भी तुम ल सकते हो ।’

कोदूराम की सहृदयता से ननकू के उद्विग्न मन को किनारा मिल गया ।

*

*

*

मुखन न गल्ला लाकर कोदूराम की गोदाम में पहुँचा दिया। ननकू चुपचाप न बोलकर मन बही और डाल रहा था। अब तक शाम हो चुकी थी। गल्ला बाजार में बँतगाइया की भरमार बढ गई थी। सत्र जान के लिये तैयार था। कोदूराम न ननकू का सारा पस द दिया। ननकू का एडवास की आवश्यकता नहीं थी। इतन में ही कोदूराम के घर से एक नौकर आया और उसका वान में कुछ कहा। कोदूराम ननकू से बोला 'ननकू, तुम जब चाहो अपना माल लाकर वच देना। हाँ, लेकिन जान के पहिले मठानी से अवश्य मिल लेना। तुम्हें याद दिया है।'

ननकू की समझ में नहीं आया कि सठानी न उम क्यों याद किया है। एक वार जहर वह मठानी से मिला था। उन दिन वह कोदूराम से मिलने के लिए घर तक चला गया था। कोदूराम तो नहीं मिला था लेकिन सठानी न अवश्य मुलाकात हो गई थी। उस सेठानी का स्वभाव खूब भाया था। अगसिया तक में उसकी चचा की थी।

शाम तेजी से उतराने लगी थी। ननकू ने जदी से सठानी से मिलकर घर जान का विचार बनाया। उसने सुनेन को पैसे खर सामान लाने का दिया।

* * *

सेठानी ने ननकू को बँठाया। ताजे दही की लस्सी पिलवाई। फिर बोली 'ननकू रामलाल कक्का आये थे। पुनिया का गौना इस वार कराने का विचार बना रहे हैं। तुमन तैयारी कर ली है ?'

ननकू को याद आया कि सेठानी रामलाल के गाव की ही है। वहाँ उसका अच्छा-खासा घरोंना था। रामलाल का सारा गल्ला कोदूराम की आडत में ही आता था। ननकू बोला, "जी सेठानी इस महीने गौना खर दूँगा। फजल बिकन का इ तजार था। लो फसल भी बिक गई और अटी में पला भी आ गया। सप्ताह भर में आकर खरीददारी करूँगा और फिर गौना। वैसे आपको खर दूँगा।"

'मैं गौने के समय गाव जाऊँगी। रामलाल कक्का की बही इच्छा है कि

वही बहू व आन व समय में गात्र म रहें । तुम जाओ तयारा करो । काई कठिनाई आय, ता बतलाना ।”

“अच्छा सठानी जी आरव सहयाग क निय आभारी रहूंगा । अत्र चलता हूँ, रात होने वाली है ।”

“रूका, मरी आर स एक सामान ने जाओ । मुनिया को गीत व समय द टना—आगेवाद क साथ ।”

ननकू सेठानी की बात सुनकर हरका-बवका रह गया । उस रह-रहकर पधवावा हो रहा था कि छुपि उपज मण्डी जाकर वह कित भेडिया व झुण्ड में फस गया था । सरकारी कामकाज और परम्पराओं में कितना अंतर होता है ।

सठानी ने पील रंग की एक साडी लाकर ननकू को थमा दी । ननकू ने उस उकर माथ स लगाया और चुपचाप बाहर जा गया ।

*

*

*

मुखेन सामान लेकर गाडी व पात्र पहुँच चुका था । उसने गाडी कस ली था । व दील जलाकर पीछे लटका दी थी । ननकू ने साडी सम्भाल कर गाडी व अदर रख दी । अब उसका मन विन्कुल निमन हो चुका था—रुके हुए पानी की गहराइया के समान । इस समय भी उसकी डच्छा गाडी हाकने की विन्कुल गहा था । मुखेन को गाडी हाकने का आदेश देकर वह गाडी में बैठ गया । साव का कीडा फिर उसका दिमाग कुरेदन लगा था । जैसे-जैसे गाडी आगे बढ़ती थी, वेलों की घटियों की ध्वनि पर टाच का कीडा और तीव्रता से उसे कुरेदन लगता था । दिन भर को घटी बाते उसके जेहन स टकराकर स्मृतियों को प्रस्फुटित कर दिया करती थी । वह समझ गया था कि आदमी गती कहा पर करता है । परम्पराओं स विलग होकर जीना इतान व लिय बडा ही कष्टदायक होता है ।

कानू अपनी जिद में आकर अहन लगा था । मुखेन ने चावुक उठाकर उस मारना चाहा, तो ननकू ने चित्लातर कहा— ‘मुखेन मत मार आज इसे । किसी को मत मार । सब मात हो गया है । गाडी तजी से न चले ता मत चलने दे । जैसी चल चलन दे ।”

इतना बानकर ननकू अबानक ही शांत हो गया । शायद अशांत मन को

सुखन न गल्ला लाकर कादूराम की गोदाम में पहुँचा दिया। ननकू छुपचाप न देखे कि मन कहीं और डोल रहा था। अब तक शाम हो चुकी थी। गल्ला वापार में बँतगाडिया की भरमार बढ़ गई थी। सत्र जान के लिये तैयार थे। कादूराम न ननकू का सारा पसंद दिया। ननकू का एडवांस की आवश्यकता नहीं थी। इतन में ही कादूराम के घर से एक नौकर आया और उसके वान में कुछ कहा। कादूराम ननकू से बोला "ननकू तुम जरा चाहो अपना माल लाकर बच देना। हाँ, लेकिन जाने के पहिले सेठानी से अवश्य मिल लेना। तुम्हें याद किया है।"

ननकू की समझ में नहीं आया कि सेठानी न उन क्या याद किया है। एक बार अरुण वह सेठानी से मिला था। उन दिन वह कादूराम से मिलने के लिये घर तक चला गया था। कादूराम तो नहीं मिला था लेकिन सेठानी से अवश्य मुलाकात हो गई थी। उसे सेठानी का स्वभाव खूब भाया था। अगलिया तक में उसकी चचा की थी।

शाम तजी से उत्तरान लगी थी। ननकू ने जल्दी से सेठानी से मिलकर घर जान का विचार बनाया। उसने सुखेन को पैसे लेकर सामान लाने भेज दिया।

* * *

सेठानी ने ननकू को बैठाया। ताज दही की लस्सी पिलवाई। फिर बोली "ननकू रामलाल कक्का आये थे। मुनिया का गौना इस बार कराने का विचार बना रहे हैं। तुमने तैयारी कर ली है?"

ननकू का याद आया कि सेठानी रामलाल के गाव की ही है। वहाँ उसका अच्छा-खासा धरोवा था। रामलाल का सारा गल्ला कादूराम की आदत में ही आता था। ननकू बोला "जी सेठानी, इस महीने गौना कर दूँगा। फसल बिकन का इतना ज़रूर था। सो फसल भी बिक गई और बंटी में पसा भी जा गया। सप्ताह भर में आकर खरीददारी करूँगा और फिर गौना। बस आपको खबर दूँगा।"

"ये गौने के समय गाव जाऊँगी। रामलाल कक्का की बड़ी इच्छा है कि

बड़ी बहू व आन व समय म गाव म रहें । तुम जाआ तयारा करो । कोई कठिनाइ आय, ता बतलाना ।”

‘अच्छा सठानी जी आवव सहयोग व निय आभारी रहूंगा । अत्र चलता हँ रात हाने वाली हूँ ।’

‘हवा, मरी धोर स एक सामान न जाआ । मुनिया को गोने व समय दे दना—आगेवाद व साव ।’

ननकू सठानी की बात सुनकर हक्का-धक्का रह गया । उभ रह-रहकर पछतावा हो रहा था कि टूटि उपज मण्डी जाकर वह कित भेडिया व मुण्ड मे फस गया था । सरकारी वामकाश और परम्पराशा म कितना अंतर होता है ।

सठानी ने पील रंग की एक साडी लाकर ननकू को थमा दी । ननकू ने उस लेकर माथ से लगाया और चुपचाप बाहर आ गया ।

*

*

*

मुझेन सामान लेकर गाडी व पाउ पहुँच चुका था । उसन गाडी कस ली थी । व दील जलाकर पीछे लटका दी थी । ननकू न साडी सम्भान कर गाडी व अन्दर रख दी । अब उसका मन बिन्दु नमन हो चुका था—‘भ्वे हुये पानी की गहराइया ये समान । इस समय भी उसकी इच्छा गाडी हाकने की बिन्दुन नहीं थी । मुझेन को गाडी हाकने का आदेश देकर वह गाडी मे बैठ गया । सोव का कीडा फिर उसका दिमाग कुरदत लगा था । जेस-जेमे गाडी थो वडती थी, बैला की घटियो की ध्वनि पर साव का कीडा और तीव्रता से उस कुरेदने लगता था । दिन भर को घटी बातें उसके जेहन स टकराकर स्मृनिया को प्रस्फुटित कर दिया करती थी । यह समझ गया था कि आदमी गती कहा पर करता है । परम्पराओ से विलग होकर जीना इसान के लिय बडा ही कष्टदायक होता है ।

कानू अपनी जिद मे आकर अडने लगा था । मुझेन ने चातुक उठाकर उसे मारना चाहा, तो ननकू ने चिल्लाकर कहा—“मुझेन मत मार आज इसे । किसी को मत मार । सब शात हो गया है । गाडी तजी स न चले तो मत चलने द । जैसी चले चलन दे ।”

इतना बोलकर ननकू अचानक ही शांत हो गया । शायद अशांत मन को

किनारा मिल गया था। उसने बड़ी म मे बट्टा निवाला ओर दो बीटियाँ निकाल कर सुतगाई। एव सुखेन की ओर बडाई और अपनी बीटी का बश इस जोर मे मारा जैस सारी अस्थवस्था को अगस्त्य के समान पीकर उद्विग्न मन तरंगो को बश मे करना चाहता हो। लेकिन बीटी का धुआँ क्या कम सावत्तवर था? लन्दर पहुँचत ही उसने खलबली मचाना प्रारभ कर दिया। ननकू बैचेन सा हो गया। वह उस धुएँ को खील न सका। बेचैनीबश उसने धुएँ को जोर स बाहर फेंक दिया। उसने देखा कि धुआँ धीरे-धीरे फैलकर सारे परिवेश मे फैल रहा है। सब कुछ उस धुएँ मे समा सा रहा है—वह स्वय, सुखेन, कालू-कालू, अग-मिया, रामलाल बबका, मुनिया और कोदूराम। है क्या कोई ऐसा जो इस धुएँ स लड सके। शामद कोई भी नहीं। धुआँ बाहर निकलते ही उसकी बैचनी बम हो गई। वह निढाल होकर गाडी मे सोन का उपक्रम करने लगा।



जतिगा

आज यूनियन के दफ्तर में फिर हलचल बढ़ गई थी। यूनियन दफ्तर के आसपास गैर सी फरी चूना-खदानों में जब भी कौन दुघटना होती, यूनियन का दफ्तर चक्कर-पहल में आवाज हान लगता। दुघटना के कारण मजदूरों के सिर पर मडरान वाला भय यूनियन की चिन्ता में गड़बड़ होता जाता और फिर सारे मजदूर ठंड के दिनों में अचानक निक्का आय प्रदीप गूय में टूट चुके काठर से मिली राहत की मांग में दुखे-हवापन महसूस करते। घने भण्डे में चिमनी के नीचे वनन का धुँवें के समान वह नये उनके अंतर्गत में खतरनी और जोफ मचाने लगता लेकिन फिर जैसे-जैसे धुआँ चिमनी के ऊपर बढकर मुक्त जाकाश में बिखरता और अपना दम घाट्ट प्रभाव कम करता, चिमनी का निचला द्वार उत्तन ही संकुच होता जाता। यदि खदानों से पत्थर निकालकर उनका चूना बनाना है, तो धुआँ तो होगा ही। चूना-गंधारे से ता दुघटना टालनी जा सकती है।

चूना-खदानों में काम करने वाले मजदूरों की आवाज भूल चुकी थी। चतुष्कल के अपना मुह राटी का निवाला कुदा पीडा का कम करने के नियमों का पात। उस समय पास के एक कसबे के एक उदीयमान नेता ने इन मजदूरों की आवाज को बलवत्ता बनाने का बीडा उठाया था। बाफेलर को उबरा भूमि पर उसने सारे मजदूरों की एकता का बीजारोपण किया था और फिर इस यूनियन का जन्म दिया था। एक सत्र अरसे में वह कस्बाई नेता चूना खदानों में सुरक्षा साधन मुहैया कराने के आश्वासन पर सारे मजदूरों को इकठ्ठे बिये रखा था। मजदूर सुनते रहते थे कि उनका नेता खान-मालिका में मिलकर सुरक्षा-साधन उपलब्ध कराने के लिये भरसक प्रयत्न कर रहा है। लेकिन फिर उन्हें लगन खगा था कि नया आश्वासनों की तपिस में अपनी रोटी पका रहा है। कन्या का

ख्याल था कि खान-मालिका ने उसकी महवारी बांध दी थी। तभी वही वह अब यूनिशन दफ्तर में यदा-कदा ही फटवता है। लेकिन वह बंचार कर ही क्या सकते थे। सुबह से शाम तक खदानों में काम करते-करते इन मजदूरों का शरीर इस क्षायक नहीं रहता कि शाम को यूनिशन के दफ्तर में इकट्ठे हो अपन हित की योजना बना सकें।

वह कस्बाई नेता बड़ा ही समझदार था। सहयोग और पारस्परिक सौहार्द का सर्वोच्च स्थान पर रखता था। जब इन खूना-खदानों में उसकी आर्क-जायक बरगान में बिजली बोर्डों की मिजली सप्लाई में मल खान लगी तो उसने एक स्थानीय दमदार और पहलवान छाप मजदूर को उस यूनिशन का कायभार सौंप दिया। यदा-कदा दोनों मिलते और सोमरस पान व चाय खदानों में हान वाली खुस-पुस और अयाय गतिविधियाँ की सुलकर चर्चा करते। एक सुबह था कि तबना सभम नेता उनका हमराज है और वह साचता था कि अगले इन्कशन की उसकी तीसरी ठीक चल रही है।

*

*

*

कल सदान के ऊपर चूने के पत्थर पहुँचाने समय द्राली अचानक भगुआ के ऊपर टूटकर गिर पड़ी थी। गिरते प यरी ने भगुआ को वहास बरक उसे अपने आगौर में समट लिया था। भगुआ के बहास होकर गिर पड़ने की खतर चूना खदान में काम करने वाले करीब दो सौ मजदूरों के बीच द्रुत गति से फैल गई थी। अचानक ही भागमभाग और खलबली मच गई। पास में लग विगान बरगद की छाह में बच्चे को दूध पिलाती भगुआ की ओरत करीब-करीब दौड़ती सी आई और पत्थरों के बीच फम बेहोश भगुआ को देखकर दहाड मारकर रान लगी। माँ का दूध पीकर भगुआ का नवजात शिशु माँ के अचानक चले जाने से एक भण को रोया। लेकिन उसका पेट कुछ भर गया था। इन सारी घटनाओं से अनभिन्न वह टुकुर-टुकुर बरगद के पत्थों की आर दखने लगा और फिर बीच-बीच में क्लिकारिया मारने लगा। इस बरगद ने इन कायरत खान-मजदूरों को अपनी छाया में पालकर बड़ा किया था। मजदूरों के माता पिता और कई पूर्वजों ने आसपास की खदानों में काम करते करते पूरी जिंदगी काट दी थी।

भगुआ भी इसी बरगद की छाया में पलकर बड़ा हुआ था। भगुआ के नवजात शिशु को अपना भविष्य पता हो या न हो, लेकिन बरगद उसके भविष्य के बारे में पूणत निश्चित था।

एकत्रित हुये मजदूरो में फुसफुसाहट होने लगी थी।

‘पिछले महिन भो तो हमारा एक साथी मर गया था,’ एक मजदूर फुस-फुसाया। “तब खान मालिक न था क्या था,” “क्या किया—कुछ भी तो नहीं। हर बार दुघटना होने पर मुठठी भर सिक्का स मुभावजा द दिया तो क्या होता है। आखिर कब तक खान-मालिक मुरक्षा-साधनो की अवहेलना करते रहग और कब तक चून के पत्थरा का सफद रग हमार खून से सिदूरी हाता रहगा।” एक अल्पशिक्षित मजदूर न फलसफाना अदाज में अपनी राय व्यक्त की और कमीज की जेब से बीड़ी निकाल कर पीन लगा।

इसी प्रकार की अनेक बातें मजदूरो के विभिन्न समूहो में चलन लगी थी। शायद आदमी की मौत स बड़ा कोई और साधन इस ससार में नजर नहीं जाता जो क्षण भर में उस दाशनिक बना दे। मौत स जुड़ी सभी बातें, सुव्यक्ति के गुण-दुगुण और ससार की नश्वरता का बन्धान लाश को देखते ही इसान के स्मृति-पटल में उभर उठते हैं।

*

*

*

आसपास क बहुत लंबे-चौड फैले खदानो इलाको में काम करने वाले सैकड़ो मजदूरो के लिये एक छोटा सा प्राथमिक चिकित्सा केंद्र खालना खान-मालिको न पैस की बरवादी समझी थी। मजदूरो को काम दकर वे उह इस दुनिया में जिंदा बनाये रहे थे, इससे बड़ा भी क्या काई और परोपकार हा सकता था। आखिर क्या सारी दुनिया के परोपकार और कन्याण का ठेका इही लोगो ने ल रखा है।

मजदूरो की फुसफुसाहट के साथ-साथ चीख-पुकार भी बढन लगी थी। सारे मजदूर भगुआ के बेहोश शरीर के पास इकठ्ठे हो गये थे। खदानो का उत्खनन काय रक गया था। कुछ भगुआ के भाग्य को कोस रहे थे और कुछ अपने भाग्य को। कुछ मजदूर खदान के अंदर घुसकर पत्थर अलग करके उसका शरीर बाहर निकालने का प्रयास करने लगे थे। भगुआ का स्पन्दन

बिहीन शरीर खदान के ऊपर लाकर घास में पड़ी चौरस जमान पर रख दिया गया। उसका शरीर में काफी खून निकल चुका था। शरीर में कोई स्पन्दन भी नजर नहीं आ रहा था। कुछ मजदूरों ने एक आशा में भगुआ के मुंह पर पानी के छोट भी दिये। लेकिन शरीर में कोई स्पंदन पदा नहीं हुआ। स्पंदन-बिहीन शरीर को देखकर सभी मजदूरों के मन एक अजीब से भय में भयाक्रांत होने लगे। सभी सोचने लगे

‘वही भगुआ ’’

‘‘ लेकिन, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ’’

गया सोचने ही कई निगाहें भगुआ की स्त्री और बरगद के भांड को ओर चली गईं। मौत में स्वाफताव मौत की चिंता होती है। जान हथेली पर रखकर जावन-मवप में रत करीब-करीब मृतप्राय लोग भी जब मौत का कल्पना करते हैं तो एक निश्चित सा सिंहरन उनके स्नायु-तंत्र में प्रविष्ट कर जाती है।

भगुआ के साथी मजदूरान उस उठाया और वे द्रुत गति से खानों में पाच मीठ दूर बने सरकारी अस्पताल को ओर चले दिये। भगुआ को स्त्री विहीन सो हो गई थी। उसने जन्दी में बांस की टाकरी में से शिशु को उठाया और तेजी से आगे बढ़ती मजदूरों की भीड़ के साथ होकर आगे बढ़ने लगी। शिशु अब तक आगे चुना था और दूध पीने के लिए रुदन कर रहा था। लेकिन भगुआ की स्त्री को सिर्फ भगुआ की चिंता थी। वंचा निरंतर रोता जा रहा था। उसका रुदन-स्वर पूरे परिवेश में घुलकर प्रभावहीन हाता जा रहा था। उसे सिर्फ दध की चाह थी।

*

*

*

अस्पताल की ओर बढ़ती भीड़ की खबर खान-मालिकों के एजेंटों ने उन तक शीघ्र पहुँचा दी थी। वे भी भयभीत होकर गार्डियों में सरकारी अस्पताल की ओर दौड़ पड़े थे। वन यह पहना मामला नहीं था जब खान मालिकों को अस्पताल की तरफ भागना पड़ा ही। हर माह कुछ न कुछ दुपटना होती रहती थी जो उन्हें अनायास अस्पताल की ओर खींचकर ले जाती थी। सभी उन्हें अहसास हो पाता था कि खदानों में काम करने वाले मजदूरों का शरीर

भी उन्ही के समान हाड-मांस का बना हुआ है। लेकिन कुछ ही अंतराल के बाद उनके शरीर में प्रादुर्भावित यह भावना भी लुप्त हो जाती। सब कुछ निर्धारित क्रम में चलने लगता। उन्हें पता था कि इस प्रकार की दुघटनाओं के घटने के बाद और सुरक्षा साधनों के अभाव में भी ये मजदूर काम करना नहीं छोड़ सकते हैं। अस्पताल के इलाक़ में रोज़गार का कांड साधन नहीं है। मर्ती भी बाहर माहना नहीं होती है, जो उह पूरे वर्ष भर रोज़ी-रोटी दिला सक। इस प्रकार की दुघटनायें खान-मालिका के लिये थोड़ी सरकारी पर्याप्तता का अवश्य पैदा करती थी, लेकिन आर्थिक तथा सरकारी अपसरान किसी और मिटटी के बने रहते हैं। वे भी आदमी हैं। तृष्णा और आकांक्षाओं से परे तो नहीं है। लेकिन सब भी दिखाव के लिये भाग-दौड़ता करनी ही पड़ता है।

अस्पताल तक पहुँचते-पहुँचते भगुआ की इहलीला समाप्त हो चुकी थी। उसके साथी देहोश भगुआ की नहीं बल्कि एक जवान मजदूर की लाश इस आशा में लो रहे थे कि शायद डाक्टर का इलाज भगुआ के शरीर में प्राण-संचार कर सक। वस व सब भगुआ की स्मृति में ज्यादा अनभिज्ञ नहीं थे। पर उनका आशांकित मन रह-रह कर भगुआ की मौत की कपना कर सिहर उठता था। मजदूर की मौत से आखिर समाज का फल भी या पड़ता है। यदि भगुआ की मौत मजदूर के रूप में न लिखी होती तो फिर भगुआ मजदूरों की काम में जम ही क्यों लेता।

पाच मील का लम्बा फासला तय कर भी अस्पताल के सामने बने ग़ुदर से बगीचे में खड़ी थी। कस्बाई नता अपन पंज का निवाह करने के लिये एक खान-मालिक की कार में पहिल ही अस्पताल पहुँच चुका था। अस्पताल के प्रांगण के बाहर खान-मालिकों की कारें बुझे घुन की सपेदी के शृंश घूँप में चमचमा रही थी। कारों के शोफर अपनी-अपनी कारों को बपड में साफ कर चमकाते हुए हाली समय का सदुपयोग कर रहे थे। खान-मालिक परेशानी की मुद्रा में कभी चहल-चदमी करने लगते थे और कभी डकट्टे हावर मुपत्यू। कस्बाई नता एक कुर्सी पर बैठकर अपनातूनी पाज में मन ही मन कुछ चिंतन कर रहा था। खानों में सुरक्षा-साधनों के अभाव में हान वाली इस वर्ष की

पह दसवीं मौत थी। सभी को डाक्टर के जवाब की प्रतीक्षा थी। शायद कोई फरिश्ता आकर यह कह दे कि भगुआ एक लम्बी नींद सो रहा है—थोड़ी देर बाद उठ जायेगा। इतनी सी खबर न हो सिर्फ भगुआ बल्कि सारे मजदूरों में एक नया जीवन संचारित कर देती।

भगुआ की स्थिति का सही जवाब डाक्टर न वही दिया जिससे सब आशंकित थे। सारा परिवेश क्षण भर में शांत हो गया। इस शांत वातावरण में सिकु रह रह कर भगुआ को खो को खो कारे गूँज उठती थी। भगुआ का शिशु बि कुन शत हो रुदन करती माँ को धीरे टुकुर-टुकुर देख रहा था। शायद प्रकृति ने उसे उसकी स्थिति का आभास करा दिया था। वह अनाम हो गया था इसलिये उसका शांत रहना लाजिमी था।

*

*

*

कस्बाई नवा न खान-मालिक से मिनकर भगुआ के अंतिम संस्कार के लिये आर्थिक सहायता प्राप्त कर ली थी। भगुआ के सगी-साकियों के मुख पर वितृष्णा और घृणा का भाव तेरने लगा। ऐसा लगन लगा था कि उनके अन्दर की रुजती घृणा और क्रोध का ज्वालाबुखी किष्ठा भी समय जावित हो सकता है। कस्बाई नवा न स्थिते सूँव ली। उसने उन सबको फुसलाना चालू कर दिया। धीरे-धीरे सब सामान्य सा हो चला था। वह भगुआ का अन्तिम संस्कार शोत्रातिशोत्र करना चाहता था जिससे कि विद्रोह को आग मद्धिम पड़ जाये। खान-मालिक ने अपनी कार भगुआ की लाश को घर ले जाने के लिये शोकर सहित सौँर दी। भगुआ की लाश कार पर चढाकर सब भगुआ की विलास करती खो को साथ लिये भगुआ के गाँव की ओर चल पडे। जा भगुआ खीते जो कार में बैठने की कपना स्वप्न में भी नहीं कर सकता था, आज उसका पार्थिव शरीर कार का भागीदार बन गया था। अपनी-अपनी किस्मत का प्रश्न है।

गाँव के बाहर बने अमगान घाट में भगुआ को जला दिया गया। इस अमगान भूमि में भगुआ जन्म और भी कइ अम-सपूत समा चुके थे। भगुआ की

स्त्री अद्ध-विभित सी होकर बार-बार गिर पड़ती थी। उसकी साथी मजदूरिना ने उन नमस्का-युक्ताकर शांत कर दिया था।

*

*

*

फिर खान मजदूरा व उस यूनियन दफ्तर में सत्र भगुआ की मौत पर चर्चा करने व लिये इकट्ठे हो गये थे। उस चर्चा में व अपने भविष्य की छवि भी भाव कर देखना चाहत थे। एक समय अरम में खाना में काम करने वाल मजदूरो व निय मुरथा-साधना, चिकित्सा मुविधादि की मांगो व बावत यूनियन दफ्तर में बन्दे चल रही थी लेकिन बुद्धिजीवियों के विचार-विमर्शो समूहा व नमान बहुसे किसी एक किनारे पर नहीं आ पाद थी। जैसे ही कोई दुघटना घटती, गम्भी चलती ठडी बहसो का दमित ताप उग्र हो उठता लेकिन और-धोरे पट की जाग बलवती हो उठती और सार मजदूर काम के लिये उन खाना की ओर विच कर च आ जाते। इन खाना में उनकी मौत का पगाम निखा हाता था। समय के साथ सत्र अपने काम में मस्त हाकर राजी-राटी जुटान में लग जाते। दुघटनाय व उनमें जुडा विपाद और आक्रोश विस्मृति को गद में छिप जाता। आखिर उस दुनिया में जीन स ज्यादा अनिवाय बया नाई और चीज भी ह। जा जीवन को जीन के अलावा कुछ और मानते हैं निश्चित समझिये कि उनकी पट-धुधा तुप्त हो ठण्डी हो गइ हागी।

कम्बवाई नेता धाडा विलम्ब से यूनियन दफ्तर पहुँचा। वह चहर स कुछ परेशान नजर आ रहा था। इसलिय कि शायद वह एक लम्ब समय में खान मजदूरा का अधेर में रणकर गुमराह कर रहा था। पहलवान छाप चमचा कामरेड उसका साथ चिपका हुआ था। लेकिन वह परेशान नहीं था। पर रोजी-रोटी का प्रश्न था। कम्बवाई नेता किसी भी कीमत पर अपने दृष्ट्य में विचलित नहीं होना चाहता था। उसका दफ्तर में घुसते ही अनेक मजदूरो के मन प्रसन्न हो गये। लेकिन उस कम्बवाई नेता का अतस भीतर स बहुत ही भयाक्रांत था। सामन रखी कुर्सी पर वह चुपचाप बैठ गया। उसने कुछ क्षण विश्राम किया और फिर खट होकर सबको सम्बोधित करने लगा—

“खान मानिक न भगुआ की स्त्री व लिये एक माह की पगार पशगी, पाच सौ रुपया मुआवजा और दो सौ रुपय तेरहवी व लिय भजा है।”

“क्या हमारा जीवन की कौनसे मान पांच सी रफा है।” कइ आवाज एफ साथ उसकी ओर मुखातिब हो गइ।

‘नहीं नहीं, बिना कहा हू। यह तो सिर्फ बीपचारिक सहायता हू। मुजावजा का और पैसा हम खान-मालिक से लेकर रहूंगे।’

‘सुरक्षा साधन की बातों का क्या हुआ।’

“बातचीत खान मालिकों से जारी है। नूना खादन का काम दिन-ब-दिन खर्चीला होता जा रहा हू। उम्मीदिय काम में जदो सफलता नहीं मिल पा रही है।”

“यह तो हम पिछले साल में मुन्नन आ रही है। हर साल खान-मालिकों को मिलने वाला फायदा बढ़ता जा रहा है। फायदा बरन वाले हम मजदूरों का क्या सुरक्षा साधन भी नहीं मिल सकते? खानिक फायदे में शेयर या बोनस की मांग तो नहीं कर रहे हैं।” एक जागरूक मजदूर ने कहा। ‘हमारा प्रयान काफी जोर-शोर से चल रहा है।’ कम्पार्ट नता न सफाई दी।

“यदि हम सरकार द्वारा निधारित मुविधायें नहीं मिलतीं तो हम सेक्टर काट जाकर उह पान का हक क्यों नहीं मांगते।” जागरूक मजदूर न पुन पृष्टा। जइ काम प्रेम और आपसी सम्भार में हू सबका हू उम कोट तक घसीटन से क्या लाभ होगा। बकि एक्स तो हमारे और खान मालिकों के समथो के बीच दरार ही आदेगी। हम नहीं चाहते कि चीजा का ताकर जोग जाय।’ कम्पार्ट नता न स्पष्टीकरण दिया।

यह तो शान्ता खान-मालिक का चमचा लगता है। फिर हमारा दया भला कहेगा।’ एक मजदूर भुनभुनाया।

कम्पार्ट नता न स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि उसका द्वारा बोया बीज इतना शक्तिशाली होगा। उस मन ही मन मजदूरों में आई जागरूकता पर बोध हो आई। उसका प्रयास से समूह जागरूकता उसकी ही जड़ें खाली कर उसकी रोजी-रोटी का जरिया खत्म कर देना चाहती थीं। उमें समझ में नहीं आ रहा था कि मजदूरों का कैसे समझाया जाय। अतएव वह समझौते वाली मुद्रा में बोला—

“म आज ही जाकर पान-मालिका न दा टुक बात कर्गा । उनम बोलगा कि दुघटना मे मिलन वाली मुआवजा पशि म बढोत्तरी की जाय । क्या मजदूर की काइ कीमत नहीं हाती । जिस सीढी स व ऊपर चढ़ रह है । उम क्यो गिराकर फेंक दना चाहते है । आपकी जो भावनाये है उसमे में इन खान मालिका का अवगत करा दूगा । ’

‘कम स कम आप हमे शासकीय दर पर मजदूरी ही दिना दे, ता हम बाहर काफी महरवान हगि । ’ जागटक मजदूर ने फिररा छाडा ता कई मजदूर न आवाजे लगाकर उसकी भावना का अनुमादन किया ।

कम्पाइ नता न आश्वासन दिया और अपने चमच का पारर विमुक्तजाना ही उचित समभा ।

*

*

*

भगुआ की मौत का हुय एक दिन भी नहीं बीता था । बरगद क पड क पास वाली चूना खदान पर उत्खनन का काय तेजी स प्रारम हो गया । वहाँ दमकर ऐसा नहीं लगता था कि कोई दुघटना वहाँ हो गइ है । खन स खन सिट्टरी रग याने पत्थर फेक दिये गय थ । ट्राली मुधार ली गई थी । मजदूर अपने कपडे बदलकर खदान म उतर पड ये । लेकिन उस सा परिदेश मे एक ही कमी रह गइ थी जो यदावदा दुघटना क पहिचे वाले वातावरण की स्मृति नाबुद्द दिया करती थी । बरगद की विस्तीर्ण छाया क जागो म भगुआ का गिशु टोकरी म नहीं सा रहा था । छाया की विस्तीर्णता आज अपरो-पकारी बन गई थी । भगुआ की औरत कडा चली गई थी—कि गि को पता नहीं था । कुछ कहते थ कि वह मायक चली गई है । शायद वही पर मजदूरी करके भगुआ की निशानी का जिंदा रख सन । विस खान-मालिका न उग गुप्पा क बरारर मजदूरों दन का वायदा कर दिया था लेकिन तोग रहते है कि उस दन खाना म गढ घूणा हो गई है ।

खान के चरते काम म उस समय ब्यवधान उत्पन हो गया, जस रमा नाम का एक आदमी टम गुपरवाइजर का पूछते आया । हड गुपरवाइजर स मिलने पर उउन उम एग चिठठी धमा दी जो बम्बार्ड नता का एक विफारशी

पत्र-दूथा। उस पत्र में रमेश को खदान में काम करने का अनुरोध था। भगुआ की मौत से एक जगह खाली हो गई थी। पत्र अनुरोध में ज्यादा एक आडर ही था क्योंकि हंड मुपरवाइजर का मालूम था कि क्वार्टर नेता का अनुरोध का तात्पर्य क्या है। उसने पत्र पढ़कर रमेश की तरफ विद्रूप भाव में देखा। उसने रमेश को काम समझा दिया। रमेश ने ईश्वर को धन्यवाद किया और खदान में काम करने उतर गया।

*

*

*

दोपहर। ब्रज खान की छुट्टी हुई। मुख अपनी-अपनी रोटिया निकालकर खान लग। रमेश घर में ही खाकर आया था। रमेश को अपने बीच पाकर सभी मजदूरों का प्रसन्नता हुई। रमेश चुप था और सभी से मिलने का प्रयास कर रहा था। वह मन ही मन गुश भी था कि क्वार्टर नेता ने उसे कम से कम नौकरी तो दिना दी चाहे फिर शासकीय दर में कम मजदूरी ही क्यों न मिले। खानचीत के दौरान एक मजदूर ने रमेश से पूछा—

‘तुम्हें इन खदानों के सुरक्षा उपायों के बारे में ता पता है न ?’

हां। सब कुछ। यह भी कि यहाँ पर खान की सुरक्षा भगवान की मर्जी पर है और मौत के सिवा कोई और हम हमारी परेशानियों से मुक्ति नहीं देना सकता है।’

यह जानते हुए भी तुम यहाँ पर मजदूरी करने आये हो।’

‘पेट की भूख से बड़ा खतरा और कुछ नहीं होता है। खान की तमना में किम सुरक्षा साधना की पड़ी है। मरना तो कभी है ही। अब फिर आब ही क्यों नहीं। बताओ यदि तुम सबको यह बता दिया जाय कि इन खदानों में कभी भी सुरक्षा साधन नहीं आयेंगे तुम्हें शासकीय दर में हमेशा कम मजदूरी ही मिलेगी तो क्या तुम सब काम करना छोड़ दोगे। क्या तुम सब अपने खान की तमना इन बेकार सी बातों में गंवा दोगे। अधिकार और शक्ति की बातें करने से खान-पीकर मस्त मर्लंग हो गये हैं। हमारे लिये खान खतरा है अधिकार पाना नहीं। आज भगुआ की मौत के बाद कितने लोगो ने खदानों में काम करना छोड़ दिया है। बताओ कोई तो बोलें।’

सभी निरन्तर थे । उसने बीनना जारी रखा । गायद आज उम पहली बार अपनी बेवारी के कारण पैदा हुए आक्रोश और क्रोध को व्यक्त करने का अवसर मिला था ।

“भगुआ की मृत्यु न होती, ता मुझे नीकरी बेम मिलती । और जब मैं मरूंगा तो किसी और को मेरी जगह नाम मिलेगा । हम सब जतिगा के समान हैं ।”

काफी मजदूर उसकी बात को मंत्र-मुग्ध होकर सुन रहे थे । उनमें से वह आगरुक मजदूर पूछ बैठा—“वह जतिगा क्या होता है ?”

“अर । तुम जतिगा के बारे में नहीं जानते । लगता है अखबार नहीं पढ़ते । आसाम का नाम तो सुना होगा ।”

“हाँ । अपने ही देश का एक राज्य है ।”

“उस आसाम में एक स्यास माह में एक विशेष घटना घटती है जिसमें सभी के निये समस्यार्यें पदा कर दी हैं । सब उसका कारण तलाशने में लगे हैं लेकिन कोई हल नहीं मिल पा रहा है ।”

‘क्या विशेष घटना घटती है वहाँ ।’ बइया ने एक साथ पूछ लिया ।

‘दस विशेष माह में—शायद दिसम्बर में, जतिगा नामक पक्षियों के कई जप समुद्र पार स्यानो से आते हैं और बूद-बूद कर आत्महत्या करते हैं । इसी कारण इस स्यान का नाम भी जतिगा पड गया है । आत्महत्या क्या करते हैं, कोई वैज्ञानिक समझ नहीं पाया है । सोचो कसी विचित्र बात है । और अब सोचो कि हमारी स्थिति क्या इन जतिगा से कही अच्छी है ।’

सभी मजदूर उसकी विवेचना को सुनकर शांत हो गये । अपन द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर पाने की आकांक्षा उनमें मृतप्राय हो गई । वे सब उठे और चुपचाप खदान में काम करने उतर गये । दूर बरगद के पेड़ की विस्तीर्ण छाया अपने स्यान से छोड़ी सरक गई थी । शायद किसी भागी शम-संप्रत को छाया देन के उपक्रम में वह अपनी गतिशीलता कायम रखना चाहती थी ।

उसी से अत

श्री अणुव वमा न अब भारतीय समाचार पत्रा म अपन विवाह का इश्तहार दिया था, तो उमम कुछ शर्तें थी। वैम विचारो म व पूरे त्नडियन हैं, परंतु जब मेरी व्यक्तिगत मुलाकात उनस हुट, तो पाया कि मस्तिष्क क किसी कोने में सस्कारा की जड अभी भी अपना स्थान बनाय हुय है। उसके बोग का टोन और वातचीत करत समय कघो का पिच व साथ उठाना। गिराना इस तथ्य का सिद्ध करने में कोइ कसर नहीं छोडता कि व काफी समय से विलायत में हैं और उस सम्यता का उन पर काफी प्रभाव पडा है। वंसे व मरे शालय जीवन क अच्छ मित्रा म स एक है। काफी गरीबी म पत्कर कामनवेय स्कानररक्षण पर वे कनडा म शाय काय करन गय थ। फिर शोब व दौरान ही उनका पत्र-व्यवहार कुछ भारतीय सस्थाना म नोकरी क बावत पना, परंतु जसा विदित था यहा की नोकरी सोन की चिडिया नहीं थी, गत वही पर सेटेल होन की साचा।

समयानुकूल शादी की अच्छा उत्पन्न हुई और जब म पाउ उनका पत्र आया कि भारतीय समाचार पत्रा म उसन मेट्रीगोनियल एडररटाइजमट दिया है, तो मैं दग रह गया। खैर मैं उसन यहाँ पर व्यक्तिगत रूप में पहुँचने का इतजार करन लगा। कुछ समय बाद अचानक शादी का निमंत्रण आया। मैं सोचा कि यही एक मौका अपूर्व से मिलन का है। उसी समय कुछ अंतरंग बातें हो जायेगी और रात व नीचे दबी पुरानी यादों का कुरेदा भी जा सकेगा।

शादी क कार्यक्रम व दौरान उससे कुछ संगोटिया गार वाली गाराना चचा चनी। पता चला कि शादी बिना दहज व हा रही थी, मात्र केनडा धान-धान क निय कुछ पम नकड लिये गय थ। एक शत यह भी थी कि लडकी माडन विचारा की ढाना चाहिए। मैं पूछा— कनडा म माडा लकिया की तो कोई कमी

नहीं है, फिर विदेश में विस्थापित होने वाले एक आदमी का भारतीय लड़की से विवाह का क्या कारण हो सकता है ?”

‘भारतीय लड़कियाँ काफी सवमिसिद्ध होती हैं, इसलिये ।’ उत्तर मिला ।

‘क्या किसी केनडियन बाला ने तुम्हें आफर नहीं दिया ।’

‘दिया तो था, सपक भी था । डेटिंग भी को कई दिनों तक, परन्तु पाया कि व मेरा माथ एडजस्ट नहीं कर सकती ।’

‘व एडजस्ट नहीं कर सकती, कि तुम ?’

‘यह कहना तो मुश्किल है ।’

‘यान कि तुम्हें एक पत्नी-लिखी नौकरानी की आवश्यकता थी,’ मन भारतीय दृष्टिकोण स्पष्ट किया ।

अपूव ने आशानुसार कोई उत्तर नहीं दिया । इतने में ही भावक व नियत बुलावा आया और बातचीत का तारतम्य टूट गया ।

शादी के बाद जब एक दिन अपूर्व को खान पर बुलाया, तो उसकी व उसकी श्रीमती जी के आधुनिक विचारा में परिचय पाया । एक मूल प्रश्न काफी हिचक के बाद पूछ ही लिया, ‘शादी के बाद अब बच्चों की पैदाइश के बारे में क्या विचार है । यहाँ पर तो शीघ्र गोदी भरना शगुन का प्रतीक माना जाता है ।’

इस बारे में अभी कुछ सोचा नहीं । वैसे तीन-चार साल तक तो कार इरादा नहीं है । क्या अनु ?’

बेचारी नवविवाहिता अनु ने काफ़ी समझ दगी व साथ पति का साथ दिया ।

अपूव यमा हनीमून मनाते हुए कनडा वापिस चल गये । कुछ दिनों तक तो पत्र-व्यवहार व्यवस्थित रूप से चला और फिर दूज के चार के समान । जीवन के चलते चक्र में भी इतना व्यस्त हो गया कि अपूर्व का स्मृति धूमिल पड़ गई । अचानक जब चार साल बाद अपूर्व का पत्र आया तो निम्नृति की तरफ भग हुआ । पता चला कि वह सपत्नीक कुछ समय के लिये दश आ रहा है । सोचा कि पत्र सुखदायक होगा, लेकिन पढ़कर निराशा ही हाथ लगी कि वह काफी टुपी है । दिली व किसी जस्पता में उसका पत्र-व्यवहार चल रहा था ।

सोचा शायद नौकरी के सिलसिले में पत्र-व्यवहार चल रहा हो। परन्तु भरा मन नहीं बोल रहा था कि वह यहाँ पर मेटल होना चाहता है। बेसव्री स मैं उसका आगमन का इंतजार करने लगा।

दर सवेर वह भारत आया और उसका कुछ दिनों बाद मरे शहर में। अनु की गाद में तीन माह की छाटी सी बच्ची थी। देखकर बड़ी खुशी हुई। पूछा—
“बच्चे के जन्म की कोई सूचना नहीं दी?”

उत्तर नदारद। अपूर्व काफी दुःखी हुआ व परशान नजर आ रहा था। यही हाल अनु का भी था। पुनः प्रश्न पूछने की हिम्मत उसका चेहरा देखकर नहीं हुई। चाय-नाश्ते का इंतजाम किया। इतने समय में ही मेरी दो वर्षीय बच्ची अपूर्व से काफी हिल गयी। अपूर्व भी उस प्यार भरी नजरों से देख-देख कर निखने लगा। पुनः हिम्मत कर प्रश्न किया—

“बच्चा स दिल तग गया?”

“नहीं तो।” उत्तर मिला। लेकिन वह स्वाभाविक भ्रम मिटाने में न सके।

“लेकिन अब तो तुम्हारी भी बच्ची हो गई है?”

मेरी बच्ची कहा है। एक आह के साथ वह बोला।

“तो क्या मुहल्ल वाला की है।”

मैं इस मजाक का भी वह कोई उत्तर न दे पाया। न ही इस कथन का विरोध किया। उसकी मन स्थिति को मैं बिल्कुल समझ नहीं पा रहा था। लगता था जदर कोई बात उस रह-रह कर कुरद रही है। ज्यादा छड़ना उचित न समझकर शाम को काफी हाउस में बैठने का निमन्त्रण जेने ही मैंने दिया, वैसे ही काफी प्रसन्न होकर शाम को आने का वायदा कर दानो वापिस चले गये।

शाम को काफी हाउस में बैठकर काफी चचाये हुई। अंत में मैंने पूछा हो लिया—

“दिल्ली किस बाबत आना हुआ।”

“बच्ची को लाने।”

“बच्ची को लेने, क्या मतलब?”

“

“या बच्ची का ज म दि ली मे हुआ ?”

“नहीं ।”

“तो फिर ।”

“सुनना चाहत हो ।

‘हाँ, हाँ, न्या नहीं ।’

‘तो सुनो । विदेशी वातावरण में रहते-रहते मरी विचारधारा में काफी परिवर्तन आ गया है । वहाँ पर सबसे कोई बजूबा नहीं है । कोई टेव् नहीं है । पत्रकी उम्र तक पहुँचते-पहुँचते करीब सब ही इसका स्वाद चख लेते हैं । शादी के तुरन्त बाद भी बच्चा पैदा करना उचित नहीं समझते । यदि उचित समझते हैं, तो वह है भोग । जीवन का भौतिक शारीरिक सुख । शादिया भावनात्मक स्तर पर नहीं होती । यद्यपि मेक्स का उपभोग शादी के पहिले में किया था लेकिन भारतीय होने के कारण किसी लडकी को भावनात्मक स्तर पर जुड़ता न देख विदेशी बाला को पत्नी रूप में स्वीकार न कर सका । पुरान सस्कारा की भंभकोर में पुन भारत आन की इच्छा बलवती हाती गई । सोचा शादी करव भारत में सटेल हा जाऊंगा, लेकिन विदेश का माह और पैस की चम-चमाहट न एसा करन में राक दिया ।’

‘शादी के बाद सिफ एक विद्वान का यह कथन याद रहा कि शारीरिक सुख का उपभोग इतना करो कि उसमें विरक्ति हा जाये और जीवन पथ पर सत्य सत्व की तलाश कर सको । सो उसी पर उपा और मुन भोगता रहा । ”

‘इसी बीच अनु कई बार गभवती हुई, लेकिन बच्चे की इच्छा न होन स हमशा क्वरेटिंग स नय जीव का अंत करता रहा । यह प्रेम चलता रहा । न अनु और न मैं—कभी साच सक कि प्रकृति में युद्ध हमशा पायटमद नहीं होता ।

‘तीन सान में दस बार क्वरेटिंग करवाई । लेकिन दसवीं बार क्वरेटिंग क समय डाक्टर न वोन दिया कि अनु अब माँ नहीं बन सकती । मुनते ही मैं हो गीन्वास सो बैठा । अनु को कुछ पता नहीं था । वह सो सिर्फ मर साथ एन्-जस्ट करती जा रही थी । परंतु मैं मेर अंतरंग में इस कडव साथ का छिपान में बैचेन हो उठा था । अंतरंग का दुख चेहर पर नो धीरे-धीरे उतरान लगा । मुझे हमेशा बुझा हुआ, परमान, विरक्त देखते-देखते अनु भी परमान हा उरती ।

इस बार कारण पूछने पर कार्क न कोई बहाना बना देता। एक बार जब उसने कारण पूछा तो काफी हज्जत के बाद उस राज बताया। बचारी गुनते ही विस्मित सी हो गई। मैं अपने आपको दापी पा रहा था।”

‘समय के साथ-साथ बच्चे की तरफ हमारा मोह बढ़ता गया। साग सब ही कहते हैं कि जब चीज होती है तो उसकी कोई कीमत नहीं होती। और जब उन नहा पा सकते तो वह अमूल्य लगती है। समझीता हुआ कि बच्चे को गंद लिया जाय। उसका नाम पुन शायी के समान एक इस्तहार दिया और दिल्ली में एक अच्छी का गोद देने के बावत पत्र-व्यवहार हुआ। जमी बावत दिल्ली आया था।’

लेकिन बच्चा मन की क्या आवश्यकता थी। बहुत से लोग तो इसके बिना भी बहुततर जिन्दगी जीते हैं।

अनु को आश्चर्य सब करना पड़ा।”

‘नया क्या घर में बच्चा जान में लुम्हें खुशी नहीं हुई।”

हां खुशी क्यों नहीं हुई। लेकिन बच्चे-बच्चे में फरक होता है।”

तो फिर किसी रिश्तेदार का बच्चा गोद ले लिया होता।’

‘अनु की इच्छा थी बाहरी बच्चा ही लिया जावे, निम्न को भ्रष्ट न हो।”

‘लेकिन लडकी ही क्यों गोद ले ली लडका ही न लिया होता, सुगाप का सहारा तो बनता।”

‘अनु का क्या था जब बच्चा अपना है ही नहीं, तो फिर लडकी-लडकी में क्या फरक। अनु न तो सिर्फ मातृत्व की पूर्ति के लिये यह सोचता अपनाया। लडकी लेने में उसका अपना एक और अभिमत भी है।”

‘वह क्या?’

‘विदग्धी सम्मता का अनु न मुझमें ज्यादा समझा है। वन भी नारी काफी सबदनशील होती है। अनु न यह महसूस कर लिया कि लडका जान में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता है। विदग्धी सम्मता न उस यह बता दिया है कि लडका सुगाप का सहारा नहीं बन सकता। फिर लडका लेने से क्या फायदा। आश्रित

मैं भी तो अपना परिवार छोड़कर यहाँ आ गया हूँ। क्या मैं भारतीय समाज में अपवाद नहीं हूँ?" मैं उत्तर न देते टुप चुप रहना उचित समझा। वह भी इतना कहकर कुछ सोचने लगा। मैं ही शान्ति मङ्गल की।

'क्या नाम रखा है बच्ची का?'

'निधि।'

'निधि क्या?'

"योंकि यह नाम हमेशा मुझे मेरे देश के सम्कारों की याद दिलाता रहेगा।"

'तात्पर्य यह कि वापिस आने का मन करता है।'

'हाँ करता तो है लेकिन पत्र आना नहीं चाहता।'

उसके बाद मैंने कोई प्रश्न नहीं पूछा।

'तीन दिन बाद पुनः मैं कनेडा वापिस जा रहा हूँ।' अपूर्व ने स्पष्ट किया।

'इतनी जल्दी क्यों?'

'जो नौकरी मैं यहाँ कर रहा हूँ, वह अभी सट्टा नहीं है। अनु का भी यही हाल है।'

मैं चुप रहा। थोड़ी देर बाद हम दोनों काफी हाउस में बाहर निकले और बलविदा कह अपनी-अपनी मजिल को चल दिये। अपूर्व के मस्तिष्क में क्या उषन-पुषल मच रही होगी, मुझे पता नहीं। परन्तु मेरा मन काफी अशान्त हो गया था।

जाते समय अपूर्व पत्र डालने के लिये कह गया था। लेकिन पत्र नहीं आया। सोचता हूँ कि कुछ दिनों बाद समाचार पत्र का वा'टेड' कालम देखूँ। शायद अपूर्व ने कोई नया इस्तहार दिया हो।

इसके बाद नहीं

भाज घर से निकलते ही उसका मन फिर प्रभीत हो उठा था—कालेज गेट के पास इकट्ठी भीड़ की कल्पना करते ही। वैसे गेट के पास इकट्ठी होने वाली छात्रों की भीड़ कोई नई बात नहीं थी। अपनी पाच वष की अभियांत्रिकी शिक्षा के दौरान एसी कई भीड़ें वह गेट के पास देख चुका था। कई बार वह उसमें शरीक भी हुआ था और छात्र नेताओं की बुलंद आवाजों में सहयोग भी किया था—अपनी शांत और मरियल आवाज को वातावरण में फेंककर। उसकी अपनी कोई तज आवाज नहीं थी। पारिवारिक संस्कारों से सभूत उसका व्यवहार हर बार उसके जोशीले विचारों में एकदम से अवरोध लगा दिया करते थे। छात्र नेताओं के साथ उसका ताल्लुकात उसे यदा-कदा भान करा दिया करते थे कि समाज-परिवर्तन की विशिष्ट शक्ति उन सब में निहित है लेकिन फिर उसे महसूस होने लगा था कि यह सब फिज़ूल बकवास है।

“बुलंद आवाज़ें समाज-परिवर्तन नहीं ला सकतीं”—इसका अहसास उस होने लगा था और अंतिम वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते उसने महसूस कर लिया था कि छात्रों में आक्रोश मतिभ्रम और अनुरक्षिता अतएव उह किसी दिशा में न ले जावेगी। फिर भी जीवन का जाश इन सबको इकट्ठा कर मात्र बुलंद आवाज़ों में उब्दी कर देता था।

पूर कालेज में वह अपनी प्रतिभा के कारण काफी प्रसिद्ध हो चुका था लेकिन उसकी यह प्रतिभा कुछ विगड छात्रों की ड्राइंग शीटा के निर्माण और प्रदर्शन के समय फ्री कोर्चिंग तक सिमट कर रह गई थी। उसकी इस प्रतिभा-प्रदर्शन का पुरस्कार ये विगडे छात्र कभी उस हॉटल में डिनर ऑफर करके, जहाँ पर उसका पहुँचना बिल्कुल नामुमकिन था और कभी शहर के थियेट्रो में लगी नई फ़िल्म का पहला शो दिखाकर दिया करते थे। उसने कभी महसूस

नहीं किया कि उसकी प्रतिभा इतनी विप्रयशील होगी। लेकिन प्रतिभा विक्रेता के रूप में उस क्या मिला है इन लोगों से—हृदयान और परीक्षा बहिष्कार और

और क्या। कुछ भी तो नहीं। अभी इस कालेज में लोग सही समय पर डिग्री लेकर नहीं निकले। जब डिग्री मिली तो नौकरी उनसे बोसो दूर भाग छड़ी हुई। डिग्री मिलते मिलते विनापन पुराने हो जाते और फिर सुखी भविष्य की कल्पना में उन्हें लगता कि पहले अभी बुलंद की गई आवाजें अथहीन हो गई हैं, उनका आवाग मुस्त हो गया है और एयता के नाम अभी भी एक्ता के नाम नहीं होत। दो हजार छात्रों की प्रथा और महत्वाकांक्षायें इन मुठठीभर छात्रों की मुठठी में बंद हो गई थीं—बंद भी ऐसी कि छूटने पर हताशा के सिवा कुछ भी हाथ न थाय। कई बार उसने सोचा भी कि देर में बच्चे छात्रों की साक्षर बह इनसे दृढ़ कर ले लेकिन उसका विचार खाली दिमाग की उपज के सिवा कुछ न होता। उसकी विचारधारा अभी भी काय रूप में अनूदित न हो पाई। वह कई बार जेहन में अचानक उठ खड़ी दृढ़ का विचार इन छात्रों के भय से मुदक कर बैठ जाता और फिर उस विचार को पुन जीवित करने के लिय उसे काफी प्रयास करना पड़ता—अविश्रात प्रयास।

*

*

*

उसने कई बार सोचा भी और चलाने का प्रयास भी किया कि आखिर उसमें क्या अभी है कि वह इन सब गलत बातों का विरोध नहीं कर पाता। कई बार सोच-सोचकर हिम्मत भी बटोरता लेकिन फिर अधवा माँ का खाल करके चुप हो जाता—चुप क्या हो जाता बल्कि विलुप्त निष्क्रिय मुर्दा के समान। पिता की अशामयिक मौत ने उसके परिवार को सहानुभूति की सीमा में धकेल दिया था लेकिन परिस्थितिजय सहानुभूति भी शनै शनै विलुप्त हो गई थी। माँ को घर की चूरी नाकवर प्रायमरी स्कूल में मास्टरी करनी पड़ी थी। बितने कम देतन में वह उस पालपोसकर इजीनियरिंग में प्रवेश दिला पाई थी। उसके सारे रिश्तेदारों ने मुह मोड़ लिया था। रिश्तेदारों के व्यवहार से उसे असीम दुःख मिला था लेकिन उसकी माँ और भी कर्मठ और आत्मविक्रमिणी हो गई थी। वह तो भाग्य की बात थी कि उसके और भाई-बहन नहीं थे अथवा मेट्रिक के

बाद ही उसे नाकरा तनारानी पडती। पिता की अशामयिक मौत और माँ का परिश्रमी जीवन देखकर वह माँ की सातिर छोडा घाज-कायर हो गया था। यह हमशा दुखी माँ का मुस देने के सपने बुनता रहता। वह साबता कि कही उससे कुछ ऐसा न हा जाये जा उसकी माँ के दु ख मे धाहुति का काय करे।

* * *

बाब भी जब वह घर मे परीना देने निरुना था, माँ के आशोन।द का वरदहस्त उसके सिर पर था लेकिन परीना के बहिष्कार की घनोभूत हाती व पना उसे अदर हो अ दर भूँटव कर दिया करती थी। उस नही पता था कि वह परीना दे भी पायेगा या नही। दो बार ऐसा हो चुका था कि सारे परी नाहीं गेट म हो वापिस आ गये थे—इन त्रिगड छात्रों की मेहरबानी से प्रशासन की सारी बाशिये बजर हा चुकी थी। इन छात्रों की माँगे कि उहे सारी विषमताआ क बाद भी परीना न बैठन दिया जाये, वरकरार थी। जहाँ कुछ अ य छात्र इन छात्रा द्वारा प्रादुभावित अनिश्चितता म खुश थे, वही मजारिटी मशय की डोनायमान स्थिति मे फसी चक्कर चना रहो थी। लेकिन कालेज गट तक पहुँचते हो वही हुआ जिसकी उसे आशका थी। छात्रा की माँगे वरकरार थी और प्रशासन बेकशूल मागर का प्रो साहन नही देता चाहता था। छात्रों का जतये क ज ये गेट स हा वापिस होकर शहर मे फने विभिन्न सिनेमाघरो म जाने की तैमारी कर रहे थे। कुछ छात्र होस्टलो की ओर मुड गये थे। उसका अवेतन उमे घसीटकर इन छात्रा के पास ले गया था लेकिन वह कुछ भी कहने का साहस नही जुटा पा रहा था। दिमाग मे विचारतत्र गतिशील हो गया था लेकिन विचार जिह्वा तक आते-आते रक जाते थे। मानसिक तनाव म कुछ समय गुजारने क बाद वह फिर इन छात्रों के साथ मिलकर हमशा की तरह पहर की ओर बड गया था—किओ सिनेमाघर मे बैठकर समय गुजारन की इच्छा स।

* * *

घर पहुँचकर उस फिर माँ का सामना करना था और और भी मुद्दि कलनी थी उसके दु ख मे—परीना के बहिष्कार की चर्चा करने। वह श दर

ही अंदर बहुत डरा हुआ था लेकिन इसका दोषी वह तो नहीं था। फिर कौन दोषी था—छात्र, प्रशासन या समय। इसका निणय करना सरल नहीं था। जब डरत डरते उसने घर में प्रवेश किया, तब माँ ने धुस्तते ही पूछ लिया—
“पैपर कैसा गया ?”

वह धीरे से बोल उठा ‘माँ, आज परीक्षा फिर नहीं हुई।’

इतना बहकर वह स्वयं को अपराधी मानते हुये माँ के सामने बैठ गया। माँ हमेशा की तरह शांत लग रही थी। लेकिन उसने महसूस किया कि वह कुछ बोलना चाह रही है। थोड़ी देर शांत रहकर माँ ने पूछा, “यह बहिष्कार कब तक चलता रहेगा ?”

“पता नहीं।”

“कितने लडके बहिष्कार कर रहे हैं ?”

‘बहुत थोड़े।’

‘और कितने परीक्षा देना चाह रहे हैं ?’

“पूरी मेजारिटी।”

फिर यह मेजारिटी उन लडकों का विरोध क्यों नहीं कर रही है।

‘उनकी आवाज को बुलंद करने के लिये कोई सामने नहीं आता।’

‘तू परीक्षा देना चाहता है या नहीं। या हर बार खाली ही नौटना चाहता है।’

‘देना द्यो नहीं चाहता लेकिन जब परीक्षा हाँ तब न।’

तू क्या नहीं इनका विरोध करता। क्या तुझे भविष्य का ख्याल नहीं है।’

भविष्य का ख्याल तो है लेकिन विरोध कैसे करूँ।’

‘क्यों ?—क्या तू कायर है ? क्या ये सब तुझे खा जायेंगे ? क्या तुझे मारेंगे ? बोल ।’

नहीं माँ मैं कायर नहीं हूँ। विरोध कर सकता हूँ लेकिन तेरा ख्याल करने चुप हो जाता हूँ।’ ऐसा कहकर वह माँ के चेहरे की ओर दसकर भाव पढ़ने का प्रयास करना पड़ा। उसे लगने लगा कि उसकी माँ ने शांत चेहरे के पीछे एक ओर विद्रूप छिपा है।

“मेरा क्या ख्याल करके तू चुप रह जाता है। यही न कि कोई मुझे मार न द।”

‘हाँ माँ, मैं कुछ-कुछ ऐसा ही सोचता हूँ।”

‘तब तो तू बड़ा कायर है। मैं तो सोचती थी कि मरी कोब से जन्मा सपूत बहादुर होगा लेकिन तू तो तू तो ”—कहकर उसकी माँ रो पड़ी।

“नहीं मा, मैं कायर नहीं हूँ। मुझे कायर मत बोल। वही विरोध करते-करते मैं मैं ”

‘बोन न चुप क्यों हो गया। यही न कि विरोध करते-करते तू मर गया तो क्या होगा मेरा। यही न ?”

वह मुनकर चुप था। माँ फिर भी चुप नहीं थी। उसने बोलना जारी रखा—

‘तू मरे मरने की फिकर मत कर। जब तेरे पिता असमय मरे थे, तब भी जीवन जीना मैंने सीखा था। हाथ पैलाकर सहानुभूति की भीख नहीं मागी थी मैंने—लोगो से। जीवन है तो मृत्यु भी है। उस पर क्या बार-बार सोचना। क्या सब अमरौती खाकर आये हैं। मृत्यु तो शाश्वत है, लेकिन बहादुरी नहीं। बहादुर बनना कला है और मरना प्राकृतिक। मैं नहीं चाहती कि मेरी कोब से जन्मा पुत्र मेरा ख्याल कर कायर बने। बहादुर एक बार मर कर भी जीता है और कायर हर बार जीकर भी मरता है।” ऐसा कहकर उसकी माँ रो पड़ी। पर वह इतना साहस भी नहीं जुटा पा रहा था कि उठकर माँ के आँसू पोंछ ले। उसे बार-बार महसूस होना लगा था कि उसके हाथ किसी कायर के हाथ हैं। ये हाथ क्या माँ के आँसू पोछ सकेंगे।

*

*

*

५ दो दिन बाद उसे फिर परीक्षा देने जाना था। गेट के दृश्य में किसी परिवर्तन की आशा करना बेकार था। लेकिन दोते दिनों की तुलना में आज उसकी मन स्थिति बि कुन अलग थी। गेट पर पहुँचकर उसने पाया कि मुट्टी भर छात्र आवाज चुन द कर रहे हैं और मेजरिटी मूक दशक के समान वातावरण में सवेहित उन आवाजा से बखबर आपसी चर्चा में लीत है। उसके अ दर बहने वाला आक्रोश का लावा उसकी मा की फटकार की ऊम्मा से अब तक

पिघल चुका था। सिर्फ उसके प्रस्फुटन की दर थी। उसके ऊपर लिपटा कायराना चाना अब वहाँ पर रह पान का सामर्थ्य नहीं जुदा पा रहा था। कुछ दर तक गट पर होने वाली बुलन्द आवाजे उम डराती रहीं लेकिन फिर कुछ सोचकर वह जोर स चिन्ना उठा—'रवा। म कुछ कहना चाहता हूँ।'

उसके वे साथी उसकी मरियल सौ आवाज का तेज सुनकर धणमान को सहम स गय लकिन फिर वे सभल गये। उह विश्वास था कि वह उनका साथ दगा बयोकि व उसकी प्रतिभा व क्रोता थ। चार-पाच छात्र एक साथ बोल उठे— 'आओ यबक, तुम्हारी आवाज आज हमे सुननी है।' उह पूण विश्वास था कि उसकी प्रतिभाजय आवाज उह समाधान दिवाने म अवश्य सहयोग करेगी। लकिन यह उनका भ्रम था। गट व ऊपर चढकर उसन एक नजर सब पर डाला और फिर मा का स्मरण करके साहत बटोरने का प्रयत्न किया। आज जब वह परीक्षा देने घर से निकला था तब मा ने उसके सिर पर हाथ फेरकर आशीवाद नहीं दिया था। उसकी माँ करीब-करीब मौन हो गई थी। आशीवाद न मिलन का उम काफी दुःख था। कुछ सोचकर उसन भौड को सम्बोधित किया—

“साथियो, परीक्षा के उहापोह की यह स्थिति कब तक चलती रहगी। कुछ मुट्टी भर साथियो की खातिर यह मेजारिटी खातिर कब तक गेट पर इतजार करती रहेगी कि गट खुन और सब परीक्षा दन अदर आये। मैं देख रहा हूँ कि यहाँ पर कायरों की एक फौज इकट्ठी हो गई है। जब यह फौज अपन अधिकारा के लिये नहीं लड सकती है तब दश के लिय दया लडेगी। जो साथी परीक्षा देन चाहते है व मेरे एक ओर आ जाये। और परीक्षा न देने वाले भाग जाये। कायरों की फौज अब बहादुरों की फौज है और इससे प्रस्फुटित होने वाला लावा उन सबका जला देगा जो उससे भविष्य म अवरोध हैं। आओ साथियो, इकट्ठे हो जाओ। बयो लड हो चुप बया कायर हो ? नामद हो ? लानत है तुम्हार पुरपाथ और धौवन पर जिन्दगी जीना चाहते हो तो मरने म मत डरो और जीते जी मरना चाहते हो तो दूर खड रहो।”

“अबक, तुमको आज क्या हा गया है ? क्या तू थक बहक गया है ।” उसके बि' साथी उसके पास आकर बाले ।

“हाँ, आज मैं बहक गया हूँ । मठ थाओ मेरे पास थपया कुछ भी हो सकता है ।”

“साल्ले गदारी बरता है । मारो पत्थर इस ।” वे सब एक साथ बोल उठे और पत्थर उठाकर उसे मारने लगे । पूरी मेजारिटी अभी खामोश थी—गतिविहीन—अविचलित—मानो किसी बीमार ने नजदीक आते यमराज को देख लिया हो । अचानक एक पत्थर उसकी बनपटी पर लगा और वह नीचे गिर गया । उसके नीचे गिरने ही उसके वे बिगडैल साथी चिल्ला उठे—“मार डालो गदारी को ।” और व साथी उसकी ओर दौड पडे । लेकिन एक-जोर का बमाका हुआ । मेजारिटी म प्राणो का प्रस्फुटन हो गया था । उसम अप्रत्याशित जीवतता आ गई थी । पूरी मेजारिटी चिल्ला उठी—“क जाओ—आगे मत बढना—हाथ तोड डालेंगे ।” उनकी गति मे अचानक अबरोध लग गया और जैसे ही उनने सा जाने वाली नजर स मेजारिटी का देखा, सो पूरी मेजारिटी चिल्ला पडी—‘हम परीक्षा देंगे । देखें कौन राकता है ।’ अपनी ओर बडती मेजारिटी के स्तेवर को समभवर व बिगडैल ध्यान भाग खडे हुय । चारा जोर से एक ही आवाज आ रही थी—“अबक जि दाबाद—अबक जिन्दाबाद ।” और वह बेहोश सा गेट के पास पडा उस आवाज को सुनता कनपटी स बहते खून को पोंछ रहा था । उमे विश्वास हो गया था बि' घर पहुँचते ही उसकी मा का आशीर्वाद वाला हाथ अवश्य ही उसके सिर पर फिरेगा ।

धीरे रामसेवक मर गया

जिस प्रकार अल्सशियन कुत्त की जात उसका बन्दावर शरीर, उसका भौकने वाला श्रुत्य और उसके रंग से पहिचानी जाती है, अभियन्ता मिश्रा की जात भी उनके कुछ विशिष्ट शौको के कारण जगविख्यात है। मसलन व पपलू का नौकरी से ज्यादा अहमियत देत हैं, अत्मशियन कुतिया पालते हैं और रामसेवक का एक लखे अरम सं-तकरीबन बीस वर्षों से, जब उनकी नौकरी एक सहायक अभियन्ता जैस अदन से पद से चालू हुई थी, अपने पास ही रहे हुए हैं। इन बीस वर्षों में मिश्रा न क्या-क्या नहीं पाया, क्या-क्या नहीं भोगा और क्या-क्या पदोन्नतिया नहीं पाइ लेकिन रामसेवक तभी से एक जाशा और मुगलत में अपने जीवन के अपने युतवा मिश्रा के साथ चिपका रहा। मिश्रा न ही सिर्फ ठकदारों से पैस उगाहने में माहिर था राजनीति में प्रभाव रखन वाले लोगों को पतान में अति पटु था बल्कि वह कुछ एम सपने भी बचा करता था जो दूसरों का जिद्दा रहन का बहाना दे दिया करते थे। पैस उगाहने के कई ऐसे ही सपने उसने अपने मातहत इंजीनियरों को कई वर्ष पहिल उचे थे। उन सब-इंजीनियरों में उन सपनों का खरीदा था लेकिन उन सपनों का प्रतिफल कुछ ऐसा हुआ कि वे सार सब इंजीनियर एक्वायरी में फस गये और फाँसी का पदा दबकर डिपार्टमेंट छोड़कर भाग खड़े हुये। सिंचाई विभाग के रिकार्डों में से उनका नामोनिशान मिट गया। लेकिन मिश्रा जीवत था। उसे सपना के क्रय की शक्ति का पूरा-पूरा अदाज था। उसे पता था-इंसान मुगलत में जीन का आदी है। बस इसी का लाभ उठाकर वह सपने बचता था और लोग उससे सपने खरीदकर स्वयं का धन और कृतन समझते थे।

उसके सपने के खरीददार उससे जुड़ते थे, कुछ समय बिताते थे और समय रहते सारी स्थितियाँ को जाँच-परख करती थी और चले जाते थे। लेकिन रामसेवक

उसके सपना का ऐसा पुस्ता खरीददार निकला कि वह आज भी मिश्रा के बेचे-सपने खरीदता जा रहा है और मिश्रा भी उसे सपने बेचता जा रहा है। सारा क्रम अनवरत रूप से चल रहा है। लेकिन रामसेवक भीतर ही भीतर कुछ ऐसा दूटता जा रहा है जिसे फिर न ही तो मिश्रा जोड़ सकेगा और न ही कोई और। यदि रामसेवक को उसके अतस की दूटन से कोई बचा सकता है तो सिर्फ दो ज्ञाते—वि या तो मिश्रा सुबुद्धि पाकर रामसेवक को सपने बेचना बंद कर दे या फिर मोत अपन विशाल उन पैलाकार उम समेट ले। मिश्रा सपने बेचना बंद कर नहीं सकता है। कही कुत्ते को पूँछ भी सीधी हुई है—फिर चाहे वह अल्मशियन ही क्यों ना हो। ऐसी स्थिति में रामसेवक दूसर विकल्प का ही सहारा ले सकता है।

चम्वल की घाटियों वाल क्षेत्र में मिश्रा की सबसे पहली नियुक्ति हुई थी—रानाप्रताप सागर बाध के निर्माण कार्य के लिये—सहायक अभियंता के पद पर। उसी समय आठवीं पास रामसेवक उसके पान नौकरी के लिये आया था। पास के ही गाव का रहन वाला था। मिश्रा चाहता तो आसानी से उम चपरासी बना देता लेकिन फ़ील्ड में रहन वाले इजीनियरों का एक विशेष अहम होता है। चपरासी बनाकर मिश्रा को बया मिलता। कुछ समय के लिये बाहवाही। उसके बाद मिश्रा का अहसान रामसेवक की स्मृति से घुल जाता। और फिर फ़ील्ड में चपरासी का एपाइ टैमेन्ट करान में प्रतिष्ठा नहीं बरसी है। वहाँ ता इस बात में प्रतिष्ठा और स्तबा आका जाता है कि मस्टर रोल पर लिय मजदूरों में से कितने साहव के घर काम कर रहे हैं। मिश्रा इजीनियर की प्रतिष्ठा बरकरार रखने का कायल था। उसने अतस् में उठ आई सारी मानवेतर भावनाओं को दबाकर रामसेवक को मस्टर पर लगवा दिया था। लेकिन रामसेवक का यह भाग्य था कि उम कभी साइट पर नहीं जाना पडा। मस्टर में नाम होने के बाद भी मिश्रा के घर की चहारदीवारी उसका कायक्षेत्र घन गई थी। मिश्रा का विवाह उसी वष हुआ था। एस्० डी० ओ० की बीबी कैसे अकेले घर का सारा काम कर सकती थी। उसकी सेवा के लिये मिश्रा ने रामसेवक को तैनात कर दिया था।

रामसेवक उस समय मात्र अठ्ठारह वर्ष का नौजवान था। पशियो मे अद्भुत साक्त थी। चेहरे पर पौरुष के चिह्न अकुरित होने के लिए लालायित थे। गाव मे घोड़ी जमीन थी जिसस वह चाहता तो ताजिदगी अपना और भविष्य मे बनने वाले परिवार का पट पाल सकता था। लेकिन उसकी अध-शिक्षा उसे गाव के बाहर खीच लाई मजदूरी कराने के लिये। घर मे धाप स घोड़ी सी कहा-सुती क्या हुई, रामसेवक न पलायन कर दिया। राना प्रताप सागर उस समय काफी मजदूरो को जज्व करने की ताकत रखता था। मजदूरा का अन य मैलाब चम्बल के प्रवाह को रोकने मे गुम हो गया। राना प्रताप सागर ने उसकी रोटी तो अवश्य दी लेकिन उनकी चियडेहाल जिदगी मे कोइ परिवतन नही लाया। रोज कुआ खोदकर पानी पीने वाले कितना जल सग्रह कर सकते है। मस्टरा पर मजदूरो की सख्या बढन लगी थी लेकिन साइट पर उतने मजदूर कभी नही दिखे। कुछ साहब और उनकी बहम् प्रबुद्ध बीविया के घरो के पालतू कुत्त बन गये और शेष सिफ मस्टरो पर ही जीवित रहे। मन्टरा से सभी शासकीय कर्मचारियो न अपन सूने घरो को भरना प्रारम्भ कर दिया। दिन-रात अपन बलिष्ठ शरीर स प्रस्वेद गिराने वाले मजदूर इससे ज्यादा बढ नही पाये। समय की मार, कम रोजी व अनियत्रित परिवार ने उनको अममय ही बुढापे की दहलीज पर ढकल दिया था।

साइट की थकाऊ जिदगी न कई अभियताओ से उनकी जिदगी से काफी मधुररत्नम क्षण भी छीने थे लेकिन घर मे आय धभव व नकद की आवक न उनको मानसिक सतुलन व दायर मे बाध रखा था। मिटटी, पत्थर, काक्रीट, पानी जैसे पदार्थों क बीच रहकर मिथा न सपने बेचन वा शौक विकसित किया था। पहले-पहल उसकी अंतरात्मा ने कुछ रोड लगाय लेकिन उसके जीवत विवेक ने उसे सब कुछ सिलसिलेवार समझने का अवसर दिया था। उसने जीवन जीने की एक रूप-रेखा बनाई और उसी के अनुसार सपनो को सजोया और अपने सपने साकार करने के लिये कुछ सपने भी बेचने लगा। उसम सभी प्रसन रहते थे। कारण कि हर समस्या की रामबाण औपधि उसके पास रहती थी।

*

*

*

रामसेवक न भी एक सपना मिश्रा म खरीदा था। उन मिश्रा न बाल रखा था—“काम पसंद आयगा, ता टा.म कीपर या चपरासी बनवा दूंगा। उस चाँदी ही चाँदी होगी तुम्हारी। अर यह सिचाई विभाग न। कास्टकारों की जमीने ता बधा पानी सींच ही दगा। हम सेवक घर भा बाध अपरे पानी म सींच दगा। करीडा का काम है लोग लाखा कमा लेंगे।—तुम दखना

तुम सवा किय जाआ। बाध क र्व पानी म स एक नानी तुम्हार निय अवश्य निकलवा दूगा। यदि तुम मटिक होत, ता मजा आ जावा। मर अडर मे बलकों दिलवा दता खेर टाडो। जहा स उठ वही म मुबह सम-भन्नी चाहिय।’

रामसेवक की अप-बुद्धि न मिश्रा का कण्ठ मान लिया। जैस-जैस उम्र बढ़ी, रामसेवक का सवा भाव परिमाजित हान लगा। अब उस कुछ बचाने और समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मस्टर म तन्खा कम मिलती थी ता क्या हो गया। मिश्रा न अपने घर क आउट हाउस म उस रहन क लिय खोली दे दी थी। उसकी खोली के बगल म ही मिश्रा की अन्सशियन कुतिया की खोली भी थी जिनके रम-रखान का उत्तरदायित्व भी रामसेवक का था। मिश्रा-इन दिन म एक बार अवश्य उस कुतिया की खाली का मुवाइना करती। कुछ कभी रहती ता रामसेवक को बहिष्कार भिडकिया सुनती पड़ती। किन्तु मिश्रा और मिश्राइन दोनों का कभी कुतिया की बगल वाली खानी मे भावन वा अवसर न मिला। रामसेवक की दिली रवाहिन थी कि मालकिन एक बार उसक दहज का मुआइना भी कर ल, लेकिन स्वाहिन स्वाहस बनी रह गई।

मिश्रा न एक बार एक कुर्सी की टाग टूटने पर उस रामसेवक को दिया था। रामसेवक न डटो पर डटे रखकर कुर्सी की चौथी टाग बना ली था। यदा-कदा वह उस कुर्सी पर चढ़कर बोड़ी की कश उसी स्टाइल म नेता जिस स्टाइल म मिश्रा अपना विदेशी सिगार पिस गायद किसी ठेकेदार ने उस दिया था पीता था। मिश्रा के स्वान खरीदकर रामसेवक कभी-कभी दिवा-स्वप्न भी देखता। उसे लगता एक दिन वह सिचाई विभाग भा परमानेट आदमी बन जायेगा। तब उसके गाँव म उसकी इज्जत काफी बढ़ जायगी।

गैमे ही दिवास्वप्न निय वह एक बाप के बुनाने पर गाव गया था । उसको इच्छा ता नहो थी लेकिन हवा बदलन के रयाल से वह वहा चला गया । बाप ने उसका शादी की बात कही चला रखी थी । घर पहुँचकर रामसेवक न शादी की हामी भर दी । दुल्हन ब्याह कर जब वह मिश्रा के घर पहुँचा, तो मिश्रा ने अपना एक दूट्टा पलग देकर उसका स्वागत किया । दानो मिश्रा के बडप्पन स गद-गद हो गय ।

समय गुजरता गया । मिश्रा का ट्रासफर कई जगह हुआ लेकिन रामसक्क का वह अना साथ लिय चरा । जिस शहर मे मिश्रा जाता वही व मस्टर मे राम-सेवक का नाम दज हा जाता । लोग रामसक्क स कहते, "क्या इम घामड क साथ घूम रहा है । पूरी जिन्दगी सेवा करणा तो भी कुछ न मिलगा ।" लेकिन वह सुनो बाते चुपचाप सुनकर हस देता । हर बार मिश्रा का नया और बडा बगला मिलता लेकिन रामसक्क की किस्मत मे हमेशा एक ही कमरा पडता जिसने बगल मे मिश्रा की प्रिय कुतिया अवश्य रहती । इसी दौरान रामसेवक का बच्चा हुआ । रामसक्क ने बहुत साहस करके मिश्रा स एक और कमरे की माग की लेकिन उसकी प्रार्थना रेगिस्तान की अथाह रत-राशि स गिरी एव बूद के समान प्रभावहीन रही । मिश्रा चाहता था एक कमरा आसानी से दे सकता था । उसकी कुतिया का दडवा कोई भी सब-इजीनियर बडी आसानी स बनवा देता लेकिन मिश्राइन आदमी की नस पकडना जानती थी । उसने स्पष्ट कह—“धूल को लात मारा ता सिर पर चढती है । इन नौकरा को ज्यादा सुल्ल-सुविधाये दी तो समझिय व काम कम भोग ज्यादा करेग । हमे नौकर की आवश्यकता है । परोपकार करने का ठेका हमने नही लिया है ।” मिश्रा मिश्राइन की दलीले मुनकर शांत हो गया । रामसक्क को उसी दडवे मे घुस जाना पडा ।

छाटा सा कमरा कुतिया की बदवू और अति अल्प बतन न रामसक्क व दाम्पत्य को छाडने का प्रयास किया । यदा-कदा कहा सुनी हा जाती लेकिन बच्चे का रुदा उस दूट्टे दाम्पत्य को जोड देता । रुदन से रामसक्क की पत्नी बच्चे को संभालने लगती और रामसक्क उस तीन टांग वाली कुर्सी पर बठकर स्टाइन

सुखी पीने लगता। रामसेवक की पत्नी पत्नी-सिली नहीं थी लेकिन दुनियादारों को समझने की शक्ति भगवान न भूट-भूटे कर भर दी थी। मिश्राइन की बातों की भनक उसे लग गई थी और रामसेवक का भविष्य उसने क्षण भर में आक लिया था लेकिन प्रामाण्य परिवेश का प्रभाव था वह रामसेवक को सलाह देना उचित नहीं समझती थी। वहीं सपाह दो और दाम्प्य अशान्ति आ गई तो क्या फायदा? जब उसका आक्रोश उभरता तो वह बच्चे को रोता छोड़ देती। लेकिन फिर भयानक होकर उसे उठा लेती और अपने बलिष्ठ स्तनों से इस प्रकार चिपका लेती जस कोई उस छुड़ाने आ रहा हो।

लेकिन आखिर वह भी बब तक मुह सिय रहती। भूख की तडप, परिवार की कल्याण-आवाशा, पस की असमानता—समाज में बड़े-बड़े धान्दोपन करा देती हैं। रामसेवक की पत्नी ने विवाह के पहिले भी सुन रखा था कि रामसेवक परमाने ट नौकरी पर है पांच-छे सौ वमा लेता है आदि-आदि। लेकिन उस खोली में रहकर वह सब बातें समझ चुकी थी। वह चाहती थी रामसेवक डेढ़ सौ रुपन्नी की उस मस्टरगिरी को छोड़कर गाव की वास्तकारी संभाले जहाँ धुली हवा में रहकर दो जून की राटी निकालना कठिन नहीं था। इसी समय मिश्रा का प्रमोशन हुआ और उसे नई जगह ट्रांसफर कर दिया गया। मिश्रा जात-जाते रामसेवक को परमाने ट करना चाहता था। रामसेवक की चाकरी का इनाम देकर वह अपने पापों के खाते में पुण्य जाड़कर एक पाप कम करना चाहता था। उसने रामसेवक को बुलाकर अपना मतव्य जता दिया। रामसेवक का मन पस लगाकर उड़न लगा। उसने इसकी सूचना अपनी पत्नी को दी जो इस खबर को सुनकर थोड़ी दूर के लिये उस खोली का दमघोड़ परिवेश भूल गई। वह मिश्राइन का धर्मवाद करने पहुँची। मिश्राइन ने मिश्रा के मतव्य को जानकर औपचारिक खुशी जाहिर की। लेकिन अदर ही अदर वह मिश्रा पर नाराज हो गई। रामसेवक की पत्नी को वापिस भेजकर वह मिश्रा का इन्तजार करने लगी।

*

*

*

मिश्रा आफिस की कार्यवाहियाँ निपटाकर काफी रात सेट घर पहुँचा।

खाना खाकर दानो लट गय । मिश्राइन मिश्रा के अधपक वाला मे अगुतियाँ डाल कर सह्यान लगी । मिश्रा को मिश्राइन व व्यवहार पर जाश्चय हो रहा था । उसन धीरे से पूछा, “क्यो डालिग । क्या बात है ? आज बडा प्यार भा रहइ है—क्या यह प्रमोशन का पुरस्कार है ?”

“प्रमोशन से कौन घुग नही होगा । लकिन एक बात और है ।”

“क्या ?”

‘आप बडे दरियादिल भी हो गय है ।’

‘कैम ?’

“मुता है आप रामसेवक को परमानेंट करन जा रह है ?”

‘तो इसमे कौन सी नई बात है । कइयो को तो पक्की नौकरी दी है । वही बेचारा दया सफर कर ।’

‘वो तो ठीक है—सोगा को परमानेंट करना ही चाहिये नही तो डिपार्टमेंट केस चलेगा । लेकिन रामसेवक जैसा नौकर नही मिलेगा । बहुत ईमानदर और जीवट आदमी है ।’

“अरे डालिग । इस सिंचाई विभाग म नौकरा की क्या कमी । जहाँ जायेंगे वही पर मस्टर पर किसी को लगा लेंगे । लकिन तुम्हे उसके परमानेंट होने से क्या दु ख है ।”

“दखिये जी । मैं पत की बात कहता हूँ—रामसेवक जैसा सबक मिलना बडा ही कठिन है । आदमी-आदमी म पक होता है । मैं चाहती हूँ कि रामसेवक हमारा साथ ही रह । और इसका एक ही तरीका है कि आप उस परमानेंट न करे । अपने साथ ल चलें । वही पर फिर मस्टर पर लगा देगे । कि आप चाह तो वही पर उस परमानेंट कर दना ।”

मिश्रा मिश्राइन की बात मुनकर चुप रहा पर मिश्राइन की बात चालू रहीं । उसने फिर बोना—

‘आज के जमान मे मजदूर अपन अधिकारो के प्रति सचेत हाउ जा रह है । वही नया आदमी टेग मिला ता निभाना मुश्किल हो जायगा । और

फिर रामसेवक कीन सा भूखा मरा जा रहा है। गुन रह हैं न आप मरो बात ?”

‘हां-ठा गुन रहा हूं और समझ भी रहा हूं।’

मिथ्राइन अब चुप हो चुकी थी। मिथ्रा का व्यवसायी मस्तिष्क गतिमान हो चुका था। उसे मिथ्राईन की बात में तथ्य नजर आया। ईमानदार और भक्त सेवक मिलना लाख रूपय की लाटरो खुल जान के बराबर है। मिथ्रा ने मन ही मन निणय लिया और मिथ्राइन का आगोश में समेटकर सो गया।

* * *

मुबह-मुबह मिथ्रा ने रामसेवक को बुलाकर कहा, “रामसेवक तुम मर साथ बनोगे। नई जगह है। यहाँ पर तुमको परमानेंट कर दूंगा। यहाँ पर मेर न रहने से तुमको दिक्कत हो सकती है। अब नय साहब का ब्या भरोसा? कहीं तुम उनके साथ न निभ पाय ता मुनकर मुझे बड़ा दु ख होगा।

मिथ्रा का निणय सुनकर रामसेवक का बलिया उछलता मन धाण नर में बुझ गया। उसका प्राजल मन मिथ्रा का पड्यत्र न नाप सका। वह अभी भी मिथ्रा के कथन में दिवास्वप्न देख रहा था। मिथ्रा ने उस फिर स्वप्न वच दिया था। रामसेवक की क्रय सामर्थ्य खत्म हो चुकी थी। अपनी उदासीन जिंदगी में भाककर उसने उस स्वप्न को खरीदने का सामर्थ्य तलाशा। बच्चे के भविष्य को निहारकर उसने अतवरत रूप में क्षीण होती जिंदगी से इस बार सामर्थ्य उधार मांगा। उसने मन ही मन एक बार और मिथ्रा के साथ रहकर जिंदगी दाव पर लगाने का चास लिया।

* * *

रामसेवक की पत्नी मिथ्रा के निर्णय का सुनकर बिफर गई। मिथ्राइन और मिथ्रा—दोना को भला-बुरा कहा। लेकिन सीधे जाकर लगने की शक्ति उसमें भी नहीं थी। मौवा देखकर उसने मिथ्रा की अटसशियन कुतिया का पास बुलाया और चूल्ह की जलती ठूठ उसके धुपने में घुसेड दी। कुतिया के क्के की आवाज के साथ भाग खड़ी हुई। रामसेवक की पत्नी को इस कृत्य में थोड़ी मानसिक दिलासा मिली।

उसने बच्चे का उठाकर चुप कराया और कुछ सोचकर रामसेवक से बोला "सुनो ! अब मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी । एक खोली में रहते मेरा मन नहीं भरता है । न खुली हवा और न ही कोई पत्की नौकरी । तुम्हारा बच्चा इन सबके बीच रहकर कुछ न बन सकेगा । मेरा विचार है तुम भी मिश्रा की चाकरी छोड़ो । गांव चलते हैं । मिल-जुल कर खेती करोगे तो भगवान भी कुछ दयावान हो जायेगा । तुम्हारे इस मिश्रा पर तो अब मुझ वतई भरोसा नहीं रह गया । जो आदमी अपनी जुवान का पकका नहीं, उससे क्या आशा बरल ।

इतना कहकर रामसेवक की पत्नी रामसेवक की आँसु म आँसु लगी । रामसेवक को लगा वह भरे बाजार में नगा हो गया है ।

कुछ सोच समझकर वह पत्नी से बोला—“तुम कुछ दिना की गांव चला जाओ । मैं मिश्रा साव के साथ जाकर एक वार और किस्मत आजमाना चाहता हूँ । नहीं तो फिर तुम जैसा कहती हो वैसा ही करूँगा ।”

रामसेवक की पत्नी बच्चे को लेकर गांव चली गई और रामसेवक मिश्रा के साथ नये स्थान को ।

*

*

*

समय तीव्र गति से भाग बढ़ गया । रामसेवक ने ता मिश्रा का साथ छोड़ पाया और न ही परमानेंट हो पाया । एक-दो वार गाँव भी आया लेकिन वहाँ भी उसका मन न लगा । मिश्रा के सपने उसे वापिस युला लेते । मिश्रा ने साथ बीस वष रहने का पुरस्कार उसे यो मिला कि आधापट भोजन, आर्थिक सँगी और बंद कमर की घुटनमरी हवा ने उसमें राजयक्ष्मा के बीज अकुरित कर दिये । राजयक्ष्मा तो उसे शायद कई वष पहिले ही हो गया था लेकिन जब तकलोफ ज्यादा बढ़ी तो डाक्टर से दिखाने पर पता चला कि वह मृत्यु की बगार पर पहुँच गया है । साल-छ माह भर का मेहमान हूँ । लेकिन इतने सब अंतराल में मिश्रा सहायक अभियन्ता से मुख्य अभियन्ता के पद पर पदा न्त हा गया था ।

जब मिश्राइत का रामसेवक को बीमारी का पता चला तो उसने नाक-भों सिवोड ली । घर का काम करना बंद कर दिया और मिश्रा में उसकी

छट्टी कर देने की तैयारी। युनियन के डर में मिश्रा राममेवक को हाथ नहीं लगाना चाहता था। और फिर अम्बार वाले भी तो उसे विचित्र रण का सघने रहते हैं। उनके राममेवक को पत्नी को बुलाकर राममेवक को गांव ले जाने की सलाह दी। सच-सच निव हथार-पाच सौ रुपय भी दिये। राममेवक अपनी पत्नी के साथ गांव चला गया।

* * *

उन रास धरों में गांव का वातावरण कासी कुछ बदल चुका था। शहरी सचता न अपन पन तरीके दाँत ग्रामाण जन मानस में चुभोना शरभ कर दिया। जिस जमीन में राममेवक बास करते पहिन दो जून की रोटियों उपजा सकता था वह आज एक जून का भोजन भी मुहैया नहीं करा पा रही थी। हर प्रायोगिक अवसर में शहर की आर भागन की तनफ जम ले चुका थी। उभा का एक उपद्रुन अवसर की तलाश थी। गांव की मिट्टी की साक्षी गुणध अब उनके जेहन पर नशीना प्रभाव नहीं डाल पा रही थी।

गांव-मापड़ी पर राममेवक को खास धुशी नहीं हुई। धुशी हुआ भी उससे भरियल शरीर में जिजीविषा संचारित नहीं कर पा रही थी। उस रह-रहकर मिश्रा की याद आता। कुछ समय तक मिश्रा का रमृति में वह भविष्य क दिवा-रत्न देवता, लेकिन कुछ ही देर बाद दिवा-स्वप्न विनाद और संशय में बदल जाने। सूना और उदाय आते वह भोखी का खानिग पर टिका दवा और फिर आर से चिन्ता, पटता— मिश्रा! तूने मुझ वही का नहीं रखा है। मेरा यह था तेरी ही देन है। भगवान के घर देर है अंगरे नहीं है। तुम्हे तेरे पिंके को सजा जरूर मिलेगी। मरन के बाद भी तेरा पीडा नहीं छोड़ूंगा। चि ज्ञान के साथ ही उसकी गारीक शक्ति क्षय हो जाती और वह निडार होकर चुपचाप एम लेट जाता—मानो एक धनापक भाव उसमें पैदा हो गया हो अपनी उम्ची जिन्दगी का जीवन के निम।

* * *

राममेवक का नडका विशोरावस्था की दहलीज पार कर गया था। शहर जाने की आशा उभक मन में भी जम ले चुकी थी। वह राममेवक के पाप येठकर उभक पैर दवाता और-जिरे धीरे शहर और वानोलियों के बारे में पूछा

रहता। रामसेवक उस सारी बात उसी प्रकार बताता मानो कोई बुद्धि गपनी नहीं बिटिया को कोलम्बस की अमेरिका यात्रा का किरसा मुना रहा हो। रामसेवक का लटका असे फाट-फाटकर रामसेवक की ओर देखता और मा ही मन रहर जा के सपन बुनता रहता। रामसेवक आजात म अपने लखे के श्वत्सु में रहर जान की ललक प्रज्वलित कर रहा था। उस तनिक भी बहगास नहीं हुआ कि उसने द्वाग अदुरिस्त धीज कत्र पौधे म विरसित हो जायेगे। लडक की सेवा चलती रही और रामसेवक आग का धो देता रहा।

एक दिन पर दवात उसक लखे न पूछा, 'बापू! क्या मुझे मिथा के पास नौकरी मिल सकती है?' रामसेवक चुप रहा। लखे ने फिर पूछा, 'बापू आप इस लो रह ह कि ग.व म क्व क्या बचा ह। मेहनत बितनी भी करो, दो टाडम की राटी भी नहीं मिलेगी। मुना है शहर मे मेहनत करके रोटी बन ना कर सकतन नहीं है।'

रामसेवक बोना, 'शहर म राटी कमाना कटिन ता ही ह। लेकिन तू मिथा के पास क्या जाना चाहता है? क्या मस्टर पर नौकरी चाहता है?' 'मैं नहीं जानता कि मस्टर क्या होता है। मुझे तो नौकरी चाहिये, जहाँ भी मिले। मिथा आपको जानता है इसलिये नौकरी मिलना कटिन नहीं होगा।'

'लेकिन तू मिथा के पास नौकरी के लिए मत जाना। उस सिचाइ विभाग के लो अधिकारी मिथा के ही समान हैं। पूरे जिल्दगी मस्टर रोज पर जिदा रहकर घर का धारा काम करायेगे। और फिर तेरी या हाजत होगी, यह तू मुझे मस्टर समझ सकता है।'

रामसेवक के सखे न पर दबाना बंद कर दिया और चुपचाप वाहर चला गया।

*

*

*

एक दिन बिटिया पर पढ़ रामसेवक का लखे को न मूतना दा कि यह शहर जान की लीया क रहा है। मिथा का पता भी मंग रहा है। रामसेवक की ओर से धषा-मुचा लून बन गया। बिटिया बोना— 'मुना माता तुम हामी के पिता को। आप का बहा नहीं मानता।' रामसेवक दो

तान बार चिन्लाया। चिन्लाते ही उसे जोर की खासी आइ। उसन खून को उटो कर दी। सॉम उल्टी चनने लगी। धमुष्किल उसकी पत्नी उसे सभानकर खानिया पर लिटा पाई। खासी की आवाज सुनकर वजुआ बदर धा गया। वह चुपचाप रामसेवक की खाट के पैताने बैठकर रामसेवक के पैर सहलाने लगा। रामसेवक ने एक नजर उस पर डाली और फिर चिन्लाने को उद्यत हुआ। वृशकाय शरीर खासी का वग न सभान सका। पुन खून को उटोई और उसके शरीर को गति निढाज हो गई। सिर एक ओर ढनक गया। उसके लडक को समझ म आ गया कि रामसेवक अब उसे फिर चलता-फिरता और धौनता नजर नही आशगा। उसकी उदास आला स आंसू बही कठिनाई स निकन पाये। रामसेवक की पत्नी दहाड मारकर रोन लगी। वजुआ उठा और रामसेवक के मुख की ओर मुडकर वही बैठ गया। वह चुपचाप था। अपने किशोर हाथ उसन रामसेवक के बाना म घुमइ दिव और सिर धोर-धीरे सहलाने लगा। उसक अतस् म आक्रोश चरमसीमा पर पहुँच चुका था। लेकिन कैसे वह उस आक्रोश से छुटकारा पाव। एक बार उसन रामसेवक की आलो मे भाकने का प्रयास किया और फिर धीरे स मन ही मन बुदबुशया—“बापू ! कुछ दिन तो और हक श्रात। म आपका वताता मिश्र म पस्की नौकरी कैसे ली जाती है। अब जमाना बदल चुका है। मैं बदले जमान का प्रतीक हूँ। मिश्र तो फ्या उसका बाप भी मुझे पस्की नावरी नेता। लेकिन तुमने बहूत जन्दी कर दी—निगय नेन म हमेशा की तरह।”

रामसेवक का लडका चुपचाप बाप की नाग के पास म उठा और सकडियो का इतबाम करने चल पजा।

विखरे टुकड़ों का सलीब

नाशविले, टेनसी, यू० एन० ए०

आदरणीय मा,

चरण स्पश ।

एक शाम की डाक में तुम्हारा पत्र मिला—बाबू की मौत का पैगाम लिये ।
 तब भर के निय स्तब्ध रह गया—यह समझकर कि शायद प्रवासी होने के
 कारण मैं सिर्फ पैगाम सुनने भर का हकदार हूँ । निश्चय है केवल विया था
 मिन गया होगा । लेकिन मुझे विश्वास है कि केवल विया ही नहीं गया । शायद
 आदा पैगाम टा जाने । और बाबू की मौत का अफसोस रमू, सविता, बीना
 और मृदला का न हो, लेकिन मुझे तो अवश्य है । उन लोगों ने बाबू के पास
 रहकर उनकी कमी की कल्पना न की हो और न ही यह कभी महसूस किया हो
 कि उनकी अनुपस्थिति घर में क्या परिवर्तन ला सकती है, केवल सैकड़ों मील
 पर पैठा मैं उनका सिधरुन और बराहने की आवाज जम्हरे सुन रहा हूँ । जो
 आया है वह जहर जायेगा । लेकिन उसमें जुड़ी स्मृतियाँ हमेशा इसको इस
 नश्वर ससार में जीने का बहाना दे दिया करती हैं । तुम्हारे पत्र ने बाबू की
 मौत की खबर लेकर जो एक अनवरत रिक्तता पैदा कर दी है, वह मुझे शनै-
 शनै बाबू के साथ बीती जिन्दगी को महसूस कराने और समझाने के लिये बाध्य
 कर रही है । दिमाग पर पड़ा विस्मृति का कोहरा कुछ-कुछ साफ होता दिखाई
 दे रहा है ।

वैग टनिसी में घना कोहरा नहीं पता है । टनिसी नदी की घाटियों को
 देखकर हमारा नमदा की याद आती है । लेकिन जीवन यहाँ इतना यान्त्रिक है
 कि कर्मचारियों में नहीं आता है कि इंसान का जीवन का मरुपद आन्विक
 क्या है । आभियत और प्रेम यहाँ पर दूरगामी स्वप्न के समान हैं । प्रेम यहाँ

पर महज एक औपचारिकता है और वहाँ मेरे अपने देश में—एक जीवन शैली और जीन का सोपा। वहाँ पर, मेरा ऐसा अनुभव रहा है कि जीवन का प्रारम्भ प्रेम से होता है लेकिन अंत सिर्फ सत्रास, उदासीनता और धकेलेपन की मार से। अक्सर मेरे अपने देश में शामद स्थिति ऐसी न हो। हावात बदल गया है, ताँ वात बलगत है। वहाँ पर मरते-मरते तक व्यक्ति कई लामा में गुल्ल एसा बुड जाता है कि नखर शरीर का छाहने से याद भी उसकी उपस्थिति को विस्मृत नहीं होन दिया जाता है। दसों १ मा। मैं भी इस गमय धेती-कसी फनसपाइ बाते छ-कर भय हुये धावो को हरा कर रहा हूँ।

कबिल मिलता था पक्का गमभीय कि बाबू क चेहरा का दर्शन अवश्य आता। एक ऐसा चेहरा जो मेरे यदा-कदा उदास होन वाले मन में जिवीपिका की स्फूर्ति पुन संचारित कर देता। आज जब उनके इस त्रहाड में मिटा की सूचना मिली है तो मेरे वचन में लेकर भारत छोडन तक व अन्तरान में उनके नब्दील होन चेहरा एक-एक कर सामन जा रहे हैं। कितना सुखद लग रहा है इस अतीत को कुरदन में मा लेकिन माँ तुम शायद ही उस कभी समझ सको। गत जितना भी सबदनशील क्यों न रह माह का आचरण उस एक दायर में बाहर आरुन का अवसर नहीं आता है। प्रकृति न यह वरदान सिर्फ पुरपा का दिया है। मैं सृजासीव है कि तुमने मुझे एक पुरप क हग में जम दिया।

जब चूँकि गज बाबू जी नहीं रहे हैं और मेरा भारत जाना राइ माने नहीं लगता है इन पत्र के मायम में मैं कई एस रहस्या पर त पदा उठाना चाँहंगा जो तुम्हें चाकान बात्र लगेंगे। अपना शोध पूरा करने के बाद मेरी शायिक भी इच्छा नहीं थी कि यहाँ पर रहूँ। इस बाबत मैंने तुम्हें लिखा भी था। उम्र समय शायद मन इस बात का भी निक्र किया था कि नौसरी मिता मेरे नियम यहाँ पर पास कठिन नहीं है। तुमने स्पष्ट लिखा था कि यदि मैं चाहूँ तो कुछ समय अमेरिका में रहकर आर्थिक समृद्धि पा सकता हूँ। तुमने यह भी लिखा था कि मैं कमाये डानर घर की आर्थिक स्थिति में आश्चर्यजनक परिवर्तन

ना सकते ह। मैं इन सारी बातों का तब नहीं समझ सका ज। शायद उस समय मरी बय ही इस नामगभी के निय जिम्मेदार थी।

तुम्हारे पत्र ने मुझे यहाँ पर कुछ समय और द्वितान की प्रणया दी थी। लेकिन तुम्हारी यहाँ प्रणया मन् तिय नरक के द्वार की कुन्जी थी। एक बार जब उस नरक म धुना तो फिर आज तक निम्न नहीं पाया है। आर्थिक सुविधाये बक्लन पैदा बरखी रहीं। और म चाहार भी माउ बापिा आन का अवनर न उताग सवा। हनी दौरान शी स मरी मृताकाउ हूँ और इनने विवाह कर लिया। इस विवाह स सबसे ज्यादा गारुति तुमन ही की थी। शायद मर विवाहा प्रमानी हान का पायदा तुम दर सा रहूँ और नकद लकर न उठा पाए थी। बाव न एव अला पत्र निववर मुझे और रानी का आशीवाद भेजे थे आर एक दुबकी हुई मी इच्छा व्यक्त वा थी कि समय रहने शरी को लेकर एक बार भारत अवच वाउ। उनकी इच्छा था कि मरन के पहिले बहू का मुह अवश्य देख न। लेकिन इनके विपरीत तुम्हारा वाक्याश मरा पत्र मिला ग। तुम्हारे पत्र को पढ़र मुभ गमा लगा था कि तुम्हारी म्यति तपन रगिस्तान म सफर वात त्त प्याम मानी व समा हो गई थी जा अचानक ही पानी पा लेता है सानि मुह तर वात-आते पानी हाथ स टिटकरकर गैमस्तान न निम्न अस्थ त्त-वणा म समा जाता है जहाँ स पुन उसको पाना तरीव-करीब बमम्भ्य हाता है। तुम्हारे अदर पिघलते वाव की तपिस में नागविल म रहकर भी मरुतू का सना था। इस मैन उवर का आशीवाद माना था कि तुमन वाग पत्र हि वा म गिस्त जा था। तयथा कहीं सीरी उस पद पाती तो तुन नयरे वाग म जा ऊँची-ऊँची वात मन उम बता रखी थी व क्षण भर मे ध्वस्त हो जाता और हम दोनों व दाम्पत्य म एक दरार बनना प्रारम्भ हो जाती। मी गाने को हिदुस्तानिया का दरिवादिनी उनर बहुरीत स्वभाव उनर एडजस्टमट का प्रवृत्ति, यदि क बार म बता रहा था। कितना दुम हाता उग यदि कठ तुम्हारे पत्र का पत्र पाती। परतु कर्षे बार भाग की विविधता मन्तनी मन्ध धो का हून म ववा तेती है। वस गनी न इतना पूछा था कि क्या रिमा है। मी चुपचाप चर पर उमर शाय सदिम नावा को छिपाकर

उससे कहा था—“मम्मा न तुम्हें टेर सा धार भेजा है।” उनमें चुपचाप उसे स्वीकार कर लिया था। लेकिन तुम्हारे पत्र में उन मजमून न मुझे जित गहराई तक चाट पहुँचाई थी, उसका घाव अभी तक भर नहीं है।

धीरे-धीरे तुम्हारे पत्र भी बम बटुता लिये होने लगे। मुझे तुम्हारे पत्रों की भाइलड भावा में किसी पड्यत्र या यत्रने की भन्क हमेशा दिखाई देती थी। हो सकता था कि यह मेरे मन का भ्रम रहा हो लेकिन थाकिर मन्देह और सब के बीजारोपण का कुछ न कुछ आधार तो होता ही है। आधार व बिना बोर्ड भी चीज जम नहीं लेती। तुम्हारे पत्रों की भावा मुझे उन पीघों की याद दिलाया करती थी जो ऊपर तो कम उभर कर दिखत हैं लेकिन जमीन के आदर अपने सारे अस्तित्व को बनाय रखन के लिए जमीन का फोड़कर अदर बुसते ही जाते हैं। तुम्हें आलू बहुत पसन्द हैं। मरी पक्तियों का भाव समझन में कष्ट नहीं होगा।

जिन्दगी का प्रवाह आगे बढ़ता गया—पहाड़ी टेनिसी नदी के समान। कई यवधान सामने आय, घाटियों और पहाड़ियाँ व रूप में टेनिसी के सामने नकिन बह उठें पार कर गइ। टेनिसी बेसी अयारिटी व नाम में रिजली कम्पनी टेनिसी के जा बेग का उपयोग कर रिजली पैदा करन लगी। टेनिसी भी अपने जल प्रवाह का भाग रीक-रोककर कुछ देन का यत्न करने लगी। यदि तुम महसूस करो तो टेनिसी और मेरे जीवन व बीच एक साम्य अवश्य डूँढ सकोगी।

देश धारिण जान की ललक तो मृतपाय हो गई लेकिन एक कमक बाकी थी कि यदि माँका मिदगा तो गनी को तकर भारत भरण के बहाने तुम सबसे मिला दूँगा। इस कनक के ही कारण बनारसी चाट की मुग व नयुना का उत्तेजित करने लगी थी कलुजा मा बाल के गचकी वान पान का स्वाद जुवान पर तैरने लगा था और न जान क्या क्या स्मृति-पटल पर उभरकर पैरा के कलुजा म मुजान मचान लगे थे मेरा माँका मेरे हाथ थावा भी माँ। लेकिन छो

तुम्हारे अर्थ-मोह न उसे जग-जग करके मुझे म्लाने वाली स्थिति में पहुँचा दिया था। शायद तुम उम अवसर का याद न कर पाओ क्योंकि मेरे पहिने के पत्रों में मरे अक्स में जम देने वाली कुठाओं निगशा, ललक और आक्रोश आदि किसी

का भी कोई जिक्र नहीं होता था। सारे पत्र महज नम्व'घों की कड़ी जुड़ी रखन के लिये औपचारिक हुआ करते थे। वस्तुतः इस पत्र को मैं अपने सारे प्रयासों के बावजूद भी औपचारिक नहीं बना पा रहा हूँ। आखिर गुब्बारे में कब खूब हवा भरी जा सकती है। कभी न कभी तो वह तेज विस्फोटक आवाज में फूट ही जावेगा।

याद आया न मा, किस कारण मे मैं तुम लोग तक नहीं पहुँच पाया था। अतीत को बुरेदिये सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा। सविता का विवाह होन वाला था। बाबू न पत्र लिखा था कि सती को नेवर कम से कम दस दिन पहिने पहुँच जाऊँ। सबसे मुलाकात हो जायेगी और शैली भी यहाँ की जीवन-चर्या का कुछ अंश समझ सकगी। बाबू का पत्र पाकर मुझे उत्तनी ही खुशी हुई थी जितनी यहाँ पर आत वक्त हुई थी। मैंने अपना प्रोग्राम बाबू को पत्र निपकर सूचित कर दिया था। तुम सबको भी प्रोग्राम का पता चल गया था। सविता ने भी पत्र डाला था कि मुझे वहाँ पाकर खूब बहुत ही खुश हो जायेंगे। शैली बहद खुश थी। बहुत सी प्रेजेन्ट्स उसने सबका-सबके लिए खरीद ली थी। लेकिन उसी समय आये तुम्हारे पत्र न हमारा सारी खुशिया को मसल दिया था। कितना खीपनाक था माँ वह पत्र। कई दिन तक जेहन में उसका प्रभाव उतर नहीं पाया था। याद आया न-क्या लिखा था तुमने? ठहरो मैं फाइल में पत्र निकालकर अक्षरशः उसे उद्धृत करूँगा।

'परिमन आशोवाद तुम्हारा प्रोग्राम का पता चना बहुत खुशी है। तुम्हारी उपस्थिति निस्संदेह शुशोदायक होगी। लेकिन मा होन की स्थिति कुछ मुझान देने का हक तो रखती है। तुम इस यथा मत लना। भारतीय पन्विश अब बिन्दुल बदल चुका है। परम्पराय बदल चुकी है। लोगों की हवम भी पड़ गई है। तुम्हारे यहाँ पर दौली के साथ आन म तीस-तीस हजार ता मय हो ही जायेंगे। यदि तुम अपना आना कसिन पररे इतना ही पैसा भन्न दो तो सविता की मादी और नी अन्धे म हा प्रवेगी। तुम इस यथा दिगुन न वेगा मन्त्री है। तुमसे काफी आनायें था लेकिन तुमन खय विवाह कर

उन्होंने पूरे होने में असमर्थता ही व्यक्त करने लगी थी। और सारे सपने टूट-
 जाकर बिसर गये। **बात क्या है ?** उना न कभी पता बसाया और न ही
 मानने-ब्यापार के लिए पत्नी **द्विचार्य**। सारा पैसा तुम लावा की पत्नी म ही लग
 दिया। **वतासा:** **अन्वय** कभी ऐसा हाता है। उपायिक परम्पराओं
 1. निवाह के लिए यहा शिपा स ज्यादा धन की आवश्यकता है। मैं नारा
 न कि स्वतंत्रता के बाद यहाँ पर लोग की हमस और साक्षात् भी स्वतंत्र
 मई है। और फिर सविता तुम्हारे जैसी शादी करके बोक सं उच्छ्रय हो
 नहा कर सकती है। मुदा भार बीता तो अभी बचें है। दुनियादारी या
 समझन है। तुम्हारे जाने से व पुत्र अवश्य होंगे लेकिन तुम कठिनार्या
 समझ सकते हो। मुझे जो कहना था किन्तु दिया। बाकी सब तुम्हारे
 उपर है। हा बाव को सब समझा लूंगी। विश्वास है न कोई धिक्कार खाना
 नहीं करेंगे।

तुम्हारी माँ

मा। तुम्हारे एस पत्र के बाद कौन हिम्मत कर सकता है वहा पर आन
 की। तुम्हारी माँ-रियाँ में बखूबी समझ सकता है। लेकिन धन के उपर भी
 पुष्ट मातृस्तर अनुभूतियाँ हाती है। यदि तुमन पत्र पान को लिखा होता, ता
 नाच जाग, थी। उस पर बलाग सं विचार किया जा सकता था। पर तुमन
 ता ग्याह का सारा खर्च ही मर यात्रा-यत्र म परख लिया था। वैस
 ीली का अचानक केंसिल हूय प्रोग्राम के कारण बहा ही दुख हुआ था। मैं
 ये भूट बना लिया कि किनी की उय के कारण सविधा का ग्याह पोस्टपान
 पर दिया गया है। अब फिर दर दर धावती, तो चोगे। उन्हें मर बचन पर
 पुणत विश्वास कर लिया था। यदि उन तुम्हारे पत्र का आशय शान्त मे
 शा जाता ता तुम सबा बारे म वह क्या माचती मैं नहीं बता सकता है।

इनर कुट दिन बाद ही बाबू का पत्र आया था। उना लिखा था—
 सविता का ग्याह निपट गया है। तुम्हारी कमी बखरती रही। तुम्हारे भेज
 पत्र से मुझे न एक नया चेतक न लिया है और तुम्हारी माँ का धैर्य बेनेस
 योग्य होर बन गया है।

